यूक्रेन देश की लोक कथाऐं

चयन और अनुवाद
सुषमा गुप्ता

2022

Series Title : Desh Videsh Ki Lok Kathayen
Cover Title : Ukraine Ki Lok Kathayen (Folktales of Ukraine)
Cover Page picture : Ukrainian Attire
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of Ukraine

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

देश विदेश की लोक कथाऐं 5

यूक्रेन की लोक कथाऐं 7

1 जंगल का ज़ार ओह 9

2 हवा की कहानी 28

3 खिड़की पर आवाजें 56

4 छोटे ज़ार नोविश्नी, झूठी बहिन और वफादार जानवरों की कहानी 64

5 पिशाच और सेंट माइकिल 104

6 ट्रैमसिन, चिड़िया ज़ार और समुद्र की सुन्दरी नस्तासिया की कहानी 119

7 सॉप पत्नी 133

8 बदकिस्मत डैनियल की कहानी 139

9 एक चिड़िया और एक झाड़ी 154

10 बूढ़ा कुत्ता 159

11 लोमड़ी और बिल्ला 161

12 भूसे का बैल 165

13 सुनहरा जूता 174

14 लोहे का भेड़िया 188

देश विदेश की लोक कथाऐं

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **550** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

यूक्रेन की लोक कथाऐं

संसार में सात महाद्वीप हैं – एशिया, अफ्रीका, उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, अन्टार्कटिका, यूरोप और आस्ट्रेलिया – सबसे बड़ा महाद्वीप सबसे पहले और सबसे छोटा महाद्वीप सबसे बाद में। सब महाद्वीपों में अपने अपने देश हैं पर इस यूक्रेन देश की स्थिति बड़ी अजीब सी है। शुरू में यूक्रेन रूस का एक हिस्सा था पर जब **1991** में रूस टूटा तो उस समय कई देश रूस से अलग हो गये थे उनमें से एक देश यूक्रेन भी था। इसने थोड़ी सी साझेदारी अपनी मिलिटरी के बारे में रूस से रखी सो यूक्रेन अब यूरोप और रूस दोनों महाद्वीपों का हिस्सा है।

यूक्रेन देश में रहने वाले कोज़ैक[1] कहलाते हैं। इनकी लोक कथाऐं भी रूस की लोक कथाओं से महत्व में कम नहीं हैं। ये कथाऐं रूथेनियन भाषा[2] में लिखी हुई हैं पर इनके अंग्रेजी में अनुवाद कम मिलते हैं। इन लोक कथाओं का एक अंग्रेजी अनुवाद एक वैब साइट पर मिलता है। यूक्रेन की ये लोक कथाऐं उसी पुस्तक से ली गयी हैं।[3] जिसने भी ये कथाऐं अंग्रेजी में अनुवाद की हैं उस अनुवादक का कहना है कि इन कथाओं का अनुवाद अंगेजी में पहले कभी नहीं किया गया। यह इन कथाओं का अंग्रेजी में पहला अनुवाद है। इस तरह से यूक्रेन की लोक कथाओं के पहले अंग्रेजी अनुवाद का यह पहला हिन्दी अनुवाद कहा जा सकता है। इस संग्रह में कई प्रकार की कथाओं को शामिल किया गया है।

स्लैवोनिक विद्वानों का कहना है कि इन लोक कथाओं में कुछ ऐसी खास और अजीब चीज़ें हैं जो यूरोप के किसी दूसरे देश की लोक कथाओं में नहीं मिलतीं जैसे – जादू का रूमाल जो सामान्य रूप से लोगों को फायदा पहुँचाता है पर यहाँ इवान गोलिक की कहानी में उसे भयानक रूप से नुकसान पहुँचाता है। राक्षसों को भगाने वाले रुई और तारकोल के कोड़े और जादू के जानवरों के अंडे बेखबर लोगों के हाथ में पड़ कर शरारत करने लगते हैं।

इसकी लोक कथाओं के बारे में एक और खास बात है और वह यह कि बहुत सालों तक रूस में मिले रहने की वजह से इसकी लोक कथाओं पर वहाँ की लोक कथाओं का असर बहुत है इसलिये इसमें काई बड़ा आश्चर्य नहीं अगर यूक्रेन की कोई कहानी पढ़ कर तुम्हें ऐसा लगे कि यह कहानी तो तुमने कहीं रूस की कहानियों में भी पढ़ी है। जैसे इस पुस्तक की पहली कहानी कुछ ऐसी ही है।

तो लो पढ़ो ये इतनी सारी लोक कथाऐं यूक्रेन देश की। यह इन कथाओं का पहला हिन्दी अनुवाद है जो पहली बार प्रकाशित हो रहा है।

---

[1] Cossack

[2] Ruthenian language

[3] "Cossack Fairy Tales and Folktales". Written by various authors. Translated by R Nisbet Bain. George G Harrap. Year Unknown (Another edition – AL Burt Co. 1894)

1 जंगल का ज़ार ओह[4]

पुराना समय वैसा ही नहीं था जैसा कि आज का समय है जिसमें हम रहते हैं। पुराने समय में सब प्रकार की "बुरी शक्तियॉ" चारों तरफ घूमा करती थीं। यह दुनियॉ भी तब वैसी नहीं थी जैसी कि आज है। आजकल हमारे बीच वैसी बुरी शक्तियॉ भी नहीं हैं जैसे पहले थीं। मैं तुमको एक कहानी सुनाता हूँ "जंगल का ज़ार ओह" जिससे तुमको पता चलेगा कि वह आदमी किस तरह का था।

एक बार की बात है कि बहुत पहले, उस समय से भी पहले की की जिस समय के बारे में तुम केवल सोच सको। उस समय से भी पहले की जब तुम्हारे दादा या उनके भी दादा रहे होंगे कि एक गरीब आदमी अपनी पत्नी के साथ रहता था। उनके एक बेटा भी था। पर वह अपने माता पिता का केवल अकेला बेटा ही नहीं था बल्कि वह इतना आलसी था कि बस भगवान ही उसकी सहायता करे।

वह कुछ नहीं करता था। वह कुँए से पानी भर कर भी नहीं लाता था। बस वह अँगीठी पर लेटा रहता या फिर गर्म राख के पास लोटता रहता। अगर वे उसे खाने के लिये कुछ दे देते तो वह उसे खा लेता और अगर वे उसे खाने के लिये कुछ भी नहीं देते तो वह कुछ भी नहीं खाता।

[4] Oh: the Tzar of the Forest. (Tale No 1)

उसकी वजह से उसके माता पिता बहुत ही दुखी थे और बहुत दिनों तक दुखी रहे। वे उससे कहते — "हम तेरा क्या करें। तू तो किसी काम का नहीं। दूसरे लोगों के बच्चे घर में रह कर अपने माता पिता की सहायता करते हैं पर तू तो बिल्कुल ही बेवकूफ है। बिना कुछ काम किये ही हमारी रोटी तोड़ता है।"

परन्तु उनके कहने का उस लड़के पर कोई असर नहीं पड़ता। वह कुछ भी नहीं करता। वह फिर भी अँगीठी पर लेटा रहता या फिर राख से खेलता रहता।

एक दिन उसकी माँ ने उसके पिता से कहा — "हम अपने बेटे का क्या करें? आप देख रहे हैं न कि वह इतना बड़ा हो गया है और अभी भी हमारी कोई सहायता नहीं करता। और वह बेवकूफ भी इतना है कि हम उसके साथ कुछ कर नहीं सकते।

देखिये अगर हम इसे कहीं दूर भेज सकते हैं तो हमें कहीं दूर ही भेज देना चाहिये। हो सकता है कि हमारी अपेक्षा दूसरे लोग इससे कुछ काम ले सकें। सो माता पिता दोनों इस बात पर राजी हो गये और अगले दिन उसे एक दर्जी की दूकान पर सिलाई सीखने के लिये भेज दिया गया। वहाँ वह तीन दिन रहा पर फिर वह घर भाग आया। वह आ कर फिर से अपनी अँगीठी पर लेट गया और राख से खेलना शुरू कर दिया।

उसके पिता ने उसे बहुत मारा और फिर एक चमार के पास जूता बनाना सीखने के लिये भेज दिया। पर वह फिर भाग आया।

उसके पिता ने उसे फिर से बहुत मारा और अबकी बार एक लोहार की दूकान पर लोहे का काम सीखने के लिये भेज दिया। पर वहॉ भी वह अधिक दिनों तक नहीं रहा और घर वापस आ गया।

अब वह बेचारा पिता क्या करे। वह बोला — "ओ कुत्ते के पिल्ले, मुझे पता है कि अब मुझे तेरे साथ क्या करना चाहिये। मैं तुझ आलसी को कहीं दूर ले जाता हूँ, किसी दूसरे राज्य में। शायद बजाय यहॉ के वहॉ वे लोग तुझे कुछ अधिक अच्छी तरह से सिखा सकें। और वह जगह यहॉ से बहुत दूर भी होगी जहॉ से तू इतनी जल्दी नहीं आ सकेगा।" सो उसने उसे साथ लिया और अपनी यात्रा पर निकल पड़ा।

वे चलते रहे चलते रहे। वे थोड़ी दूर गये या फिर बहुत दूर गये यह तो पता नहीं मगर चलते चलते वे एक जंगल में आ गये। वह जंगल इतना घना और अँधेरा था कि उन्हें न तो वहॉ से आसमान दिखायी देता था और न ही जमीन।

वे इस जंगल में से हो कर जा रहे थे कि बहुत थोड़ी ही देर में वे चलते चलते थक गये। पर जब वे एक साफ जगह आये जहॉ पेड़ों के बहुत सारे कटे हुए तने खड़े हुए थे तो पिता ने बेटे से कहा — "मैं बहुत थक गया हूँ अब मैं यहॉ कुछ देर आराम करूँगा।"

ऐसा कहते हुए वह वहॉ खड़े हुए एक पेड़ के कटे हुए तने पर बैठ गया। बैठते बैठते वह बोला "ओह मैं कितना थका हुआ था।"

जैसे ही उसने यह कहा कि उस कटे हुए पेड़ के तने में से न जाने कैसे एक बहुत ही छोटा बूढ़ा निकल आया जिसके शरीर पर बहुत सारी झुर्रियॉ थीं। उसकी दाढ़ी बिल्कुल हरी थी और उसके घुटनों तक पहुॅच रही थी।

निकलते ही उसने पूछा — "ओ आदमी, तुम्हें मुझसे क्या चाहिये?"

पिता तो उसे रोशनी में आते देख कर आश्चर्यचकित रह गया। वह बोला — "मैंने तो तुम्हें बुलाया नहीं था। चले जाओ यहॉ से।"

छोटा बूढ़ा आदमी बोला — "तुम यह बात कैसे कह सकते हो जबकि तुम्हीं ने तो वास्तव में मुझे बुलाया।"

पिता ने पूछा — "तब तुम हो कौन?"

छोटा बूढ़ा आदमी बोला — "ओह मैं? मैं तो जंगल का ज़ार[5] हूॅ। अब बताओ कि तुमने मुझे क्यों बुलाया था।"

पिता बोला — "चले जाओ यहॉ से। मैंने तुम्हें नहीं बुलाया।"

छोटा बूढ़ा आदमी बोला — "तुमने मुझे बुलाया जब तुमने कहा "ओह"।

पिता बोला — "मैं तो बहुत थका हुआ था इसलिये मैंने ओह कह दिया था।"

ओह ने पूछा — "अच्छा तो तुम यह बताओ कि तुम जा कहॉ रहे हो?"

[5] Tzar or Tsar – pronounced as "Zaar". Tzar was the title of the emperors of Russia before 1917.

पिता ने एक लम्बी साँस भर कर कहा कि "मेरे सामने इतनी बड़ी दुनियाँ पड़ी है। मैं अपने खरदिमाग बेटे को किसी दूसरे के पास नौकरी दिलाने जा रहा हूँ। हो सकता है कि बजाय हमारे दूसरे लोग उसके दिमाग में कुछ अधिक अक्ल भर सकें। पर हम इसे कहीं दूर भेजना चाहते हैं जहाँ से यह वापस न आ सके क्योंकि अगर यह घर के पास जाता है तो हमेशा घर भाग आता है।

ओह बोला — "तो तुम इसे मुझे दे दो। मै तुमसे वायदा करता हूँ कि मैं इसको सिखा दूँगा। पर मैं इसे केवल एक शर्त पर लूँगा कि एक साल बाद तुम इसे लेने के लिये वापस आओगे।

उस समय अगर तुम इसे पहचान जाओगे तब तुम इसे ले जा सकते हो पर अगर उस समय तुम इसे नहीं पहचान सके तो फिर यह एक और साल मेरी सेवा में रहेगा।"

पिता खुशी से चिल्ला कर बोला "ठीक है।" दोनों ने हाथ मिलाया। इस समझौते के लिये एक ड्रिंक पिया। पिता अपने घर वापस चला गया और ओह उसके बेटे को ले कर अपने घर आ गया।

ओह उसके बेटे को ले कर दूसरी दुनियाँ में आ गया जो धरती के नीचे थी। वह उसे ले कर एक मकान में आ गया जो टहनियों का बना हुआ था। उसकी हर चीज़ हरी थी। उसकी दीवारें हरी थीं। उसमें पड़ी बैन्चैं हरी थी। यहाँ तक कि ओह की पत्नी भी हरी थी। उसके बच्चे हरे थे। सब कुछ हरा ही हरा था।

ओह के पास काम करने वालियों की जगह जल परियॉ थीं। वे सब भी हरी थीं। उसने अपने नये मजदूर को बैठने के लिये कहा और फिर उसे कुछ खाने के लिये कहा। वे जल परियॉ उसके लिये कुछ खाना ले कर आयीं तो वह भी हरा था। उसने वह खाना खाया।

उसके बाद ओह ने कहा —"मेरे इस नये मजदूर को ऑगन में ले जाओ ताकि यह वहॉ लकड़ी काट सके और कुँए से पानी खींच सके। वे उसको ऑगन में ले गयीं पर वह वहॉ लकड़ी काटने और पानी भरने की बजाय जा कर लेट गया और सो गया।

ओह यह देखने के लिये बाहर निकल कर आया कि वह कैसा कर रहा था पर वहॉ उसने देखा कि वह तो वहॉ खर्राटे मार कर सो रहा था। ओह ने उसे पकड़ लिया। उसने कुछ लकड़ियॉ मॅगवायीं और उसे उन लकड़ियों से बॉध दिया। फिर उसने उन लकड़ियों में आग लगा दी जिससे वह पूरी तरीके से जल कर मर गया।

ओह ने उसकी राख उठायी और उसे चारों तरफ फैला दी। पर उसमें से एक अंगारा कहीं अलग जा पड़ा। इस अंगारे के ऊपर उसने ज़िन्दगी का पानी डाल दिया तो लो उस जोकर की बजाय तो एक बहुत सुन्दर नौजवान कोज़ैक उठ कर खड़ा हो गया जिसके बारे में न तो सोचा जा सकता है न ही वर्णन किया जा सकता है बस वैसा तो केवल परियों की कहानियों में ही मिलता है।

अब वह लड़का वहॉ एक साल तक रहा। एक साल गुजर जाने के बाद पिता अपने बेटे को लेने के लिये उसी जंगल में आया। फिर वह उसी कटे हुए पेड़ के तने के पास आया और उस पर बैठते हुए बोला "ओह"। लो उसी समय उस तने में से वह जंगल का ज़ार निकला और बोला — "कैसे हो? तुम्हें क्या चाहिये?"

पिता बोला — "मैं अच्छा हूँ तुम कैसे हो। मैं अपने बेटे को लेने आया हूँ।"

ओह बोला — "आओ और देख कर बताओ कि क्या तुम उसे पहचान सकते हो। अगर पहचान सकते हो तो उसे अपने साथ ले जाओ और अगर न पहचान सके तो वह अभी मेरी एक साल और सेवा करेगा।"

सो पिता ओह के साथ गया। वे ओह के मकान तक आये। ओह ने एक मुट्ठी भर बाजरा लिया और उसे बिखेर दिया तो बहुत सारे मुर्गे वहॉ उसे खाने के लिये आ गये। सारे मुर्गे एक जैसे ही थे उनमें कोई अन्तर नहीं था। उसने पूछा — "क्या तुम अब अपने बेटे को पहचान सकते हो?"

पिता इन मुर्गों को घूरता रहा घूरता रहा। वहॉ कुछ भी नहीं था सिवाय मुर्गों के और वे भी सब बिल्कुल एक से थे। वह अपने बेटे को नहीं पहचान सका। ओह बोला — "ठीक है अब तुम्हारा बेटा मेरे पास एक साल और रहेगा।" पिता घर चला गया।

दूसरा साल भी गुजर गया। पिता फिर से ओह के पास गया। वह उसी जंगल में उसी कटे हुए पेड़ के तने पर बैठता हुआ बोला "ओह" और लो जंगल का ज़ार तो वहॉ तुरन्त ही प्रगट हो गया।

वे फिर से ओह के मकान पर गये तो ओह ने कहा — "अबकी बार देखते हैं कि तुम अपने बेटे को पहचान सकते हो या नहीं।"

कह कर वह उसे एक भेड़ों के बाड़े में ले गया जहॉ भेड़ें ही भेड़ें थीं। पिता बेचारा फिर घूरता रहा पर अपने बेटे को न पहचान सका क्योंकि वहॉ सारी भेड़ें ही भेड़ें थीं और वे भी सब एक सी।

ओह बोला — "क्योंकि तुम अपने बेटे को अबकी बार भी नहीं पहचान सके सो अब तुम्हारा बेटा मेरे पास एक साल और रहेगा।" यह सुन कर पिता निराश हो कर चला गया।

इसी तरह से तीसरा साल भी बीत गया। पिता फिर से ओह के पास आया। पर रास्ते में उसे एक बूढ़ा मिला जो दूध की तरह सफेद था और दूध की तरह ही चमक रहा था।

उसने पिता से कहा — "हलो। कहॉ जा रहे हो?"

पिता बोला — "हलो। मैं अपने बेटे को ओह से छुड़ाने के लिये जा रहा हूँ।"

बूढ़े ने पूछा — "कैसे?" तो पिता ने उसे अपनी सारी कहानी बता दी।

बूढ़ा बोला — "अरे वह तो बहुत ही अधर्मी है जिससे तुम्हारा पाला पड़ा है। इस तरह से तो वह तुम्हें तुम्हारी नाक पकड़ कर बहुत दिनों तक घुमाता रहेगा।"

पिता बोला — "हॉ मुझे कुछ ऐसा लग तो रहा है पर मुझे नहीं मालूम कि मैं उसके साथ अब क्या करूँ। फादर क्या आप मुझे यह बतायेंगे कि मैं उससे अपना बेटा वापस कैसे लूँ।"

बूढ़ा बोला — "हॉ मैं बता सकता हूँ।"

पिता बोला — "मैं आपसे विनती करता हूँ कि आप मुझे यह बतायें। मैं आपके लिये भगवान से हमेशा प्रार्थना करता रहूँगा। हालॉकि वह बेटा मेरा बेटा कहने के लायक तो नहीं है फिर भी वह मेरा खून और मॉस तो है।"

बूढ़ा बोला — "तसल्ली रखो। तसल्ली रखो। अब जब तुम ओह के पास जाओ वह तुम्हारे सामने बहुत सारी फाख्ताओं को उनके पिंजरे से बाहर निकाल देगा।

पर तुम उनमें से एक भी फाख्ता को मत चुनना। तुम केवल उसी फाख्ता को चुनना जो बाहर न आये और जो नाशपाती के पेड़ के नीचे चुपचाप बैठी हो और अपने पंख चुन रही हो। वही तुम्हारा बेटा है।"

यह सुन कर पिता ने बूढ़े को धन्यवाद दिया और आगे चल दिया। वह फिर से उसी कटे पेड़ के तने के पास आया और बोला

"ओह"। तुरन्त ही ओह हाजिर था। पहले की तरह से वे दोनों फिर से ओह के घर गये।

जैसा कि उस सफेद बूढ़े ने कहा था वैसा ही हुआ ओह ने उसके सामने बहुत सारी फाख्ताऐं उनके पिंजरों में से बाहर निकाल दीं। अब तो पिता के सामने इतनी सारी फाख्ताऐं थीं कि उनकी तो गिनती करना मुश्किल था। और सबसे बड़ी बात तो यह थी कि सारी फाख्ताऐं एक जैसी थीं।

ओह ने पूछा — "क्या तुम इनमें से अपना बेटा पहचान सकते हो? अगर तुम उसे पहचान पाये तो वह तुम्हारा नहीं पहचान पाये तो वह मेरा।"

सारी फाख्ताऐं गेहूँ के दाने खा रही थीं पर उनमें से एक फाख्ता नाशपाती के पेड़ के नीचे चुपचाप बैठी अपने पंख नोच रही थी। बस पिता ने उसी की तरफ इशारा करते हुए कहा "यह है मेरा बेटा।"

ओह बोला — "क्योंकि तुमने अपने बेटे को पहचान लिया है इसलिये यह तुम्हारा हुआ तुम इसे अपने साथ ले जा सकते हो।"

पिता ने उस फाख्ता को उठाया तो जैसे ही उसने उसे उठाया तो वह तो एक बहुत सुन्दर नौजवान के रूप में बदल गया जैसा सारी दुनियॉ में कोई नहीं था। पिता उसे देख कर बहुत खुश हुआ। उसने उसे गले से लगाया उसे चूमा और कहा "चलो बेटा घर चलें।" और दोनों घर चल दिये।

जब वे सड़क के किनारे किनारे जा रहे थे तो बात करते जा रहे थे कि किस तरह से वह ओह के घर में रहा। फिर पिता ने उसे बताया कि उसके पीछे उसने क्या क्या सहा।

पिता ने फिर पूछा — "बोलो बेटा। अब हम क्या करें। मैं भी गरीब हूँ और तुम भी गरीब हो। तुमने ओह की तीन साल तक सेवा तो की पर उससे कुछ कमाया तो नहीं।"

बेटा बोला — "पिता जी, आप दुखी मत होइये। अन्त में सब कुछ ठीक हो जायेगा। देखिये यहाँ कुछ भले लोग लोमड़े का शिकार करने के लिये घूम रहे हैं।

मैं ऐसा करता हूँ कि अपने आपको एक ग्रेहाउन्ड कुत्ते में बदल लेता हूँ और उस लोमड़े को पकड़ लेता हूँ। तब ये भले लोग आपसे मुझे बेचने की विनती करेंगे। तो आप मुझे कम से कम तीन सौ रूबल में बेच देना। बस यह ध्यान रखियेगा कि मुझे आप बिना जंजीर के बेचियेगा। तब हमारे पास बहुत सारा पैसा होगा और हम आराम से रह सकेंगे।

वे चलते रहे चलते रहे पर जंगल की सीमा पर जा कर उन्होंने देखा कि कुछ ग्रेहाउन्ड कुत्ते एक लोमड़े का पीछा कर रहे थे। वे उसके पीछे भागे जा रहे थे भागे जा रहे थे पर लोमड़ा भी उनकी पकड़ से बचता ही जा रहा था। इस तरह वे कुत्ते उसे पकड़ ही नहीं पा रहे थे। तब उस आदमी के बेटे ने अपने आपको एक कुत्ते में बदला और लोमड़े को मार दिया।

वे भले लोग भागते भागते आये और देखा कि एक अजनबी कुत्ते ने लोमड़े को मार डाला है। उन्होंने चारों तरफ देखा तो उन्हें वहॉ एक आदमी खड़ा नजर आया तो उन्होंने उससे पूछा कि क्या वह कुत्ता उसका था। आदमी ने जवाब दिया कि "हॉ यह मेरा ही कुत्ता है।"

लोगों को वह कुत्ते बहुत पसन्द आया तो उन्होंने उसे खरीदने का सोचा। उन्होंने उस आदमी से पूछा कि "क्या तुम अपने कुत्ते को हमें बेचोगे?"

आदमी ने जवाब दिया "हॉ मैं बेचूॅगा।"

"कितने पैसे लोगे?"

"तीन सौ रूबल लूॅगा और इसे बिना इसकी जंजीर के बेचूॅगा।"

भले लोग बोले — "हमें इसकी जंजीर का क्या करना है हम तो इसके गले में सोने की जंजीर भी डाल सकते हैं। क्या तुम इसके सौ रूबल लोगे?"

"नहीं मुझे इसके तीन सौ रूबल ही चाहिये।"

"ठीक है। यह लो तीन सौ रूबल और इसे हमें बेच दो।" कह कर उन्होंने तीन सौ रूबल उसे गिन दिये और कुत्ता ले कर चल दिये। वे फिर शिकार की खोज में निकले। उन्होंने उसे एक दूसरे लोमड़े के पीछे भेजा तो वह उसके पीछे भाग तो गया मगर वापस नहीं लौटा। वह फिर से सुन्दर नौजवान बन कर अपने पिता के पास चला गया था।

वे चलते रहे चलते रहे तो पिता ने बेटे से कहा — "अब इस पैसे का हम क्या करेंगे? यह तो केवल हमारे घर चलाने के लिये और घर ठीक करने के लिये ही काफी है।"

बेटा बोला — "आप चिन्ता न करें पिता जी अभी हम और पैसा कमायेंगे। यहाँ कुछ भले लोग अपने बाज़ों के द्वारा बटेरों का शिकार कर रहे हैं। मैं अपने आपको एक बाज़ के रूप में बदल लेता हूँ। आप मुझे बिना हुड के तीन सौ रूबल में बेच देना।"

सो वे फिर आगे मैदान में पहुँचे जहाँ कुछ भले आदमी अपने बाज़ों द्वारा बटेरों का शिकार कर रहे थे। उनके बाज़ उड़ तो बहुत तेज़ रहे थे पर हर बार पीछे रह जाते थे। यह लड़का एक बाज़ बना और इसने कई बटेरों को गिरा दिया।

यह देख कर भले लोग बहुत खुश हुए। यह आदमी पास में ही खड़ा था तो उन्होंने उससे पूछा "क्या यह बाज़ तुम्हारा है?"

आदमी बोला "हाँ यह बाज़ मेरा ही है।"

"क्या तुम इसे हमें बेचोगे?"

"हाँ हाँ बेचूँगा। मैं इसके तीन सौ रूबल लूँगा और इसे बिना हुड के बेचूँगा।"

"हमें तुम्हारा हुड नहीं चाहिये। हमें तो तुम बस बाज़ ही दे दो। उसके लिये हुड तो हम ज़ार जितने पैसे से खुद ही बनवा सकते हैं।" उन्होंने उससे कुछ पैसे की सौदेबाज़ी की पर फिर तीन सौ रूबल दे कर उसे खरीद लिया।

खरीदने के बाद उन्होंने उसे दूसरी बटेरों के पीछे भेज दिया। वह बाज़ बना लड़का बटेरों के पीछे उड़ तो गया पर फिर वापस नहीं लौटा और लड़का बन कर अपने पिता के पास चला गया।

पिता ने फिर कहा — "बेटा अभी भी ये पैसे काफी नहीं हैं। इतने कम पैसे से काम कैसे चलेगा।"

बेटा बोला — "थोड़ा इन्तजार कीजिये पिता जी। अभी हम और पैसा कमायेंगे। जब हम बाजार से हो कर गुजरेंगे तो मैं अपने आपको एक घोड़े में बदल लूँगा। वहाँ आप मुझे बेच दीजियेगा। वे मेरे लिये आपको एक हजार रूबल देंगे। पर आप मुझे वहाँ बिना लगाम के बेचियेगा।"

सो जब वे अगले छोटे से शहर के बाजार में पहुँचे तो यह लड़का एक घोड़े में बदल गया। पिता उस घोड़े को ले कर बाजार में बेचने के लिये खड़ा हो गया। वह घोड़ा देखने में इतना खूँख्वार लगता था कि उसके पास भी जाने की किसी की हिम्मत नहीं होती थी। पिता उसकी लगाम थामे खड़ा था।

घोड़ों की खरीद फ़रोख्त करने वाले लोग उसके पास उस घोड़े को खरीदने के लिये आने लगे। उन्होंने जब उसके दाम पूछे तो वह बोला — "एक हजार रूबल पर बिना लगाम के।"

"हमें इसकी लगाम का क्या करना है हम इसके लिये चाँदी की लगाम बनवा लेंगे। पर हम तुम्हें इसके पाँच सौ रूबल देंगे।"

"नहीं। मैं एक हजार रूबल से कम बिल्कुल नहीं लूँगा।"

तभी एक जिप्सी वहॉ आया और वह उसका सौदा करने लगा — "छह सौ रूबल लगाम के साथ।"

पर उसका पिता किसी और सौदे पर नहीं माना। वह बोला — "नहीं ओ जिप्सी। यह लगाम तो मुझे बहुत प्यारी है। मैं इसे नहीं दे सकता।"

जिप्सी बोला — "मेरे प्यारे भाई। क्या कहीं तुमने बिना लगाम के कोई घोड़ा देखा है। बिना लगाम के कोई उसे कैसे ले जायेगा।"

आदमी बोला — "कुछ भी हो यह लगाम तो मेरी ही है।"

जिप्सी बोला — "देखो मैं तुम्हें इस लगाम के पॉच रूबल और दूँगा पर मुझे इसकी लगाम तो चाहिये ही।"

पिता थोड़ी देर तक सोचता रहा कि इस तरह की लगाम तो केवल तीन सिक्कों में आती है और यह जिप्सी मुझे इसके पॉच रूबल दे रहा है तो मैं इसे यह लगाम दे ही देता हूँ।

सो एक बार फिर पिता ने अपने बेटे का सौदा एक ड्रिंक के साथ कर दिया। पिता अपने पैसे ले कर अपने घर चला गया और जिप्सी अपने घोड़े को ले कर अपने घर चला गया।

लेकिन वह जिप्सी वास्तव में जिप्सी नहीं था। वह ओह था जंगल का ज़ार जिसने जिप्सी का रूप रख कर आदमी से घोड़े का सौदा किया था।

ओह अपने घोड़े पर सवार हो कर चल दिया। घोड़ा भी अपने सवार को जंगल के पेड़ों के ऊपर पर आसमान के बादलों के नीचे

उड़ा कर चल दिया। आखिर वे एक जंगल में उतरे और ओह के मकान में आये। ओह ने घोड़े को बाहर मैदान में छोड़ा और खुद वह घर के अन्दर चला गया।

ओह ने अपनी पत्नी से कहा — "यह कुत्ते का पिल्ला मेरे हाथ से इतनी जल्दी बच नहीं सकता।"

सुबह को ओह ने घोड़े को लगाम से पकड़ा और पानी पिलाने के लिये उसे पास की एक नदी के पास ले गया। जैसे ही घोड़ा नदी के पास पहुँचा और उसने पानी पीने के लिये अपना सिर पानी में झुकाया वह एक मछली बन गया और उसमें तैरने लगा।

ओह भी तुरन्त ही एक बड़ी मछली, पाइक मछली, बन गया और उसके पीछे पीछे तैरने लगा। पर जैसे ही पाइक छोटी मछली को पकड़ने वाली थी कि छोटी मछली ने अपने पंख अटका कर अपनी दुम पाइक की तरफ कर ली जिससे पाइक उसे पकड़ न सके।

जब पाइक छोटी मछली के पास आयी तो वह चिल्लायी — "ओ छोटी मछली। अपना सिर मेरी तरफ करो मैं तुमसे कुछ बात करना चाहता हूँ।"

छोटी मछली बोली — "कहो जो तुम कहना चाहते हो। मैं जैसे हूँ वैसे ही तुम्हारी सब बात सुन सकती हूँ।"

सो पाइक उस छोटी मछली का पीछा करती रही और एक बार फिर उसके पास तक पहुँच गयी पर उससे कोई फायदा नहीं था।

आखिर छोटी मछली किनारे की तरफ तैर गयी। वहॉ किनारे पर एक ज़ारेवना[6] खड़ी हुई थी उसके हाथ में एक डंडी थी।

किनारे पर पहुँच कर छोटी मछली ने अपने आपको एक सोने की अंगूठी में बदल लिया जिसमें गार्नेट लगे हुए थे। ज़ारेवना ने यह देखा और अपनी डंडी से उसे निकाल कर उसे खुशी खुशी घर ले गयी और अपने पिता से कहा — "देखिये पिता जी। मुझे कितनी सुन्दर अंगूठी मिली है।"

ज़ार ने उसे चूमा पर ज़ारेवना की समझ में यह नहीं आया कि वह उसे अपनी किस उँगली में पहने।

तभी पाइक ने एक सौदागर का वेश बना कर महल में प्रवेश किया और ज़ार से मिलने की इच्छा प्रगट की। ज़ार उससे मिलने के लिये बाहर गया और उससे पूछा — "ओ बूढ़े तुम क्या चाहते हो?"

बूढ़ा सौदागर बोला — "मैं समुद्र में अपने जहाज़ में जा रहा था और एक बहुत सुन्दर गार्नेट जड़ी अंगूठी अपने देश के ज़ार के लिये ले जा रहा था कि वह मेरे हाथ से पानी में गिर पड़ी। क्या आपके किसी नौकर को वह अँगूठी तो नहीं मिली।"

ज़ार बोला — "मेरे किसी नौकर को तो नहीं हॉ मेरी बेटी को वह अँगूठी जरूर मिली है।"

सो ज़ार ने अपनी बेटी को बुलवाया तो ओह ने उससे उस अँगूठी को उसे देने के लिये बहुत विनती की। पर इस सबसे कोई

[6] Tzarevna – the daughter of Tzar

फायदा नहीं वह लड़की तो किसी हालत में उस अँगूठी को उस सौदागर को देने को तैयार नहीं थी।

तब ज़ार खुद अपनी बेटी से बोला — "नहीं मेरी प्यारी बेटी। ऐसा नहीं करते। कहीं इस अँगूठी की वजह से इस बेचारे पर कोई मुसीबत न आ जाये इसलिये यह अँगूठी उसे दो दो।

सौदागर ने उससे कहा — "तुम मुझसे कुछ भी ले लो पर वह अँगूठी मुझे दे दो। अगर मुझे वह अँगूठी न मिली तो मैं ज़िन्दा नहीं बचूँगा।"

ज़ारेवना बोली — "यह न मेरी होगी न तुम्हारी होगी।" कह कर उसने वह अँगूठी जमीन पर फेंक दी।

जैसे ही उसने अँगूठी जमीन पर फेंकी वह बाजरे के दानों में बदल गयी। तुरन्त ही सौदागर एक मुर्गा बन गया और वह बिखरा हुआ बाजरा खाने लगा। वह उन्हें खाता रहा खाता रहा जब तक उसने वह सारा बाजरा नहीं खा लिया।

इस बीच बाजरे का एक दाना ज़ारेवना के पैरों के नीचे खिसक गया जिसे सौदागर देख नहीं पाया। जब उसने सारा बाजरा खत्म कर लिया तो वह खिड़की पर जा बैठा, अपने पंख खोले और वहाँ से उड़ गया।

पर जो अकेला बाजरे का दाना ज़ारेवना के पैरों के नीचे खिसक गया था वह सौदागर के वहाँ से उड़ जाने के बाद एक सुन्दर नौजवान में बदल गया। यह नौजवान इतना सुन्दर था कि जैसे ही

ज़ारेवना ने उसे देखा वह उससे प्रेम करने लगी। उसने ज़ार और ज़ारित्सा[7] से विनती की कि वे उसकी शादी उस नौजवान से कर दें।

वह बोली — "मैं कभी किसी और नौजवान के साथ इतनी खुश नहीं रह पाऊँगी जितनी कि इसके साथ। मेरी खुशी तो बस इस अकेले के साथ ही है।"

ज़ार बहुत देर तक इस बारे में सोचता रहा कि वह इस नौजवान को अपनी बेटी दे या नहीं पर आखीर में उसने उन दोनों को अपना आशीर्वाद दे ही दिया। उन्होंने दोनों को दुलहा और दुलहिन की मालाऐं पहनायीं। उनकी शादी में दुनियॉ के सब लोगों को बुलाया गया।

मैं भी वहीं था। मैंने भी वहॉ खूब बीयर और शराब पी और जो मैं नहीं पी सका वह मेरी दाढ़ी पर चली गयी। मैं अपने दिल में बहुत खुश था।

[7] Tzaritsa – means the wife of the king, or the Queen

2 हवा की कहानी[8]

एक बार की बात है कि एक गॉव में दो भाई रहते थे। उनमें से एक बहुत बहुत अमीर था और दूसरा भाई बहुत बहुत गरीब था। अमीर भाई के पास सब तरह की सम्पत्ति थी और गरीब भाई के पास बहुत सारे बच्चे थे।

एक दिन जब फसल कट रही थी गरीब भाई ने अपनी पत्नी को छोड़ा और अपने छोटे से गेहूँ के खेत की फसल को काटने जा पहुँचा पर हवा उसका सारा अनाज उड़ा कर ले गयी एक दाना भी खेत में नहीं छोड़ा।

गरीब भाई को इस बात पर बहुत गुस्सा आ गया। वह बोला — "अब जो हो सो हो। मैं तो हवा के पास जाऊँगा और उससे कहूँगा कि मैं किन किन दर्दों से हो कर गुजर रहा हूँ। मैंने कितनी मेहनत से अपना गेहूँ उगाया था और वह उसे सारा का सारा उड़ा कर ले गया। यह क्या तरीका है।"

सो गरीब भाई अपने घर गया और हवा के पास जाने के लिये तैयार होने लगा। पत्नी ने देखा कि उसका पति कहीं जाने के लिये तैयार हो रहा है तो उसने पूछा — "प्रिय तुम कहॉ चले।"

गरीब भाई बोला — "मैं हवा को ढूँढने जा रहा हूँ।"

"तो तुम उससे क्या कहोगे?"

[8] The Story of the Wind. (Tale No 2)

गरीब भाई बोला — "मैं उससे कहूँगा कि "ऐसा काम मत करो।"

पत्नी बोली — "यह कहावत तो तुम्हें पता है न कि अगर तुम्हें हवा को ढूँढना है तो उसे खुली जगह में ढूँढो। तुम्हारे हिसाब से तो वह दस दिशाओं में जा सकती है। प्रिय ज़रा इसके बारे में सोचो और उसे ढूँढने न जाओ।"

गरीब भाई बोला — "नहीं मुझे तो जाना ही है सो मैं तो जाऊँगा ही। हो सकता है कि मैं शायद कभी न लौट पाऊँ।"

तब उसने अपनी और बच्चों से विदा ली और वहाँ से चल दिया। वह उसे ढूँढने के लिये एक खुले हुए घास के मैदान में जा पहुँचा।

वह आगे चलता रहा चलता रहा जब तक कि उसके आँखों के सामने एक जंगल आया। जंगल के किनारों पर एक झोंपड़ी मुर्गी के चार अंडों पर खड़ी हुई थी। यह आदमी इस मकान में गया तो यह तो उसे देख कर आश्चर्य में पड़ गया। क्योंकि वहाँ पर एक बहुत ही बड़ा और बूढ़ा आदमी लेटा हुआ था। वह बिल्कुल दूध की तरह से सफेद था।

वह अपनी पूरी लम्बाई में लेटा हुआ था। उसका सिर एक तकिये पर रखा हुआ था और चारों हाथ पैर उसके चारों कोनों में फैले हुए थे। उसके सारे बाल खड़े हुए थे। यह और कोई नहीं हवा खुद था।

गरीब भाई उस प्राचीन चीज़ को देख कर डर गया क्योंकि अपनी पूरी ज़िन्दगी में उसने कभी कोई ऐसी चीज़ नहीं देखी थी। वह अपने आप से ही बोला "भगवान आपकी मदद करें ओ बूढ़े बाबा।"

वह प्राचीन आदमी अपनी झोंपड़ी में लेटे ही लेटे बोला — "ओ भले आदमी तू हमेशा तन्दुरुस्त रह।"

फिर उसने बहुत ही दोस्ताना तरीके से उससे पूछा — "ओ भले आदमी तू यहाँ किस वजह से आया है?"

गरीब आदमी बोला — "मैं सारी दुनियाँ में हवा को ढूँढता घूम रहा हूँ। जब मैं उससे मिल लूँगा तो मैं वापस चला जाऊँगा और अगर मुझे वह नहीं मिला तो मैं उसे ढूँढता ही रहूँगा।"

फर्श पर लेटे लेटे ही प्राचीन आदमी ने कहा — "तुझे हवा से क्या काम है? उसने तेरे साथ ऐसा क्या गलत किया है कि तुझे उससे इतना जरूरी मिलना है?"

गरीब भाई बोला — "उसने मेरे साथ क्या गलत किया है तो सुनो ओ प्राचीन आदमी। मैं तुम्हें बताता हूँ कि उसने मेरे साथ क्या गलत किया है।

मैं अपनी पत्नी को छोड़ कर सीधा अपने छोटे से खेत पर उसे काटने गया तो जब मैं उसे काट कर उसमें से दाना निकालने के लिये उसे पीटने लगा तो हवा आया और मेरे उन सब दानों को उड़ा कर

ले गया और सबको बिखेर दिया। मेरे खेत में एक भी दाना नहीं बचा। सो अब तुम देखो कि मैं उसे किस बात के लिये धन्यवाद दूँ।

भगवान के नाम पर मुझे बताओ तो कि ऐसा क्यों होना चाहिये था। वह मेरा छोटा सा खेत ही तो बस मेरा सब कुछ था। मैंने उसे अपना पसीना बहा बहा कर जोता था काटा था और पीटा था पर हवा आया और मेरे सब दाने उड़ा कर ले गया। अब उनमें से दुनियॉ भर में किसी भी दाने का कोई पता नहीं है।

तब मैंने अपने मन में सोचा कि "उसे मेरे साथ ऐसा क्यों करना चाहिये था।" फिर मैं अपनी पत्नी के पास गया और उससे कहा कि "मैं हवा को ढूँढने जा रहा हूँ और उससे कहूँगा कि दूसरी बार किसी ऐसे गरीब के खेत पर नहीं आना जिसके पास बस थोड़ा सा ही अनाज हो। और उसे उड़ाना भी नहीं तो उसे बहुत बुरी तरह से पछताना पड़ेगा।"

जमीन पर लेटे हुए आदमी ने कहा — "तुम ठीक कह रहे हो मेरे बेटे। भविष्य में मैं इस बात का ख्याल रखूँगा। भविष्य में मैं किसी ऐसे गरीब का अनाज नहीं उड़ाऊँगा। पर ओ भले आदमी तुम्हें हवा को बाहर घास के खुले मैदान में ढूँढने की कोई जरूरत नहीं है क्योंकि मैं खुद ही हवा हूँ।"

गरीब आदमी बोला — "अगर तुम ही हवा हो तो मेरा अनाज मुझे वापस करो।"

वह आदमी बोला — "नहीं। वह तो मैं नहीं कर सकता क्योंकि जो मर गया तुम उसे वापस नहीं ला सकते। तो भी जो कुछ मैंने तुम्हारे साथ शरारत की है उसके बदले में मैं तुम्हें यह थैला देता हूँ।

इसे तुम अपने साथ घर ले जाओ और जब भी तुम्हें कभी खाना चाहिये तो इससे कहना "थैले थैले मुझे खाने के लिये खाना और शराब चाहिये।" तो तुम्हें इससे भर पेट खाना और शराब मिल जायेगी। सो अब तुम्हारे पास अपनी पत्नी और बच्चों का पेट भरने का साधन है।"

गरीब आदमी तो हवा का बहुत कृतज्ञ हो गया। वह बोला — "मैं तुम्हें बहुत बहुत धन्यवाद देता हूँ ओ हवा। तुम्हें इस थैले को मुझे देने के लिये जो मुझे बिना कुछ किये धरे खाना और शराब देगा।"

हवा बोला — "आलसी लोगों के लिये यह एक दोहरा वरदान है। अब तुम घर जाओ पर ध्यान रखना रास्ते में किसी भी सराय में नहीं रुकना। अगर तुम रुके तो मुझे पता चल जायेगा।"

गरीब भाई बोला — "नहीं मैं नहीं ठहरूँगा।" फिर उसने हवा से विदा ली और अपने घर चल दिया।

वह अभी बहुत दूर नहीं गया होगा कि वह एक सराय के सामने से गुजरा तो उसके दिल में यह जानने की एक ज़ोर की इच्छा पैदा हुई कि हवा ने थैले के बारे में सच कहा था या नहीं।

उसने यह भी सोचा कि बीच में सराय पड़े तो उसमें अन्दर जाये बिना कोई कैसे रह सकता है। मैं इसके अन्दर जाऊँगा और बाहर आ जाऊँगा फिर जो भी होता रहे। हवा को क्या पता चलेगा वह तो देख नहीं सकता।

सो उसने सराय के बाहर एक खूँटी पर अपना थैला टाँगा और सराय के अन्दर चला गया। वह ज्यू जिसकी वह सराय थी उससे बोला — "ओ भले आदमी तुम्हें क्या चाहिये?"

गरीब भाई बोला — "ओ कुत्ते। तुझे इससे क्या मतलब।"

ज्यू भुनभुनाया — "उँह तुम सब लोग एक से होते हो। तुम्हें जो चाहिये तुम वह ले लेते हो और फिर उसका पैसा भी नहीं देते।"

गरीब भाई चिल्लाया — "क्या तुम समझते हो कि मैं तुमसे कुछ खरीदना चाहता हूँ?"

कह कर वह अपने थैले की तरफ घूमा और चिल्ला कर बोला "थैले थैले मुझे खाने के लिये खाना और शराब चाहिये।" उसके यह कहते ही एक मेज सज गयी जिस पर भिन्न भिन्न प्रकार के मॉस और शराब लग गये।

यह देख कर सराय के सारे ज्यूज़ वहाँ आ कर इकट्ठे हो गये और उससे पूछने लगे "यह सब क्या है?" "हमने तो ऐसी कोई चीज़ पहले कभी देखी नहीं।"

गरीब भाई बोला — "ओ ज्यूज़। कोई सवाल मत पूछो। बस बैठो और खाओ। सबके लिये बहुत खाना है।"

सो बहुत सारे ज्यू आदमी और स्त्रियॉ वहॉ बैठ गये और उन सबने वहॉ पेट भर कर खाना खाया और खूब शराब पी। उन्होंने कहा — "पियो ओ भले आदमी पियो। जितना चाहो उतना पियो। उसके बाद तुम फिर हमारी लौज में ठहर सकते हो।

हम तुम्हारे लिये एक अच्छा सा बिस्तर बिछवायेंगे। तुम्हें कोई परेशान नहीं करेगा। आओ जो कुछ खाना चाहो वह खाओ और जो पीना चाहो वह पियो।" इस तरह ज्यूज़ ने उसकी नकली प्रशंसा की और शराब के प्याला उसके मुॅह से लगा दिया।

वह बेचारा सादा सा आदमी यही नहीं समझ पाया कि वे कितनी चतुराई से उसके साथ बरताव कर रहे हैं। पीते पीते वह अपनी सुध खो बैठा और अपनी जगह से हिल भी नहीं सका। इस बीच ज्यूज़ ने उसका थैला वैसे ही एक और थैले से बदल दिया और उसे वहीं उसी खूॅटी पर ही टॉग दिया।

सुबह को उन्होंने उसे उठाया और उससे कहा कि उसके घर जाने का समय हो गया। वे बोले देखो सुबह हो गयी। अब उठो। गरीब भाई उठा अपने सिर का पिछला हिस्सा खुजलाया क्योंकि उसे वहॉ से जाने में बहुत आलस आ रहा था। पर फिर भी उसे जाना तो था ही सो उसने खूॅटी पर से अपना थैला उतारा और घर चला गया।

जब वह घर पहुॅचा तो ज़ोर से चिल्लाया — "प्रिये दरवाजा खोलो।" पत्नी ने दरवाजा खोला और गरीब भाई घर के अन्दर गया।

अन्दर जा कर उसने अपना थैला एक खूँटी पर टॉग दिया और पत्नी से बोला — "आओ प्रिये मेज पर बैठो और बच्चों तुम भी मेज पर बैठो। भगवान का लाख लाख धन्यवाद है कि अब हमारे पास बहुत सारा खाना है कि हम पेट भर कर खा भी सकते हैं पी भी सकते हैं और बचा कर भी रख सकते हैं।"

पत्नी ने अपने पति की ओर देखा और मुस्कुरायी। उसे लगा कि उसका पति पागल हो गया है। पर फिर भी वह मेज पर बैठ गयी और उसके बच्चे भी उसके चारों तरफ बैठ गये। अब वह इन्तजार करने लगी कि अब उसका पति क्या गुल खिलायेगा।

पति बोला — "थैले थैले मुझे खाने के लिये खाना और पीने के लिये शराब चाहिये।" पर थैला तो चुपचाप ही उस खूँटी पर टॅगा रहा उसने कुछ नहीं किया।

उसने फिर कहा — "थैले थैले मुझे खाने के लिये खाना और पीने के लिये शराब चाहिये।" पर अभी भी थैला चुपचाप खूँटी पर टॅगा रहा और उसने कुछ नहीं किया।

अब आदमी को बहुत गुस्सा आ गया। वह बोला — "तूने मुझे सराय में तो कितना सारा खाना और शराब दी थी और अब मैं तुझे बेकार ही पुकार रहा हूँ। तू मुझे कुछ दे भी नहीं रहा और न मेरी कुछ सुन ही रहा है।"

कह कर वह अपनी कुर्सी से उछला और एक डंडा ले कर उससे उसे मारने लगा। वह उसे तब तक मारता रहा जब तक कि उसकी

दीवार में एक छेद नहीं हो गया और उस थैले के चीथड़े नहीं उड़ गये। अगले दिन वह हवा के पास जाने के लिये फिर से तैयार हुआ। उसकी पत्नी घर पर ही रही। वह अपने पति को डॉटती ही रही। आदमी हवा से मिलने चला।

हवा से मिलने पर वह बोला — "हलो हवा।"

हवा बोला — "तुम्हारी तन्दुरुस्ती बनी रहे।"

हवा ने फिर पूछा — "तुम कहॉ से आये हो? क्या तुम वही आदमी नहीं हो जिसे मैंने थैला दिया था? अब तुम्हें और क्या चाहिये?"

आदमी बोला — "वह एक सुन्दर सा थैला? तुम्हारे दिये हुए उस थैले ने तो मेरे साथ बहुत शरारत खेली है।"

हवा ने पूछा — "उसने तुम्हारे साथ क्या शरारत खेली है?"

आदमी बोला — "देखो बाबा। मैं तुम्हें बताता हूॅ कि उसने मेरे साथ कौन सी शरारत खेली है। उसने मुझे खाने पीने के लिये कुछ नहीं दिया तो मैंने उसे मारना शुरू कर दिया और उसे दीवार के अन्दर घुसा दिया। अब मैं क्या करूॅ? क्या मैं अपनी झोंपड़ी को ठीक कराऊॅ? बाबा मुझे कुछ दो।"

पर हवा बोला — "नहीं ओ आदमी। अब तुम्हें उसके बिना ही रहना पड़ेगा। बेवकूफ न तो बोये जाते है और न काटे जाते हैं। वे

केवल अपने आप ही उगते हैं। क्या तुम रास्ते में किसी सराय में नहीं ठहरे थे?"

"नहीं मैं तो नहीं ठहरा था।"

हवा बोला — "क्या तुम नहीं ठहरे? झूठ क्यों बोलते हो?"

आदमी बोला — "अच्छा मैं झूठ बोला तो।"

हवा बोला — "अगर तुम कोई नुकसान अपनी गलती से भुगतते हो तो तुम उसके जिम्मेदार खुद हो। और फिर तुम्हें चुप रहना चाहिये।"

आदमी बोला — "फिर भी यह गलती तुम्हारे थैले की ही है कि यह बुराई मेरे सिर आ पड़ी। अगर उसने केवल मेरे लिये ही खाना पीना दिया होता तो मैं तुम्हारे पास आता ही नहीं।"

यह सुन कर हवा ने थोड़ी देर के लिये अपना सिर खुजलाया और फिर उसे एक छोटा सा बकरा देते हुए कहा — "लो यह बकरा तुम्हारे लिये है। अब जब भी तुम्हें इससे पैसा चाहिये तब तुम इससे चाहे जितना पैसा माँग सकते हो।

यह तुम्हें उतना पैसा देगा जितना तुम्हें इससे चाहिये। और मैं फिर कह रहा हूँ कि अबकी बार फिर किसी सराय में नहीं जाना। अगर तुम गये तो मुझे पता चल जायेगा।"

आदमी बोला — "ठीक है। मैं नहीं जाऊँगा।" इसके बाद आदमी ने अपना बकरा उठाया और वहाँ से सीधा घर चल दिया।

आदमी अपने बकरे को अपने पीछे लिये सड़क के किनारे किनारे जा रहा था कि वह एक सराय के पास आया। यह वही सराय थी जिसमें वह पहले भी गया था। उसे देख कर उसके मन में फिर से उसके अन्दर जाने की ज़ोर की इच्छा जागी।

वह उसके दरवाजे पर खड़ा हो गया और सोचने लगा कि उसे अन्दर जाना चाहिये या नहीं क्योंकि एक तरफ तो हवा ने उसे पक्के तरीके से मना कर दिया था दूसरी तरफ उसकी इच्छा थी। उसकी यह भी इच्छा थी कि वह उस बकरे को जॉचना चाहता था।

फिर उसने सोचा "मैं इसके अन्दर चलता ही हूँ बस आज मैं वहॉ पियूँगा नहीं बस केवल एक गिलास ही पियूँगा और उसके बाद फिर मैं घर चला जाऊँगा।" और यह सोचता हुआ वह अपने बकरे को घसीटते हुए सराय में ले कर अन्दर चला गया क्योंकि वह उसके खो जाने से डरता था।

जब ज्यूज़ जो सराय के अन्दर थे उन्होंने एक बकरे को अन्दर आते देखा तो वे बहुत ज़ोर से चिल्ला पड़े — "अरे यह क्या। यह तुमने क्या सोचा कि तुम यह छोटा सा बकरा यहॉ कमरे में लिये हुए चले आओगे? क्या बाहर तुम्हें इसे बॉधने के लिये कोई जगह नहीं मिली?"

"चुप रहो ओ नीच लोगों। इस बात का तुम लोगों से क्या मतलब। यह उस तरह का बकरा नहीं है जिसके साथ तुम्हारा कोई

सम्बन्ध हो। और अगर तुम्हें विश्वास न हो तो तुम यहॉ एक कपड़ा बिछाओ तब फिर तुम कुछ देखोगे। मैं तुमसे वायदा करता हूॅ।"

लोगों ने तुरन्त ही एक कपड़ा बिछा दिया। आदमी बोला — "छोटे बकरे छोटे बकरे पैसे दो।" और उस छोटे से बकरे ने इतना सारा पैसा देना शुरू कर दिया कि वह बढ़ता ही गया और बढ़ता ही गया। वहॉ मौजूद लोग चिल्लाने लगे "ओ आदमी। हमने ऐसा बकरा अपनी ज़िन्दगी में पहले कभी नहीं देखा। तुम इसे हमें बेच दो हम तुम्हें इसका बहुत सारा पैसा देंगे।"

गरीब भाई बोला — "तुम लोग यह सब पैसा ले सकते हो पर मैं अपना बकरा बेचने वाला नहीं हूॅ।"

सो ज्यूज़ ने वहॉ बिखरा सारा पैसा समेट लिया और उसके सामने एक मेज लगवा दी जिस पर बहुत सारे प्रकार के व्यंजन लगे हुए थे। उन्होंने उसे वहॉ बैठने पर मजबूर कर दिया और मालिक ज्यूज़ ने चालाकी से कहा —

"हालॉकि यह खाना खा कर तुम थोड़े ज़िन्दादिल हो जाओगे पर तुम बहुत पीना नहीं क्योंकि तुम्हें मालूम है कि शराब आदमी की अक्ल पर असर करती है।"

गरीब भाई ने ज्यूज़ की इस साफ साफ चेतावनी की बड़ी सराहना की और फिर सब कुछ भूल कर वह खाने की मेज पर बैठ गया और गिलास भर भर कर शराब पीने लगा। पीते पीते वह ज्यूज़

से बातें भी करता जाता था। इस बीच वह अपने बकरे के बारे में बिल्कुल भूल ही गया।

उधर ज्यूज़ भी उसे पिलाते गये पिलाते गये। काफी पिलाने के बाद उन्होंने उसे बिस्तर पर लिटा दिया और उसके बकरे की जगह एक साधारण बकरा रख दिया।

अगले दिन जब वह सो कर उठा तो उसने अपना बकरा उठाया और उसे साथ ले कर अपने घर चला गया। जब वह अपने घर पहुँचा तो उसकी पत्नी दरवाजे में ही खड़ी थी।

जैसे ही उसने अपने पति को आते हुए देखा वह घर के अन्दर भाग गयी और अपने बच्चों से बोली — "आओ बच्चो, जल्दी आओ जल्दी करो तुम्हारे पिता जी आ रहे हैं। वह तुम्हारे लिये एक छोटा सा बकरा ले कर आ रहे हैं। तुम उठो और उनकी तरफ गुस्से से देखना। यह मेरा कितना बुरा साल बीता है पर आखिर वह घर वापस लौट ही आये।"

पति ने घर के दरवाजे पर आ कर आवाज लगायी — "प्रिये दरवाजा खोलो। मैं कहता हूँ दरवाजा खोलो।"

पत्नी बोली — "तुम कोई बहुत बड़े भले आदमी नहीं हो जिसके लिये मैं दरवाजा खोलने आऊँ। तुम दरवाजा अपने आप ही खोल लो। तुम इतनी क्यों पी लेते हो कि यह भी भूल जाते हो कि दरवाजा कैसे खोलते हैं।

यह बहुत बुरा समय है जो मैंने तुम्हारे साथ गुजारा है। यहाँ मैं कितने सारे बच्चों के साथ हूँ और तुम बाहर जा कर इतनी पी कर आते हो।"

खैर फिर पत्नी ने दरवाजा खोला और पति घर के अन्दर घुसा और बोला — "प्रिये तुम तन्दुरुस्त रहो।"

पर पत्नी चिल्ला कर बोली — "तुम इस बकरे को घर के अन्दर क्यों लाये। क्या यह घर के बाहर नहीं ठहर सकता।"

पति बीच में बोला — "मेरी बात तो सुनो। तुम बोलो मगर चिल्लाओ नहीं। हमें अब सब तरह की अच्छी अच्छी चीज़ें मिलेंगी और हमारे बच्चों का भी समय अच्छा गुजरेगा।"

पत्नी चिल्लायी — "अच्छा समय? इस बकरे के साथ हमारा क्या अच्छा समय बीतेगा? हमारे पास तो इस बकरे को खिलाने के लिये भी पैसे नहीं हैं। हमारे पास अपने लिये तो खाने के लिये पैसे हैं ही नहीं और तुम यह बकरा यहाँ और ले आये हो। यह सब बेकार की बात है।"

पति बोला — "प्रिये शान्त रहो। यह दूसरे बकरों जैसा नहीं है।"

पत्नी मुँह बना कर बोली — "तो फिर किस जैसा है।"

"अब तुम ज़्यादा सवाल मत करो और फर्श पर एक कपड़ा बिछाओ और अपनी आँखें खुली रखो।"

पत्नी ने पूछा — "मैं यहाँ कपड़ा क्यों बिछाऊँ?"

पति गुस्से से चिल्ला कर बोला — "अरे क्यों बिछाऊँ? जैसा मैं कहता हूँ तुम वैसा करो। और अपनी जबान को काबू में रखो।"

पर पत्नी फिर बोली — "मेरा तो बुरा समय आ गया है। तुम बाहर जा कर केवल पीते हो और जब तुम घर लौटते हो तब तुम बेकार की बातें करते हो। अपने साथ थैला और बकरा लाते हो और हमारी झोंपड़ी तुड़वाते हो।"

यह सुन कर पति बहुत गुस्सा हो गया और कुछ और करने की बजाय वह बकरे पर चिल्लाया — "छोटे बकरे छोटे बकरे पैसे दो।" पर बकरा तो वहाँ बिल्कुल शान्त खड़ा रहा उसने कुछ भी नहीं किया।

इससे पति को और बहुत गुस्सा आ गया उसने पास पड़ी एक डंडी उठायी और उससे उसे पीटना शुरू कर दिया। सबसे पहले उसने उसके सिर पर मारा तो बस वह तो उसकी उसी मार से नीचे गिर पड़ा और मर गया।

गरीब भाई इससे बहुत नाराज था। वह बोला "मैं हवा के पास फिर जाऊँगा और उससे कहूँगा कि वह मुझे यह कैसा बेवकूफ बना रहा है।" उसने अपना टोप उठाया और फिर से हवा के पास चल दिया। बेचारी पत्नी उसके जाने बाद में घर ठीक किया और पति को बुरा भला कहा।

सो गरीब आदमी हवा के पास तीसरी बार आया और उससे पूछा — "क्या तुम मुझे बताओगे कि तुम वाकई में हवा हो या नहीं?"

हवा ने कहा — "इसका क्या मतलब है? तुम्हें क्या हो गया है?"

आदमी बोला — "मैं बताता हूँ कि इसका क्या मतलब है। तुमने मेरे साथ ऐसा मजाक क्यों किया। मेरी हँसी क्यों उड़वायी।"

बूढ़े बाबा ने फर्श पर लेटे लेटे ही अपना दूसरा कान उसकी तरफ किया और उससे पूछा — "मैंने तुम्हारी हँसी उड़वायी? तुमने उन चीज़ों को ठीक से पकड़ कर क्यों नहीं रखा जो मैंने तुम्हें दीं? तुमने मेरी बात क्यों नहीं सुनी जब मैंने तुमसे कहा था कि रास्ते में तुम किसी सराय में नहीं जाना? बोलो।"

आदमी घमंड से बोला — "तुम किस सराय की बात कर रहे हो? और जहाँ तक थैले और बकरे का सवाल है उन्होंने तो मेरे साथ छल किया। तुम मुझे कुछ और दो।"

हवा बोला — "तुम्हें किसी चीज़ को देने का क्या फायदा। तुम उसे मुझसे ले कर सराय ले जाओगे और फिर सराय वाले उसे वैसी चीज़ से बदल देंगे। मेरे ड्रम में से बारह लोग निकलो और इस शराबी को कुछ सीख दो ताकि इसका गला सूखा रह सके और यह अपने से बड़ों का कहा मान सके।"

तुरन्त ही उसके ड्रम में से बारह लोग निकल पड़े और उस आदमी को बहुत ज़ोर ज़ोर से मारने लगे। तब उस आदमी को पता चला कि यह सब मजाक नहीं था।

उसने हवा से दया की भीख मॉगी — "ओ बाबा मुझ पर दया करो। मुझे ज़िन्दा जाने दो। अब मैं तुम्हारे पास कभी नहीं आऊॅगा हालॉक मुझे अभी जजमैन्ट डे तक जीना है। अब जो तुम कहोगे मैं वही करूॅगा।"

हवा चिल्लाया — "ओ मेरे लोगों ड्रम में जाओ। और अब ओ आदमी सुनो। तुम बारह आदमियों का यह ड्रम ले जा सकते हो और इसे ले कर उन शापित ज्यूज़ के पास जाओ और अगर वे तुमको तुम्हारा थैला और बकरा वापस न करें तो तुम्हें मालूम है कि तुम्हें क्या कहना है।"

आदमी ने हवा को उसकी सलाह के लिये धन्यवाद दिया और वहॉ से वापस चला गया। वह सीधा उसी सराय में वापस आया जिसमें वह पहले ही दो बार आ चुका था। जब ज्यूज़ ने देखा कि इस बार उस आदमी के पास कुछ भी नहीं था तो उन्होंने उससे कहा — "ओ आदमी तुम यहॉ नहीं आओ क्योंकि आज हमारे पास शराब नहीं है।"

आदमी ने गुस्से में भर कर कहा — "तुम्हारी शराब किसे चाहिये?"

"तो फिर तुम यहॉ क्यों आये हो?"

"मैं तो अपनी वजह से आया हूॅ।"

"अपनी वजह से आया हूॅ इसका क्या मतलब है?"

आदमी गरजा — "इसका मतलब क्या है। मैं तुम्हें अभी समझाता हूँ। तुम मेरा थैला और बकरा वापस कर दो।"

"कौन सा थैला और कौन सा बकरा? तुम तो उन्हें खुद ही अपने साथ ले गये थे।"

"हाँ में ले तो गया था पर वे तो तुमने बदल दिये थे।"

"हमने बदल दिये थे – इसका क्या मतलब है। हम मजिस्ट्रेट के पास जायेंगे तब तुम हमसे इसके बारे में सुनोगे।"

आदमी बोला — "अगर तुम मजिस्ट्रेट के पास जाओगे तो तुम अपने बुरे समय को अपने आप ही बुलाओगे। इसलिये अच्छा तो यही है कि मेरी चीज़ें मुझे वापस कर दो।"

कह कर वह वहीं पास में पड़ी बैन्च पर बैठ गया। ज्यूज़ ने उसे उसके कन्धों से पकड़ा और चिल्ला कर उसे बाहर उठा कर फेंकने लगे — "ओ गधे। जा यहाँ से। अरे क्या कोई जानता है कि यह आदमी कहाँ से आया है? कोई शक नहीं कि यह कोई चोर उचक्का है।"

यह सुन कर आदमी से न रहा गया वह तुरन्त बोला — "मेरे ड्रम में से बारह लोग निकलो और इन शापित ज्यूज़ को ठीक से मारो ताकि इन्हें पता चले कि एक ईमानदार आदमी को सताने का क्या मतलब होता है।"

उसके यह कहते ही उसके ड्रम में से बारह लोग निकल आये और ज्यूज़ की ज़ोर ज़ोर से पिटायी करने लगे। तो ज्यूज़ चिल्लाने

लगे — "ओह ओह। प्यारे आदमी। हम तुम्हें वह सब दे देंगे जो तुम चाहते हो कम से कम तुम हमें ज़िन्दा तो छोड़ दो।"

आदमी बोला — "ठीक है पर अगली बार से ध्यान रखना कि किसी भले आदमी को धोखा नहीं देना।"

फिर उसने अपने लोगों को कहा — "ओ मेरे बारह लोगों ड्रम में वापस जाओ।" तुरन्त ही उसके वे लोग ज्यूज़ को ज़िन्दे से ज़्यादा मरा हुआ छोड़ कर ड्रम के अन्दर चले गये। उसके बाद उन्होंने उसे उसका थैला और बकरा दोनों वापस कर दिये।

आदमी भी अपनी दोनों चीज़ें ले कर घर वापस चल दिया। जब वह उन्हें ले कर घर वापस पहुँचा तो उसकी पत्नी और बच्चों ने उसे आता हुआ देखा तो माँ बोली — "तुम्हारे पिता जी थैले और बकरे के साथ वापस आ रहे हैं। अब हम क्या करें। हमने तो इन दोनों के साथ बड़ा बुरा समय बिताया है। हमारे पास तो कुछ भी नहीं बचा है। भगवान हम गरीबों की रक्षा करे। बच्चों तुम जा कर हर चीज़ छिपा दो।"

सो बच्चों ने सब कुछ छिपा कर रख दिया पर तभी पति ने दरवाजे पर आवाज लगायी "दरवाजा खोलो।"

पत्नी ने फिर कहा — "दरवाजा तुम अपने आप खोल लो।"

पति ने फिर से दरवाजा खोलने के लिये कहा पर उन्होंने उस पर कोई ध्यान नहीं दिया। आदमी को बड़ा आश्चर्य हुआ। अब यह मजाक काफी दूर चला गया था सो उसने अपने बारह लोगों को

आवाज दी "ड्रम में से निकलो और मेरी पत्नी को सिखाओ कि पति का आदर कैसे किया जाता है।"

सो बारह लोग ड्रम में से निकले और पत्नी को पति के पैरों में लिटा दिया और उसे बहुत मारा। पत्नी चिल्लायी — "ओ प्रिय मुझे इतना मत मारो। मैं जब तक मरूँगी तब तक तुमसे कभी गुस्सा नहीं होऊँगी। मैं वही करूँगी जो तुम कहोगे। बस मुझे पीटो नहीं।"

पति बोला — "इसका मतलब यह है कि मैंने तुमको तरीका सिखा दिया है। ओ बारह लोगों ड्रम के अन्दर जाओ।" और वे बारह लोग तुरन्त ही ड्रम के अन्दर जा छिपे। उसकी पत्नी अब ज़िन्दा कम और मरी हुई ज़्यादा लग रही थी।

तब पति ने कहा — "अब एक कपड़ा फर्श पर बिछाओ।"

पत्नी एक मक्खी की तरह से बिना आवाज किये वहाँ से चली गयी और बिना कुछ कहे एक कपड़ा फर्श पर बिछा दिया। तब पति ने कहा — "ओ छोटे बकरे ओ छोटे बकरे पैसे दो।" और बकरे ने पैसों के ढेर के ढेर लगा दिये।

पिता बोला — "बच्चों जितना चाहे उतना पैसा बटोर लो। और प्रिये तुम भी जितना चाहे उतना ले लो।" उन्हें दोबारा कहने की जरूरत नहीं पड़ी।

उसके बाद आदमी ने खूँटी पर टँगे थैले से कहा — "थैले थैले मुझे खाने के लिये खाना और शराब चाहिये।" फिर उसने उसे पकड़

कर हिलाया तो तुरन्त ही उसकी मेज पर बहुत सारे किस्म का मॉस और शराब लग गयी।

उसने अपनी पत्नी और बच्चों से कहा — "अब तुम जितना चाहो उतना खाना खाओ मेरे प्यारे बच्चो और प्रिये तुम भी। अब हमें खाने पीने और पैसों की कभी कोई कमी नहीं होगी। और हमें अब इनके लिये कोई काम भी नहीं करना पड़ेगा।"

सो अब गरीब भाई और उसकी पत्नी बहुत खुश थे हवा को धन्यवाद देते थकते नहीं थे। उनके पास ये थैला ओर बकरा आये बहुत दिन नहीं हुए थे कि वे लोग बहुत अमीर हो गये।

एक दिन पति ने पत्नी से कहा — "प्रिये मैं तुमसे एक बात कहना चाहता हूँ।"

"क्या।"

"मैं अपने भाई को अपने घर बुलाना वाहता हूँ और यह सब उसे दिखाना चाहता हूँ।"

पत्नी बोली — "बहुत अच्छा है। बुलाओ उसे। पर क्या तुम्हें मालूम है कि वह आयेगा।"

पति ने पूछा — "वह क्यों नहीं आयेगा। भगवान का धन्यवाद है कि अब हमारे पास सब कुछ है वह हमारे पास जब नहीं आया था जब हम गरीब थे और वह अमीर था। क्योंकि उस समय उसे यह कहने में शर्म आती थी कि मैं उसका भाई थे पर अब तो उसके पास हमसे ज़्यादा नहीं है।"

सो उन्होंने तैयारियॉ की और गरीब भाई अपने अमीर भाई को अपने घर न्यौता देने गया। गरीब भाई अपने अमीर भाई के पास पहुॅचा और बोला — "हलो भैया कैसे हो। भगवान आपकी सहायता करे।"

इस समय अमीर भाई अपनी गेहूॅ की बालियों में से गेहूॅ निकाल रहा था। उसने सिर उठा कर देखा तो अपने भाई को देख कर आश्चर्यचकित हो गया। वह हॅस कर बोला — "आओ तुम्हारा धन्यवाद है। कैसे हो। बैठो और बताओ कैसे आना हुआ।"

गरीब भाई बोला — "धन्यवाद मेरे भाई। मैं बैठूॅगा नहीं। मैं तुम्हें और तुम्हारी पत्नी को अपने घर न्यौता देने आया हूॅ।"

अमीर भाई बोला — "पर कैसे?"

गरीब भाई बोला — "मेरी पत्नी ने तुमसे विनती की है और मैं भी तुमसे विनती करता हूॅ कि कल तुम अपनी पत्नी के साथ हमारे घर खाना खाने आओ।"

अमीर भाई बोला — "हम जरूर आयेंगे चाहे तुम्हारे खाने में कुछ भी हो।"

सो अगले दिन अमीर भाई अपनी पत्नी के साथ अपने गरीब भाई के घर खाना खाने के लिये गया। उनको दूर से ही लगा कि उनका वह गरीब भाई अब अमीर हो गया है।

उधर गरीब भाई ने जब अपने अमीर भाई को अपने घर आते देखा तो वह बहुत खुश हुआ। उसकी जबान फिसल गयी और वह

उसे अपने घर की हर चीज़ जो कुछ भी उसके पास था दिखाने लगा।

अमीर भाई तो यह देख कर आश्चर्य में भर गया कि उसका गरीब भाई तो बहुत अच्छा हो रहा था। उससे रहा नहीं गया और उसने अपने गरीब भाई से पूछ ही लिया कि उसके पास यह सब आया कहॉ से।

गरीब भाई बोला — "बस यह मत पूछो। मैं तो अभी तुम्हें कुछ और भी दिखाने वाला हूॅ।" कह कर वह उसे अपने तॉबे के सिक्कों के पास ले गया और बोला "यह मेरे ओट्स[9] हैं।"

फिर वह उसे चॉदी के सिक्कों के पास ले गया और उससे कहा "यह मेरा बाजरा है जिसे मैं पीट पीट कर निकालता हूॅ।" फिर वह उसे अपने सोने के सिक्कों के पास ले गया और बोला "यह मेरा सबसे अच्छा गेहूॅ है।"

यह सुन कर तो अमीर भाई ने एक बार या दो बार नहीं बल्कि कई बार अपना सिर हिलाया और ये सब चीज़ें देख कर उनकी बहुत प्रशंसा की। वह बोला — "मेरे भाई। इतना सब तुमने कहॉ से पाया।"

[9] Oats – a kind of grain

गरीब भाई बोला — "अभी तो तुम्हें दिखाने के लिये मेरे पास और भी कुछ है। तुम यहाँ इस कुर्सी पर बैठो मैं तुम्हें सब कुछ दिखाता हूँ और उसके बारे में बताता हूँ।"

फिर उसने उन्हें बिठाया और अपना थैला खूँटी पर टाँग दिया और बोला — "थैले थैले मुझे खाने के लिये खाना और शराब चाहिये।" और तुरन्त ही उसकी मेज कई तरह के खानों और शराबों से भर गयी। उन सबने मिल कर खूब खाया खूब खाया और खूब पिया।

जब उन सबने पेट भर कर खा लिया और पी लिया गरीब भाई ने अपने बेटे से छोटे बकरे को लाने के लिये कहा। उसका बेटा बकरे को ले आया। अमीर भाई तो उसे देखते ही आश्चर्य में पड़ गया और सोचने लगा कि उसका गरीब भाई इस समय उसका क्या करने वाला है।

गरीब भाई बोला — "ओ छोटे बकरे मुझे पैसे दो।"

और छोटे बकरे ने पैसे देने शुरू कर दिये और फर्श पर ढेर के ढेर लग गये। गरीब भाई अपने अमीर भाई और उसकी पत्नी से कहा "उठा लो भैया उठा लो भाभी।" उन्होंने उसमें से जितना वे उठा सकते थे उठा लिये और उसकी बड़ी प्रशंसा की।

अमीर भाई ने कहा — "तुम्हारे पास तो बड़ी अच्छी अच्छी चीज़ें हैं। अगर मेरे पास भी ऐसा कुछ होता तो मुझे भी किसी चीज़ की कभी कोई कमी नहीं होती।"

फिर कुछ देर तक सोचने के बाद वह गरीब भाई से बोला — "तुम मुझे इन्हें बेच दो।

गरीब भाई बोला — "नहीं मैं इन्हें नहीं बेचूँगा।"

कुछ समय सोचने के बाद अमीर भाई ने फिर कहा — "मैं तुम्हें एक दर्जन बैल एक हल एक भूसा ले जाने वाली गाड़ी और एक भूसे वाला कॉटा दूँगा। इसके अलावा बोने के लिये बहुत सारा अनाज दूँगा। इस तरह तुम्हारे पास बहुत कुछ होगा। पर तुम मुझे बकरा और थैला दे दो।"

आखिरकार दोनों तैयार हो गये और गरीब भाई ने अपने अमीर भाई को उस सबके बदले में उसे अपना थैला और बकरा दे दिया। अब गरीब भाई रोज हल चलाने जाता पर वह अपने बैलों को न तो खाना खिला पाता और न पानी पिला पाता। एक दो दिन में उसके बैल खाना पानी के बिना जमीन पर लेट गये। उसने उन्हें उठाने की बहुत कोशिश की पर वे नहीं उठे।

फिर उसने उन्हें डंडे से मारा भी पर उनके मुँह से तो आवाज भी नहीं निकली। आदमी को आश्चर्य हुआ कि वे तो अब किसी काम के नहीं थे। वह तुरन्त ही अपने अमीर भाई के पास भागा गया साथ में वह अपना ड्रम ले जाना नहीं भूला।

जब गरीब भाई अमीर भाई के घर आया वह सीधा दरवाजे में से अन्दर आ गया और बोला — "हलो भाई। तुम तन्दुरुस्त रहो।"

अमीर भाई भी बोला — "तुम भी तन्दुरुस्त रहो भाई। तुम यहॉ क्यों आये हो? क्या तुम्हारा हल टूट गया है या फिर बैल मर गये हैं? हो सकता है कि तुमने उन्हें गन्दा पानी पिला दिया हो जिससे उनका खून जम गया हो और उन्हें सूजन आ गयी हो।"

गरीब भाई चिल्लाया — "तुम उन्हें ले लो मुझे नहीं मालूम कि तुम क्या कह रहे हो। मुझे तो बस इतना मालूम है कि मैंने उन्हें कई बार मारा जब तक मेरी बॉहें दर्द नहीं करने लगीं पर वे नहीं उठे। उन्होंने तो कोई आवाज भी नहीं निकाली। मैं उन पर इतना गुस्सा हुआ कि मैंने उन पर थूका भी। सो अब मैं तुम्हें बताने आ गया।

तुम मेरा थैला और बकरा मुझे वापस दे दो और अपने बैल मुझसे वापस ले लो क्योंकि वे मेरी सुनते ही नहीं।"

अमीर भाई चिल्लाया — "क्या? क्या मैं उन्हें वापस लूँगा? क्या मैंने वह सौदा एक दिन के लिये किया था? नहीं, मैंने तो वे चीज़ें तुम्हें एक बार और हमेशा के लिये दे दी थीं। मुझे कोई शक नहीं है कि तुमने उन्हें न खाना दिया और न पानी इसी लिये वे मर गये।"

गरीब भाई बोला — "मुझे नहीं मालूम था कि बैलों को खाना पानी भी देना होता है।"

अमीर भाई बोला — "क्या तुम्हें यह नहीं मालूम कि बैल भी खाना खाते हैं और पानी पीते हैं? जाओ तुम मेरे मकान से बाहर निकल जाओ और यहॉ फिर कभी नहीं आना नहीं तो मैं तुम्हें फॉसी चढ़ा दूँगा।"

गरीब भाई बोला — "वाह हम लोग कितने बड़े भले आदमी हैं। बस तुम मेरी चीज़ें मुझे वापस कर दो फिर मैं चला जाऊँगा।"

अमीर भाई बोला — "अच्छा हो अब तुम यहाँ बिल्कुल नहीं रुको। अब तुम अपने पैर हिलाओ और यहाँ से चलते बनो नहीं तो मैं तुम्हें बहुत मार मारूँगा।"

गरीब भाई बोला — "ऐसा मत बोलो बस तुम मेरा थैला और बकरा दे दो और मैं चला जाऊँगा।"

इस पर अमीर आदमी का गुस्सा बहुत बढ़ गया और वह आपे से बाहर हो गया। उसने अपनी पत्नी और बच्चों से कहा — "तुम लोग ऐसे खड़े खड़े क्या घूर रहे हो। क्या तुम इस आदमी को घर से बाहर निकालने में मेरी सहायता करने के लिये नहीं आ सकते?"

अब यह तो मजाक की बात नहीं थी सो गरीब भाई ने अपने बारह लोगों को बुलाया और उनसे कहा — "मेरे ड्रम में से बारह लोग निकलो और मेरे इस भाई और इसके परिवार को ठीक से मारो ताकि अगली बार ये किसी गरीब आदमी को अपने घर में से बाहर निकालने से पहले दो बार सोच सकें।"

यह सुन कर इसके ड्रम में से बहार आदमी निकल आये और उसके भाई के परिवार को मारने लगे और इन्हें मारते रहे जब तक कि अमीर भाई यह नहीं चिल्लाया कि "मुझे छोड़ दो। जो तुम्हें चाहिये वह तुम ले लो बस तुम मुझे ज़िन्दा छोड़ दो।"

इस पर गरीब भाई ने उन्हें अपने ड्रम के अन्दर भेज दिया। उसने अपने भाई से अपना थैला और बकरा लिया और अपने घर चला गया। इस घटना के बाद वे आराम से खुशी खुशी रहने लगे। अब वे न तो गेहूँ बोते न बाजरा फिर भी उनके पास खाने के लिये बहुत कुछ था।

मैं भी वहॉ था शराब और बीयर पीने के लिये। जो मेरे मुँह में नहीं समाया वह मेरी दाढ़ी से नीचे बहने लगा। तुम्हारे लिये यह एक कहानी होगी पर मेरे लिये तो यह ओवन में पकी केक थी और अगर यह केक मुझे भी खाने के लिये मिली तो यह तुम भी खा सकते थे।

3 खिड़की पर आवाजें[10]

एक बार एक पतझड़ में एक कुलीन आदमी शिकार के लिये गया। उसके साथ बहुत सारे शिकारी भी थे। सारा दिन वे लोग शिकार करते रहे करते रहे पर शाम तक भी उन्हें कोई शिकार नहीं मिला। आखिर रात हो गयी। अब बहुत ठंडा हो गया था बहुत ज़ोर से बारिश भी पड़ने लगी थी। कुलीन आदमी बुरी तरह से भीग गया था। ठंड से उसके दॉत किटकिटाने लगे थे।

वह हाथ मलते हुए बोला — "काश इस समय कोई गर्म मकान होता ठहरने के लिये, सफेद बिस्तर होता सोने के लिये, खट्टा क्वास[11] होती पीने के लिये तो कितना अच्छा होता। बस किसी बात की शिकायत ही नहीं रहती बल्कि हम लोग सारी रात कहानियॉ कहते सुनते।"

तभी जंगल की गहराइयों में एक रोशनी चमकी सो उसे देख कर सब उधर की तरफ चल दिये। लो वहॉ देखा तो वहॉ तो एक मकान खड़ा था। वे उस मकान में चले गये। वहॉ जा कर देखा तो एक मेज पर रोटी और खट्टी क्वास रखी हुई थी। मकान भी गर्म था और वहॉ बिछा बिस्तर भी सफेद था। वह सब कुछ वहॉ था जो उस कुलीन आदमी ने चाहा था।

[10] The Voices at the Window. (Tale No 3)
[11] Sour Kwas – a kind of drink in Ukraine.

कुलीन आदमी के पीछे पीछे सब शिकारी भी अन्दर चले गये। भगवान की प्रार्थना की, खाना खाया और सोने के लिये लेट गये। सब लोग तो सो गये पर उनमें से एक को नींद नहीं आयी।

आधी रात के करीब उसने एक अजीब सी आवाज सुनी। फिर खिड़की पर कोई आया और उसे एक आवाज सुनायी दी — "ओ कुत्ते के पिल्ले। तूने कहा था कि "अगर हमारे पास एक गर्म मकान होता, एक सफेद बिस्तर होता, मुलायम रोटी होती और खट्टी क्वास होती तो हमें कोई शिकायत नहीं होती बल्कि सारी रात हम कहानियॉ कहते सुनते बिताते।"

पर तू तो अपना वायदा ही भूल गया जबकि तेरे घर जाने के रास्ते में ही तुझे यह सब मिल गया। पर अब जब तू अपने घर जायेगा तो रास्ते में तुझे एक सेब का पेड़ मिलेगा जिस पर बहुत सारे सेब होंगे।

वहॉ तेरी उस सेब को खाने की इच्छा होगी। तू उस सेब को खायेगा तो तू फट जायेगा। और अगर तेरे शिकारियों में से किसी एक ने भी इसे सुना और तुझसे कहा तो वह घुटनों तक पत्थर का बन जायेगा।"

शिकारी ने यह सुना और सोचा "उफ़। यह मेरे साथ क्या हो रहा है।"

जब मुर्गा दूसरी बार बोला तो खिड़की पर कोई और आया और बोला — "ओ कुत्ते के पिल्ले। तूने कहा था "अगर हमारे पास एक

गर्म मकान होता, एक सफेद बिस्तर होता, मुलायम रोटी होती और खट्टी क्वास होती तो हमें कोई शिकायत नहीं होती बल्कि सारी रात हम कहानियॉ कहते सुनते बिताते।" पर तू तो अपना वायदा ही भूल गया।

अब जबकि तू अपने घर जायेगा तो रास्ते में सड़क के किनारे तुझे पानी का एक स्रोत मिलेगा। वहॉ तेरी पानी पीने की इच्छा होगी और तू वहॉ पानी पियेगा तो तू फट जायेगा। पर अगर तेरे इन शिकारियों में से कोई इस बात को सुन लेगा और तुझे बता देगा तो वह कमर तक पत्थर का हो जायेगा।"

शिकारी ने यह सुना और सोचा "उफ़। यह मेरे साथ क्या हो रहा है।"

मुर्गे की तीसरी बॉग पर उसने खिड़की से फिर कुछ सुना। उसने कहा "ओ कुत्ते के पिल्ले। तूने कहा था "अगर हमारे पास एक गर्म मकान होता, एक सफेद बिस्तर होता, मुलायम रोटी होती और खट्टी क्वास होती तो हमें कोई शिकायत नहीं होती बल्कि सारी रात हम कहानियॉ कहते सुनते बिताते।"

पर तू तो अपना वायदा ही भूल गया जबकि तेरे घर जाने के रास्ते में ही तुझे यह सब मिल गया। पर अब जबकि तू अपने घर जायेगा तो रास्ते में तुझे पंखों का एक बिस्तर मिलेगा जिस पर तुझे सोने की इच्छा होगी। तू उस पर सोयेगा और जैसे ही तू उस पर लेटेगा तू फट जायेगा। पर अगर तेरे इन शिकारियों में से कोई इस

बात को सुन लेगा और तुझे बता देगा तो वह गले तक पत्थर का हो जायेगा।"

शिकारी ने यह सुना और अपने साथियों को उठाया और उनसे कहा कि "उठो। अब यहॉ से चलने का समय हो गया।"

कुलीन आदमी बोला — "हॉ चलो अब चलते हैं।"

और वे सब वहॉ से चल दिये। वे अभी बहुत दूर नहीं गये थे कि उन्हें एक सेब का पेड़ मिला जिस पर बहुत सारे सेब लदे हुए थे। वे सेब इतने सुन्दर थे कि उन्हें शब्दों में नहीं कहा जा सकता। उनको देख कर कुलीन आदमी का मन उन्हें खाने का कर आया। उसको लगा कि या तो वह वे सेब खायेगा नहीं तो मर जायेगा।

पर उस जागे हुए शिकारी ने दौड़ कर उस सेब के पेड़ को काट दिया। जैसे ही उसने वह पेड़ काटा वह पूरा पेड़ राख हो गया। शिकारी ऐसा कर के आगे की तरफ भाग गया और छिप गया।

वे कुछ दूर आगे गये तो रास्ते में सड़क के किनारे उन्हें मीठे पानी का एक स्रोत दिखायी दिया। वह पानी इतना शुद्ध और साफ था कि कुलीन आदमी का मन किया कि वह उस पानी को पी ले नहीं तो वह मर जायेगा।

पर शिकारी तेज़ी से दौड़ा और अपनी तलवार से उस पानी को काट दिया। उसके पानी काटते ही वह पानी खून में बदल गया। कुलीन आदमी बोला — "अरे इसकी बजाय तो तूने मुझे ही काट

दिया होता।" पर तब तक तो शिकारी दौड़ कर आगे निकल गया और छिप गया।

वे लोग और आगे बढ़े तो रास्ते में उन्हें एक सोने का पलंग दिखायी दिया। उस पर सारे में सफेद पंख बिछे हुए थे। वे पंख इतने सफेद कोमल थे कि उसे देख कर कुलीन आदमी का मन किया कि वह उस पर लेट जाये पर जैसे ही वह उस पर बैठने वाला था कि पीछे से उस शिकारी ने उस पलंग पर अपनी तलवार मार कर उसे तोड़ दिया। टूटते ही वह पलंग कोयले में बदल गया।

कुलीन आदमी चिल्लाया "अरे तूने इसकी बजाय मुझे ही मार दिया होता।" पर वह शिकारी दौड़ कर आगे निकल गया और छिप गया।

जब वे सब घर पहुँचे तो कुलीन आदमी ने उस शिकारी को अपने सामने लाने के लिये कहा। जब वह सामने आ गया तो कुलीन आदमी चिल्लाया — "ओ शैतान के बच्चे। यह तूने क्या किया। मुझे तुझे मार देना चाहिये।"

पर शिकारी बोला — "इस ऑगन में किसी ऐसी घोड़ी को लाने के लिये कहिये जो किसी काम की न हो।"

सो ऐसी एक घोड़ी को लाया गया और वह शिकारी उस पर बैठ गया और बोला — "मालिक। जब मैं रात को लेट गया तो आधी रात को कोई चीज़ खिड़की पर आयी और बोली "ओ कुत्ते के पिल्ले। तूने कहा था कि "अगर हमारे पास एक गर्म मकान होता,

एक सफेद बिस्तर होता, मुलायम रोटी होती और खट्टी क्वास होती तो हमें कोई शिकायत नहीं होती बल्कि सारी रात हम कहानियॉ कहते सुनते बिताते।"

पर तू तो अपना वायदा ही भूल गया जबकि तेरे घर जाने के रास्ते में ही तुझे यह सब मिल गया। पर अब जब तू अपने घर जायेगा तो रास्ते में तुझे एक सेब का पेड़ मिलेगा जिस पर बहुत सारे सेब होंगे।

वहॉ तेरी उस सेब को खाने की इच्छा होगी। तू उस सेब को खायेगा तो तू फट जायेगा। और अगर तेरे शिकारियों में से किसी एक ने भी इसे सुना और तुझसे कहा तो वह घुटनों तक पत्थर का बन जायेगा।"

शिकारी जब यह बात यहॉ तक कह चुका तो वह घोड़ा अपने घुटनों तक पत्थर का बन चुका था।

इसके बाद शिकारी ने फिर से बोलना शुरू किया — "मुर्गे की दूसरी बॉग के साथ मैंने फिर एक आवाज सुनी। उसने भी यही कहा था जो पहली वाली आवाज ने कहा था और भविष्यवाणी की कि रास्ते में सड़क के किनारे उन्हें मीठे पानी का एक स्रोत दिखायी देगा।

उसका पानी इतना शुद्ध और साफ होगा कि कुलीन आदमी की वहॉ पानी पीने की इच्छा होगी पर अगर वह वहॉ पानी पियेगा तो वह फट जायेगा। पर अगर तेरे इन शिकारियों में से कोई इस बात

को सुन लेगा और तुझे बता देगा तो वह कमर तक पत्थर का हो जायेगा।"

शिकारी जब यह बात यहाँ तक कह चुका तो उसका घोड़ा अपने घुटनों तक पत्थर का बन चुका था।

शिकारी ने फिर से बोलना शुरू किया। मुर्गे की दूसरी बॉग पर कोई और खिड़की पर आया और उसने भी वही कहा जो पहली दो आवाजों ने कहा था और फिर उसने भविष्यवाणी की अब जब तू अपने घर जायेगा तो रास्ते में सड़क के किनारे तुझे पानी का एक स्रोत मिलेगा।

वहाँ तेरी पानी पीने की इच्छा होगी और तू वहाँ पानी पियेगा तो तू फट जायेगा। पर अगर तेरे इन शिकारियों में से कोई इस बात को सुन लेगा और तुझे बता देगा तो वह कमर तक पत्थर का हो जायेगा।"

शिकारी जब यह बात यहाँ तक कह चुका तो उसका घोड़ा अपनी कमर तक पत्थर का बन चुका था।

शिकारी ने फिर से बोलना शुरू किया। मुर्गे की तीसरी बॉग पर कोई और खिड़की पर आया और उसने भी वही कहा जो पहली आवाजों ने कहा था और फिर उसने भविष्यवाणी की कि रास्ते में तुझे एक पलंग मिलेगा जिस पर सफेद पंख बिछे होंगे और वहाँ पहुँच कर तेरी उस पर सोने की इच्छा होगी।

पर अगर तू उस पलंग पर लेटने की कोशिश करेगा तो तू फट जायेगा। पर अगर तेरे इन शिकारियों में से कोई इस बात को सुन लेगा और तुझे बता देगा तो वह गर्दन तक पत्थर का हो जायेगा।"

शिकारी अपनी बात पूरी करने के साथ ही घोड़े पर से कूद चुका था। उसके बाद ही उसका घोड़ा अपनी गर्दन तक पत्थर का बन चुका था।

"ओ मेरे मालिक। इसी लिये मैंने वह किया जो मुझे करना चाहिये था। मैं आपसे विनती करता हूँ कि आप मुझे इसके लिये माफ कर दें।"

4 छोटे ज़ार नोविश्नी, झूठी बहिन और वफादार जानवरों की कहानी[12]

एक बार की बात है कि किसी साम्राज्य के किसी राज्य में एक ज़ार रहता था। उसके कोई बच्चा नहीं था। एक दिन वह खाना खरीदने के लिये बाजार गया। हालॉकि वह एक ज़ार जरूर था पर उसका स्वभाव बहुत ही नीच किस्म का था। वह अपनी खरीदारी अपने आप ही करता था। वही उसने यहॉ भी किया।

उसने थोड़ी सा नमकीन मछली ली और घर चला गया। जब वह रास्ते में था तो उसे बहुत ज़ोर की प्यास लगी तो वह एक पहाड़ की तरफ मुड़ गया जहॉ वह जानता था, जैसे कि उससे पहले उसका पिता जानता था, कि वहॉ एक साफ मीठे पानी का स्रोत है। वह इतना प्यासा था कि वह बस वहॉ बिना अपने ऊपर क्रास बनाये पानी पीने के लिये लेट सा गया।[13]

बस शैतान उसके ऊपर बैठ गया और उसने उसे उसकी दाढ़ी से पकड़ लिया। ज़ार बेचारा डर गया और चिल्लाया "मुझे जाने दो। मुझे जाने दो।" पर शैतान ने उसे और सख्ती से पकड़ लिया और बोला "मैं तुझे बिल्कुल नहीं जाने दूँगा।"

[12] Story of Little Tzar, the False Sister and the Faithful Beasts. (Tale No 4)

[13] It seems that when one wants to drink water from a spring he must make cross on his/her chest first then he should drink water from it, otherwise some bad soul or Satan may control him.

तो ज़ार ने बहुत ही नर्म शब्दों में उससे कहा कि "तुम मुझसे कुछ भी माँग लो पर मुझे छोड़ दो।"

शैतान बोला — "ठीक है तब तुम मुझे ऐसा कुछ दे दो जो तुम्हारे घर में हो तब मैं तुम्हें जाने दूँगा।"

ज़ार बोला — "अच्छा मुझे सोचने दो कि मेरे पास क्या क्या है। हाँ मुझे मालूम है कि मेरे घर में मेरे पास आठ घोड़े हैं जैसे तुमने पहले कभी कहीं नहीं देखे होंगे। मैं अपने नौकर को उन्हें तुरन्त ही यहाँ इस स्रोत के पास लाने के लिये कह सकता हूँ। तुम उन्हें ले लो।"

शैतान बोला — "मैं उन्हें नहीं लूँगा।" और उसने ज़ार की दाढ़ी और कस कर पकड़ ली।

ज़ार फिर बोला — "ठीक है। तब सुनो। मेरे पास आठ बैल हैं जिन्होंने अभी तक मेरे लिये हल नहीं चलाया है या कहो कि एक दिन भी मेरे लिये काम नहीं किया है। मैं उन्हें यहाँ बुला लेता हूँ। मैं उन्हें एक बार फिर से आँख भर कर देख लूँगा। तब मैं उन्हें तुम्हारे साथ उन्हें चरने भेज दूँगा और फिर तुम उन्हें ले जाना।"

शैतान बोला — "नहीं मैं उनको भी नहीं लूँगा।"

इस तरह ज़ार एक एक कर के अपनी बहुत सारी बहुमूल्य चीज़ों के नाम गिनाता चला गया जो कुछ भी उसके पास था पर शैतान हर एक को मना करता चला गया और उसकी दाढ़ी को और ज़्यादा कस कर पकड़ता ही चला गया।

जब ज़ार ने देखा कि शैतान उससे उसके पास जो कुछ भी है उनमें से कुछ भी नहीं ले रहा है तो आखीर में उसने शैतान से कहा — "देखो। अब मेरे पास केवल एक पत्नी बची है जो इतनी सुन्दर है जैसी तुम्हें दुनियॉ भर में कहीं नहीं मिलेगी। तुम उसे ले लो और मुझे जाने दो।"

शैतान फिर बोला — "नहीं मैं उसे भी नहीं लूँगा।"

अब तो ज़ार बहुत उलझन में था। वह सोचने लगा — "अब मैं क्या करूँ यह तो किसी चीज़ को ले ही नहीं रहा। मैंने तो इसे अपनी प्यारी पत्नी भी इसे दे दी और यह उसे भी लेना नहीं चाहता।"

तब शैतान बोला — "वायदा करो कि जो कुछ भी तुम्हारे घर पर तुम्हारा इन्तजार कर रहा होगा वही तुम मुझे दे दोगे। और मैं तुम्हें जाने दूँगा।"

अपनी पत्नी के आगे ज़ार को और कुछ नहीं सूझा तो वह शैतान की इसी बात पर राजी हो गया और शैतान ने उसे छोड़ दिया।

पर जब ज़ार घर से दूर था तब ज़ार की पत्नी ने एक छोटे से "ज़ारेवको" और एक छोटी सी ज़ारेवना[14] को जन्म दिया था। वे दिनों से नहीं, यहॉ तक कि घंटों से भी नहीं बल्कि मिनटों से बड़े हो रहे थे। वे इतने प्यारे बच्चे थे जैसे पहले कभी किसी ने देखे नहीं।

[14] Tzarevko means Tzar's son and Tzarevna means Tzar's daughter

जब ज़ार घर आ रहा था तो उसकी पत्नी ने उसे दूर से आते देख लिया था तो बहुत खुशी खुशी वह अपने बच्चों को गोद में लिये हुए ज़ार से मिलने के लिये बाहर गयी। पर जैसे ही उसने अपने बच्चों को देखा तो वह तो रो पड़ा।

ज़ार की पत्नी बोली — "नहीं प्रिय नहीं। तुम ऐसे क्यों रोते हो? या फिर तुम यह सोच कर इतने खुश हो कि इतने अच्छे बच्चे तुम्हारे घर में पैदा हुए हैं इस बात की खुशी में तुम्हें ऑसू के अलावा कोई शब्द ही नहीं मिले।"

ज़ार बोला — "नहीं प्रिये। जब मैं बाजार से घर वापस आ रहा था तो मुझे बहुत ज़ोर की प्यास लगी तो मैं एक पहाड़ की तरफ मुड़ गया जहॉ पानी था और जो जगह मेरे पिता और मुझे मालूम थी। मुझे कुछ ऐसा लगा कि वहॉ एक पानी का स्रोत है।

दूर से तो वह मुझे सूखा सा लगा पर पास जा कर देखा तो वहॉ तो बहुत पानी था। तो मैंने सोचा कि यहॉ पानी पी लिया जाये और मैं उसमें से पानी पीने के लिये झुक गया।

पर लो यह क्या। वहॉ मुझे एक शैतान ने मुझे मेरी दाढ़ी से पकड़ लिया और वह मुझे छोड़े नहीं। मैंने उससे बहुत विनती की पर उसने मुझे नहीं छोड़ा बल्कि और कस कर पकड़ लिया।

वह बोला — "तुम्हारे घर पर जो है वह तुम मुझे दो नहीं तो मैं तुम्हें कभी नहीं छोड़ूँगा।

मैंने उससे कहा "तुम घोड़े ले लो।"

उसने कहा "मुझे तुम्हारे घोड़े नहीं चाहिये।"
मैंने कहा "मेरे पास बैल हैं।"
तो उसने कहा "मुझे तुम्हारे बैल भी नहीं चाहिये।"
मैंने कहा "मेरी बहुत सुन्दर पत्नी है।"
उसने कहा "मुझे तुम्हारी पत्नी भी नहीं चाहिये।"

तब मैंने उससे कहा कि "जो कुछ भी मुझे घर पर मिलेगा मैं तुम्हें वह दे दूँगा। जब मैं यहाँ पहुँचा तो मुझे तो इस बात का अन्दाजा ही नहीं था कि भगवान ने मेरे ऊपर इस तरह कृपा की है। प्रिये इससे पहले कि वह यहाँ आ कर इन्हें ले जाये हम इन्हें दफ़ना दें।"

"नहीं नहीं प्रिय नहीं। इससे तो अच्छा है कि हम इन्हें कहीं छिपा देते हैं। हम अपनी झोंपड़ी[15] के पास में एक गड्ढा खोद लेते हैं हम इन्हें वहीं छिपा देंगे।"

सो उन्होंने एक गड्ढा खोदा और अपने बच्चों को वहाँ छिपा दिया। उन्होंने उनको रोटी और पानी भी वहीं दे दिया। फिर उन्होंने उसे ढक कर सपाट कर दिया और अपनी छोटी सी झोंपड़ी में आ गये।

इसी समय शैतान ने एक साँप का रूप रखा और उड़ता हुआ बच्चों की खोज में वहाँ तक आ पहुँचा। वह उनकी झोंपड़ी के चारों तरफ ऊपर नीचे उड़ता रहा। पर उसे कुछ दिखायी महीं दिया।

[15] In those days there were no mansions for the kings so they also used to live in huts.

आखिर वह ॲगीठी से चिल्ला कर बोला — "ॲगीठी ओ ॲगीठी। ज़ार ने अपने बच्चे कहॉ छिपा रखे हैं?"

ॲगीठी बोली — "ज़ार तो मेरा बहुत अच्छा मालिक रहा है। उसने मेरे अन्दर बहुत सारी लकड़ियॉ जलायी हुई हैं। मैं उसकी रक्षा करूॅगी।"

जब उसे ॲगीठी से बच्चों का पता नहीं चला तो उसने भट्टी की झाड़ू से पूछा — "भट्टी की झाड़ू ओ भट्टी की झाड़ू। ज़ार ने अपने बच्चे कहॉ छिपा रखे हैं?"

भट्टी की झाड़ू बोली — "ज़ार मेरे लिये हमेशा ही एक अच्छा मालिक रहा है क्योंकि वह हमेशा ही मुझसे गर्म गर्म राख साफ करता रहा है। मैं तो उसी की तरफ हूॅ।"

इस तरह से शैतान भट्टी की झाड़ू से भी बच्चों का कोई अता पता न निकलवा सका तो उसने कुल्हाड़ी से पूछा — "कुल्हाड़ी ओ कुल्हाड़ी। ज़ार ने अपने बच्चे कहॉ छिपा रखे हैं?"

कुल्हाड़ी बोली — "ज़ार तो मेरा हमेशा से ही बहुत अच्छा मालिक रहा है। वह मुझे हमेशा से अन्दर लेटने की जगह देता है इसलिये मैं उसे परेशान नहीं कर सकती।"

शैतान फिर एक बरमी[16] के पास गया और उससे पूछा — "बरमी ओ बरमी। बता तो ज़ार ने अपने बच्चे कहॉ छिपा रखे हैं?"

[16] Translated from the word "Gimlet". Gimlet is used to make a hole in the wall.

बरमी बोली — "ज़ार हमेशा से ही मेरे लिये एक बहुत अच्छा मालिक रहा है। वह मुझे छोटे छोटे छेद बनाने के काम में लाता है और फिर मुझे आराम करने देता है सो मैं भी उसे आराम करने दूँगी।"

सॉप शैतान बरमी से बोला — "सो ज़ार तुम्हारा अच्छा मालिक है तो मैं तो केवल इतना कह सकता हूँ कि अगर वह एक अच्छा मालिक है, जैसा कि तुम कहती हो, तो वह तुम्हारे सिर पर हथौड़े क्यों मारता है?"

बरमी बोली — "यह तो तुम ठीक कहते हो। यह तो मैंने कभी सोचा ही नहीं। तुम मुझे ले सकते हो अगर तुम चाहो तो। मुझे तुम इस झोंपड़ी की चोटी से खींच लो और फिर दलदल जमीन में जहॉ मैं गिर पड़ूँ वहॉ तुम खोदो।"

शैतान ने ऐसा ही किया। उसने वहीं खोदना शुरू किया जहॉ वह बरमी गिर पड़ी थी और वहॉ से बच्चों को निकाल लिया। वे तो बहुत जल्दी जल्दी बढ़ रहे थे सो अब वे बच्चे नहीं थे। अब तो वे शाही नौजवान और सुन्दर राजकुमारी बन गये थे। सॉप ने उन्हें उठा लिया और अपने साथ ले गया।

पर वे बड़े थे और भारी थे सो सॉप उन्हें ले जाते ले जाते थक गया और एक जगह आराम करने के लिये लेट गया। लेटते ही वह सो गया। ज़ारेवना उसके सिर पर बैठ गयी और ज़ारेवको ज़ारेवना के पास बैठ गया।

तभी एक घोड़ा दौड़ता हुआ वहॉ आया। वह दौड़ता हुआ सीधा उन्हीं के पास आया और बोला — "हलो छोटे ज़ार नोविश्नी। क्या तुम यहॉ अपनी इच्छा से हो या फिर अपनी इच्छा के विरुद्ध हो?"

छोटा ज़ार नोविश्नी बोला — "हम लोग यहॉ अपनी इच्छा के विरुद्ध हैं अपनी इच्छा से नहीं।"

घोड़ा बोला — "तब तुम दोनों मेरी पीठ पर बैठ जाओ।"

सो वे दोनों उस घोड़े की पीठ पर बैठ गये और घोड़ा उन दोनों को ले कर कुलॉचे मारता हुआ दौड़ गया क्योंकि सॉप तो इस सारे समय सोता ही रहा। घोड़ा उन्हें बहुत दूर तक ले गया।

इस बीच सॉप की ऑख खुल गयी। उसने अपने चारों तरफ देखा तो उसे कोई दिखायी नहीं दिया। फिर वह अपनी उस जगह से बाहर निकला जहॉ वह सो रहा था। बाहर निकल कर उसे दिखायी दिया कि वे लोग तो दूर जा रहे थे सो वह उनके पीछे चल दिया।

उसने उन्हें जल्दी ही पकड़ लिया। सॉप को आते देख कर छोटे ज़ार नोविश्नी ने अपने घोड़े से कहा — "ओ घोड़े। अभी कितना गर्म है। अब यह तुम्हारे और हमारे हाथ में है।"

घोड़े की पूँछ में वास्तव में एक अंगारा लग गया था क्योंकि सॉप उसके पीछे था और बहुत ज़ोर से आग की तरह से जल रहा था।

घोड़े ने देखा कि अब वह और कुछ नहीं कर सकता सो उसने एक आखिरी अंगड़ाई ली और मर गया। अब राजकुमार और राजकुमारी अकेले रह गये थे।

सॉप उनके पास आते हुए बोला — "अब तुम क्या सुन रहे हो? क्या तुम्हें पता नहीं कि मैं ही तुम्हारा पिता और ज़ार हूॅ और तुमको ले जाने का अधिकार भी केवल मेरा ही है?"

"ओह आदरणीय पिता जी। अब हम किसी और की बिल्कुल नहीं सुनेंगे।"

सॉप बोला — "ठीक है। इस बार मैं तुम्हें माफ करता हूॅ पर आगे से तुम ऐसा कभी नहीं करना।"

सॉप उनको ले कर फिर से उड़ गया। पर वह फिर से थक गया तो उसने उन्हें फिर से नीचे उतार दिया और आराम करने के लिये लेट गया और सो गया। ज़ारेवना उसके सिर के ऊपर बैठ गयी और ज़ारेवको उसके पास ही बैठ गया।

कुछ ही देर में एक भौंरा उड़ता हुआ उनके पास आया और छोटे ज़ार से बोला — "हलो छोटे ज़ार नोविश्नी कैसे हो?"

छोटा ज़ार बोला — "हलो छोटे भौंरे। तुम कैसे हो?"

भौंरे ने पूछा — "हलो छोटे ज़ार नोविश्नी। क्या तुम यहॉ अपनी इच्छा से हो या फिर अपनी इच्छा के विरुद्ध हो?"

छोटा ज़ार नोविश्नी बोला — "हम लोग यहॉ अपनी इच्छा के विरुद्ध हैं अपनी इच्छा से नहीं जैसा कि तुम देख सकते हो।"

भौंरा बोला — "तब तुम दोनों मेरी पीठ पर बैठ जाओ मैं तुम्हें यहॉ से ले चलता हूॅ।"

"लेकिन प्यारे भौंरे। जब एक घोड़ा हमारी जान नहीं बचा सका तो तुम कैसे बचा पाओगे।"

भौंरा बोला — "मैं नहीं जानता जब तक कि मैं तुम्हें यहॉ से ले न जाऊॅ। अगर मैं तुम्हें बचा नहीं सका तो मैं तुम्हें नीचे गिरा दूॅगा।"

छोटा ज़ार बोला — "ठीक है फिर हम कोशिश कर के देखते हैं। क्योंकि हम दोनों को तो मरना ही है पर तुम शायद हमें किसी तरह से बचा सको।" सो वे एक दूसरे के गले मिले और भौंरे पर बैठ गये और भौंरा उनको उड़ा कर ले गया।

इधर जब सॉप की ऑख खुली तो उसे वहॉ कोई दिखायी नहीं दिया। तब वह वहॉ से बाहर निकला जहॉ वह सो रहा था। बाहर निकलने पर उसने देखा कि वे लोग दूर जा रहे थे। उन्हें इतनी दूर जाते देख कर वह अपनी पूरी गति से उनके पीछे भागा।

छोटा ज़ार नोविश्नी भौंरे से बोला — "अफसोस। यहॉ कितना गर्म हो रहा है। ऐसे तो हम तीनों मर जायेंगे।" यह सुन कर भौंरे ने अपने पंख घुमाये उनको नीचे उतारा और खुद वहॉ से उड़ गया।

तब सॉप उड़ता हुआ वहॉ आया और अपना मुॅह खोले उनके ऊपर गिर पड़ा और बोला — "आहा। तुम अब फिर परेशानी में पड़ गये हो। क्या मैंने तुमसे कहा नहीं था कि तुम बस मेरी सुनो और किसी और की नहीं।" यह सुन कर वे रोने लगे और उनसे विनती करने लगे — "हम अबसे आपकी ही सुनेंगे किसी और की नहीं।"

वे उसके सामने इतना रोये और इतनी विनती की कि उसे उसको माफ करना ही पड़ा। सो उसने उन्हें फिर उठाया और फिर से उन्हें ले चला। पर कुछ दूर ले जा कर वह फिर थक गया सो वह फिर से आराम करने के लिये लेट गया और सो गया।

तभी एक बैल वहॉ आया। छोटे ज़ार से बोला — "हलो छोटे ज़ार नोविश्नी कैसे हो?"

छोटा ज़ार बोला — "हलो बैल। तुम कैसे हो?"

बैल ने पूछा — "हलो छोटे ज़ार नोविश्नी। क्या तुम यहॉ अपनी इच्छा से हो या फिर अपनी इच्छा के विरुद्ध हो?"

छोटा ज़ार नोविश्नी बोला — "हम लोग यहॉ अपनी इच्छा के विरुद्ध हैं अपनी इच्छा से नहीं जैसा कि तुम देख सकते हो।"

बैल बोला — "तब तुम दोनों मेरी पीठ पर बैठ जाओ मैं तुम्हें यहॉ से ले चलता हूँ।"

"लेकिन प्यारे बैल। जब एक घोड़ा और एक भौंरा हमारी जान नहीं बचा सके तो तुम कैसे बचा पाओगे।"

बैल ने उनसे कहा — "यह बेकार की बात है। तुम मेरे ऊपर बैठ जाओ मैं तुम्हें यहॉ से ले चलूँगा।"

वे बोले — "चलो हमें तो एक बार मरना ही है।"

और बैल उन्हें अपनी पीठ पर बिठा कर चल दिया। हर कुछ देर के बाद वह कूद जाता जिससे वे बस गिरने से बच जाते।

उनके जाने के बाद सॉप की ऑख खुली तो सॉप को वे फिर से दिखायी नहीं दिये तो वह फिर से बहुत गुस्सा हो गया। अपने सोने की जगह से वह बाहर निकला तब उसने देखा कि वे तो बहुत दूर निकल गये हैं। वह तुरन्त ही जंगलों के ऊपर से उड़ा और बहुत तेज़ उड़ा।

छोटा ज़ार बोला — "ओ बैल। कितना गर्म हो रहा है। इतनी गर्मी से तो तुम भी मर जाओगे और हम भी मर जायेंगे।"

इस पर बैल बोला — "तुम मेरे बॉये कान में देखो तो उसमें तुम्हें एक घोड़े का कंघा मिल जायेगा। उसे तुम वहॉ से खींच कर निकाल लो और उसे अपने पीछे फेंक दो।"

छोटे ज़ार ने ऐसा ही किया। उसने बैल के बॉये कान में से घोड़े वाला कंघा निकाला और उसे अपने पीछे फेंक दिया। तुरन्त ही उसके पीछे एक बहुत ऊॅचा और बहुत ही घना जंगल खड़ा हो गया पर बैल अपनी सामान्य गति से भागता रहा। थोड़ी थोड़ी देर में वह कूदता रहा जिससे वे बेचारे गिरते गिरते बचते रहे।

सॉप किसी तरह अपना रास्ता बनाता हुआ वहॉ से बाहर निकला और फिर से उनका पीछा करने लगा तो छोटे ज़ार फिर से बोला — "ओ बैल। कितना गर्म हो रहा है। इतनी गर्मी से तो तुम भी मर जाओगे और हम भी मर जायेंगे।"

इस पर बैल बोला — "तुम मेरे दॉये कान में देखो तो वहॉ तुम्हें एक ब्रश मिलेगा। तुम उसे निकाल लो और उसे अपने पीछे फेंक दो।"

छोटे ज़ार ने ऐसा ही किया। उसने उसके दॉये कान में से एक ब्रश निकाला और उसे अपने पीछे फेंक दिया। उससे फिर एक जंगल बन गया जो इतना ही घना था जैसा कि एक ब्रश होता है।

सॉप वहॉ तक आया और उसने उस जंगल को चबाना शुरू किया। चबा चबा कर सॉप अपना रास्ता बनाता हुआ इसमें से बाहर निकला और उसने फिर से पीछा करना शुरू किया।

बैल अपनी सामान्य गति से हर कुछ दूरी पर कुदकता हुआ चला जा रहा था। पर जब सॉप जंगल को चबा कर आगे बढ़ा और उनके पीछे भागा तो छोटे ज़ार ने फिर बैल से कहा कि उसे बहुत गर्म लग रहा है और वह तो मरने वाला हो रहा है।

बैल अब समुद्र के पास आता जा रहा था। उसने कहा — "तुम मेरे दॉये कान में से एक रूमाल निकाल लो और उसे मेरे सामने फेंक दो।" सो उसने उसके दॉये कान में से रूमाल निकाल कर अपने सामने हिला दिया तो उससे एक पुल बन गया। उस पुल से हो कर वे जल्दी से दौड़ गये। जैसे ही उन्होंने पुल पार किया वैसे ही सॉप समुद्र के पास आ पहुॅचा।

बैल ने छोटे ज़ार से कहा — "अब उस रूमाल को मेरे पीछे हिला दो।"

तो उसने उसे अपने पीछे हिला दिया जिससे वह पुल दोगुना हो गया। उसको पार करने के बाद उसने उसे अपने आगे हिला दिया तो वह उनके और आगे तक चला गया। सॉप समुद्र के किनारे तक तो आया पर वहॉ उसे रुक जाना पड़ा क्योंकि आगे जाने उसके पास कोई साधन नहीं था। इस तरह से वे तीनों समुद्र पार कर के उसके दूसरी पार चले गये और सॉप समुद्र के इसी ओर रह गया।

बैल बोला — "मैं तुम्हें समुद्र के पास ही एक मकान है वहॉ ले जाऊॅगा तुम लोग उसी मकान में रहना। वहॉ तुम मुझे मार देना।"

यह सुन कर तो दोनों भाई बहिन बहुत दुखी हुए और रो पड़े। छोटा ज़ार बोला — "हम तुम्हें कैसे मार सकते हैं। तुम तो हमारे छोटे पिता हो। तुमने हमें मौत से बचाया है।"

बैल बोला — "नहीं तुम लोग रोओ नहीं पर तुम्हें मुझे मारना ही पड़ेगा। मेरे शरीर का एक चौथाई हिस्सा तुम भट्टी के ऊपर टॉग देना। दूसरा चौथाई हिस्सा जमीन पर एक कोने में रख देना।

तीसरा चौथाई तुम घर के दरवाजे के पास कोने में रखना और आखिरी चौथाई हिस्सा देहरी के चारों तरफ रखना। इस तरह मेरे शरीर के चार हिस्से घर के चारों तरफ रखे रहेंगे।"

सो वे लोग उसे उस झोंपड़ी में ले गये और उसे मार डाला। मार कर उसके चारों हिस्से जैसे उसने बताये थे वैसे ही रख दिये। उसके बाद वे सो गये। आधी रात को ज़ारेवको की ऑख खुली और उसने दॉये कोने की तरफ देखा तो वहॉ उसे एक बहुत सुन्दर घोड़ा दिखायी

दिया। वह घोड़ा इतना बढ़िया था कि उससे रहा नहीं गया और वह उस पर सवार हो गया।

देहरी वाले कोने में एक तलवार पड़ी थी तीसरे कोने में एक कुत्ता था जिसका नाम था प्रोशियस। चौथे कोने जो भट्टी के पास था उसमें भी एक कुत्ता खड़ा था जिसका नाम था नैड्विगा।[17]

छोटा ज़ार वहॉ से चले जाने का बहुत इच्छुक था। उसने अपनी छोटी बहिन को उठाया — "उठो बहिन उठो। भगवान की हमारे ऊपर दया है। उठो बहिन उठो और भगवान की प्रार्थना करो।"

सो वे उठे और उन्होंने भगवान की प्रार्थना की। जब तक उन्होंने भगवान की प्रार्थना की तब तक सुबह हो चुकी थी। वह घोड़े पर बैठा कुत्तों को अपने साथ लिया ताकि वे जो शिकार करें उन पर वे लोग ज़िन्दा रह सकें और वहॉ से चल दिया।

इस तरह से वे उसी झोंपड़ी में रहते रहे। एक दिन बहिन अपने पहनने के कपड़े और बिस्तर की चादर धोने के लिये समुद्र के किनारे गयी कि सॉप वहॉ आया और उससे पूछा — "तुमने यह समुद्र कैसे पार किया?"

उसकी बहिन बोली — "यह समुद्र हमने इस तरह से पार किया कि मेरे भाई के पास एक रूमाल है जिसे जब वह अपने पीछे हिलाता है तो वह एक पुल बना देता है।"

[17] Both the dogs' names were Prodius and Nadviga

सॉप बोला — "मैं कहता हूँ कि तुम उससे यह रूमाल मॉगो। उससे कहना कि तुम उसे धोना चाहती हो और फिर उसे यहॉ ला कर हिला दो। इससे मैं भी तुम्हारे पास आ कर रह सकूँगा और फिर हम तुम्हारे भाई को जहर दे पायेंगे।"

जब वह कपड़े धो कर घर पहुँची तो वह अपने भाई के पास पहुँची और उससे कहा — "तुम मुझे अपना रूमाल दे दो तो मैं उसे धो कर साफ कर दूँगी वह बहुत मैला हो गया है।"

उसने अपनी बहिन का विश्वास कर लिया और उसे अपना रूमाल दे दिया। वह उसे समुद्र के पास ले गयी और वहॉ पहुँच कर उसे हिला दिया। देखो वहॉ तो एक पुल बन गया और सॉप उस पर से चल कर समुद्र पार आ गया।

वे दोनों आपस में यह बात करते हुए एक साथ घर लौटे कि छोटे ज़ार को कैसे मारा जाये और कैसे उसे भगवान की सुन्दर दुनियॉ से हटाया जाये।

छोटे ज़ार का यह नियम था कि वह रोज सुबह सबेरे ही उठ जाता था अपने घोड़े पर चढ़ता और शिकार के लिये निकल जाता जो उसे बहुत अच्छा लगता था।

सो सॉप ने बहिन से कहा — "तुम बीमार होने का बहाना कर के बिस्तर पर ही लेटी रहो और अपने भाई से कहो कि "मेरी तबियत ठीक नहीं है। मैंने एक सपना देखा है कि अगर तुम मेरे लिये मादा भेड़िये का दूध ला दोगे तो मैं ठीक हो जाऊँगी।"

इससे वह मादा भेड़िये का दूध लाने जायेगा तो जंगल में भेड़िये उसे और उसके कुत्तों को फाड़ कर रख देंगे। फिर हम उसके साथ वही करेंगे जैसा हम चाहेंगे। उसकी ताकत उसके कुत्तों में है।"

जब छोटा ज़ार शिकार से लौट कर आया तो सॉप छिप कर बैठ गया। बहिन ने कहा — "मेरी तबियत ठीक नहीं है। मैंने सपने में देखा है कि अगर तुम मेरे लिये मादा भेड़िये का दूध ला दोगे तो मैं ठीक हो जाऊँगी। मैं बहुत कमजोर हूँ भगवान न करे कि मैं मर जाऊँ।"

उसका भाई बोला — "यकीनन। मैं तुम्हारे लिये मादा भेड़िये का दूध ला कर दूँगा।" वह तुरन्त ही अपने घोड़े पर सवार हुआ अपने कुत्ते लिये और जंगल की तरफ चल दिया।

चलते चलते वह एक झाड़ी तक पहुँचा था कि उसमें से एक मादा भेड़िया बाहर निकली तो उसका प्रोशियस कुत्ता दौड़ा और उसे दबोच लिया और उसके नौइविगा कुत्ते ने उसे पकड़ कर रखा। छोटे ज़ार ने उसका दूध निकाला और उसे जाने दिया।

मादा भेड़िया ने इधर उधर देखा और बोली — "ओ छोटे ज़ार नोविश्नी। मुझे लग रहा था कि तुम मुझे जाने नहीं दोगे पर क्योंकि तुमने मुझे जाने दिया इसलिये मैं अपना एक बच्चा तुम्हें दे देती हूँ।"

तब उसने अपने एक बच्चे को उसे देते हुए कहा — "जाओ बेटा तुम इन छोटे ज़ार के साथ जाओ और इनकी ऐसे सेवा करना जैसे यह तुम्हारे आदरणीय पिता हों।"

छोटा ज़ार मादा भेड़िया का दूध और बच्चा ले कर आ गया।

अब उसके पास दो कुत्तों के साथ साथ एक भेड़िये का बच्चा और था जो उन कुत्तों के पीछे पीछे आ रहा था। सॉप और उसकी बहिन ने उसे दूर से ही आते देख लिया। उसने देखा कि उसके पीछे तीन कुत्ते और चले आ रहे हैं।

सॉप बहिन से बोला — "अरे यह तो बड़ा चालाक है। इसने तो दो कुत्तों के साथ साथ एक और पहरेदार कुत्ता भी जोड़ लिया है। तुम यहीं बिस्तर पर लेटी रहो और अपनी हालत और बुरा दिखाने की कोशिश करो। अबकी बार इससे मादा भालू के दूध की मॉग करना। क्योंकि मुझे यकीन है कि भालू इसे जरूर ही चीर फाड़ देंगे।" तब सॉप एक सुई में बदल गया और बहिन ने ले जा कर उसे दीवार में लगा दिया।

इस बीच छोटा ज़ार अपने घोड़े पर से उतरा और अपने कुत्तों और भेड़िये के बच्चे के साथ झोंपड़ी में घुसा तो कुत्तों ने दीवार में लगी सुई की तरफ देख कर सूँघना शुरू कर दिया।

उसकी बहिन ने कहा — "तुमने इतने बड़े बड़े कुत्ते क्यों पाल रखे हैं। ये मुझे आराम ही नहीं करने देते।" सो उसने अपने कुत्तों को अपने पास बुलाया और वहीं बिठा लिया।

फिर उसकी बहिन ने कहा — "मैंने सपने में देखा है कि मुझे शायद मादा भालू के दूध से कुछ फायदा होगा।" उसके भाई ने कहा

"ठीक है मैं उसे ले कर आता हूँ।" पर जाने से पहले वह आराम करने के लिये लेट गया।

नैडविगा कुत्ता उसके सिर के पास लेट गया प्रोशियस कुत्ता उसके पैरों के पास लेट गया और वोवचोक यानी छोटा भेड़िया उसके बराबर में लेट गया। इस तरह से वह रात भर सोया। अगले दिन वह सुबह उठ गया अपने घोड़े पर सवार हुआ और मादा भालू का दूध लाने चला गया।

वे फिर से एक झाड़ी के पास आये तो इस बार उसमें से एक मादा भालू निकल कर बाहर आयी। प्रोशियस ने उसे निकलते ही दबोच लिया और नैडविगा ने उसे कस कर थामे रखा और छोटे ज़ार ने उसका दूध निकाल लिया और छोड़ दिया।

मादा भालू बोली — "हलो छोटे ज़ार नोविश्नी। मुझे तो लगा था कि तुम मुझे जाने नहीं दोगे पर क्योंकि तुमने मुझे जाने दिया इसलिये मैं तुम्हें अपना एक बच्चा देती हूँ।" कह कर छोटे ज़ार को उसने अपना एक बच्चा दिया और बच्चे से कहा — "तुम इनकी ऐसे ही आज्ञा मानना जैसे तुम अपने पिता की आज्ञा मानते।"

छोटा ज़ार अपने घोड़े पर बैठा और अपने घर आ गया। सॉप और छोटे ज़ार की बहिन ने उसे दूर से ही आते देख लिया। इस बार उसके पीछे तीन नहीं चार जानवर थे। उसने सॉप से कहा — "इसके पीछे तो चार जानवर हैं।"

तो सॉप बोला — "अगर इसके पीछे चार जानवर हैं तो क्या हम इसे कभी भी नहीं मार पायेंगे। मैं बताऊँ तुम क्या करो। अबकी बार इससे मादा खरगोश का दूध लाने के लिये कहो। हो सकता है कि इसके जानवर इसके उसका दूध निकालने से पहले ही उसे खा जायें।"

इतना कह कर वह फिर से सुई बन गया और बहिन ने उसे दीवार में लगा दिया – पहले से थोड़ा सा ऊँचा ताकि अबकी बार कुत्ते वहॉ तक न पहुँच सकें।

घर आने पर छोटा ज़ार अपने घोड़े से उतरा और वह और उसके कुत्ते झोंपड़ी में आये तो कुत्तों ने फिर से सुई की तरफ जा कर सूँघना शुरू कर दिया और भौंकने लगे पर छोटा ज़ार इसकी वजह न जान सका।

लेकिन उसकी बहिन रोने लगी — "तुम ये इतने बड़े बड़े कुत्ते क्यों रखते हो। इनका यह भौंकना सुन कर मुझे बहुत गुस्सा आता है।" इस पर छोटा ज़ार उन पर चिल्लाया और वे उसके पास चुपचाप आ कर बैठ गये।

बहिन फिर बोली — "मैं इतनी बीमार हूँ भैया कि मुझे मादा खरगोश के दूध के सिवा और कुछ ठीक नहीं कर सकता। मेरे लिये वही ले कर आओ।"

छोटा ज़ार बोला — "ठीक है बहिन। मैं तुम्हारे लिये वह भी ले कर आऊँगा।" पर जाने से पहले वह आराम करने के लिये लेट गया।

नैडविगा कुत्ता उसके सिर के पास लेट गया प्रोशियस कुत्ता उसके पैरों के पास लेट गया और वोवचोक यानी छोटा भेड़िया और मैदवैदिक यानी छोटा भालू उसके दोनों तरफ लेट गये।

इस तरह से वह रात भर सोया। अगले दिन वह सुबह उठ गया अपने घोड़े पर सवार हुआ और मादा भालू का दूध लाने चला गया।

वे फिर से एक झाड़ी के पास आये तो इस बार उसमें से एक मादा खरगोश निकल कर बाहर आयी। प्रोशियस कुत्ते ने उसे निकलते ही दबोच लिया और नैडविगा कुत्ते ने उसे कस कर थामे रखा और छोटे ज़ार ने उसका दूध निकाल लिया और छोड़ दिया।

मादा खरगोश बोली — "हलो ओ छोटे ज़ार। मुझे लगा कि मुझे छोड़ोगे नहीं पर क्योंकि तुम्हारे कुत्तों ने मुझे मारा नहीं और क्योंकि तुमने मुझे ज़िन्दा जाने दिया इसलिये मैं अपना एक बच्चा तुम्हें देती हूँ।" फिर अपना एक बच्चा उसे देते हुए कहा बच्चे से कहा — "जाओ और इनका कहा ऐसे ही मानना जैसे तुम अपने पिता का मानते।"

छोटा ज़ार पॉच पॉच जानवरों को अपने साथ ले कर घर की तरफ चल पड़ा। बहिन ने फिर से उसे दूर से आते देखा तो देखा कि उसके साथ तो पॉच पॉच जानवर आ रहे हैं। वह बोली — "यह तो

एक बहुत बड़ी परेशानी है। सारे पॉच जानवर इसके साथ चले आ रहे हैं और यह तो बिल्कुल ठीक ही चला आ रहा है।"

सॉप बोला "अबकी बार इससे लोमड़ी का दूध लाने के लिये कहो। हो सकता है कि जब यह उसे लेने जाये तो इसके जानवर इसे झटका मार दें।" इतना कह कर सॉप सुई में बदल गया और बहिन ने उसे दीवार पर और ऊॅचाई पर लगा दिया ताकि कुत्ते उस तक न पहुॅच सकें।

ज़ार फिर से घोड़े पर से उतरा तो उसके कुत्ते फिर से झोंपड़ी की तरफ दौड़े और उसी दीवार की तरफ जा कर सूॅघने और भोंकने लगे जिस पर सुई लगी थी।

उसकी बहिन ने फिर से रोते हुए कहा कि तुम इतने भयानक कुत्ते क्यों रखते हो। इस पर भाई ने अपने कुत्तों को चिल्ला कर अपने पास बुला लिया।

बहिन ने कहा — "भैया मैं अभी भी बीमार हूॅ मुझे इस बार लोमड़ी का दूध ला कर दो। मैं उससे जरूर ठीक हो जाऊॅगी।"

उसके भाई ने कहा "ठीक है मैं ला दूॅगा।" पर जाने से पहले वह आराम करने के लिये लेट गया।

नैडविगा कुत्ता उसके सिर के पास लेट गया प्रोशियस कुत्ता उसके पैरों के पास लेट गया और वोवचोक यानी छोटा भेड़िया और मैदवैदिक यानी छोटा भालू और छोटा खरगोश उसके दोनों तरफ लेट गये।

इस तरह से वह सारी रात सोया। अगले दिन फिर सुबह उठा और अपने घोड़े पर सवार हो कर अपने सब साथियों को साथ ले कर लोमड़ी का दूध लाने चला। वे लोग अबकी बार कुछ ज़्यादा ही घनी झाड़ियों की तरफ पहुँच गये कि यकायक उसमें से एक लोमड़ी बाहर निकली।

पोर्शियस कुत्ते ने उसे दबोच लिया नैड्विगा कुत्ते ने उसे कस कर पकड़ लिया और छोटे ज़ार ने उसका दूध निकाल लिया और उसे छोड़ दिया।

लोमड़ी बोली — "तुम्हारा बहुत बहुत धन्यवाद ओ छोटे ज़ार नोविश्नी कि तुमने मुझे ज़िन्दा छोड़ दिया। मुझे लगा कि तुम अपने कुत्तों से मुझे मरवा दोगे। तुम्हारी इस मेहरबानी के लिये मैं तुम्हें अपना एक बच्चा देती हूँ।"

फिर उसने अपना एक बच्चा छोटे ज़ार को देते हुए बच्चे से कहा — "तुम इनका उसी तरह से कहना मानना जैसे अपने पिता का मानते।"

अब वह छह जानवरों के साथ घर चला गया और उसकी बहिन और सॉप ने उनको दूर से ही देख लिया। लो अब तो उसके पास छह रक्षक थे और उसे खुद को भी कोई नुकसान नहीं पहुँचा था।

सॉप बोला — "अब हम लोग इसे कभी नहीं मार पायेंगे। अबकी बार खुद को तुम बहुत बीमार दिखाओ और उससे कहो "मैं बहुत बीमार हूँ। क्योंकि दूसरे साम्राज्य में बहुत दूर एक जंगली सूअर

है जो अपनी नाक से खेत जोतता है अपने कानों से बीज बोता है और अपनी पूँछ से मिट्टी के ढेले तोड़ता है।

और उसी राज्य में एक मिल है जिसमें बारह भट्टियाँ हैं जो अपना अनाज खुद ही पीसती हैं और खुद ही आटा निकालती है अगर तुम मुझे उसका वह आटा ला कर दो जिससे मैं केक बना सकूँ तभी मैं ज़िन्दा रह पाऊँगी।"

यह सुन कर भाई ने कहा — "मुझे ऐसा लगता है कि तू मेरी बहिन ही नहीं है। तू तो मेरी दुश्मन है।"

बहिन ने कहा — "यह कैसे सम्भव है भैया जबकि हम इस अनजानी जगह में अकेले एक साथ रह रहे हैं।"

वह बोला "ठीक है मैं ले आऊँगा।"

इस बार भी उसने अपनी बहिन का विश्वास कर लिया। वह अपने घोड़े पर चढ़ा अपने साथियों को अपने साथ लिया और फिर एक ऐसी जगह आ गया जहाँ वह जंगली सूअर भी था और वह मिल भी थी जिसका उसकी बहिन ने जिक्र किया था।

वह मिल तक आया वहाँ उसने अपना घोड़ा बाँधा और उस मिल में घुस गया। वहाँ बारह भट्टियाँ थीं बारह दरवाजे थे और इन दरवाजों पर इन्हें खोलने और बन्द करने के लिये किसी आदमी की जरूरत नहीं थी क्योंकि वे अपने आप ही बन्द होते थे और अपने आप ही खुलते थे।

उसने पहली भट्टी के नीचे से थोड़ा सा आटा लिया और दूसरे दरवाजे से चला गया पर उसके कुत्ते दरवाजे के बाहर ही रह गये। इस तरह वह बारहों दरवाजों से हो कर गया और फिर पहले दरवाजे से बाहर आ गया। उसने चारों तरफ देखा तो उसे अपने कुत्ते कहीं नजर नहीं आये।

उसने सीटी बजायी तो उसे अपने कुत्तों के रोने की आवाज आयी जहॉ से वे बाहर नहीं निकल सकते थे। वह बेचारा बहुत ज़ोर ज़ोर से रोने लगा। फिर वह अपने घोड़े पर सवार हुआ और अपने घर चला गया।

जब वह घर पहुँचा तो उसने देखा कि उसकी बहिन सॉप के साथ खुशियॉ मना रही है। जैसे ही भाई झोंपड़ी के अन्दर घुसा तो सॉप बोला — "हमें मॉस की जरूरत थी और लो मॉस आ गया।"

क्योंकि अभी अभी उन्होंने बैल को मारा था और जहॉ उन्होंने बैल को मारा था वहॉ व्हाइटथौर्न का पेड़ उग आया था। वह इतना सुन्दर था कि बस वैसा पेड़ तो केवल कहानियों में ही पाया जाता है पर न तो उसकी कल्पना ही की जा सकती है और न ही वह दैवीय है।

छोटे ज़ार ने जब उसे देखा तो बोला — "ओ मेरे जीजा जी।" क्योंकि बिना उसके कुत्तों के उसे सॉप के प्रति नम्र तो होना ही चाहिये था। "मेहरबानी कर के मुझे इस व्हाइटथौर्न के पेड़ पर चढ़ने

की इजाज़त दीजिये ताकि मैं उसके ऊपर चढ़ कर अपने चारों तरफ देख सकूँ।"

पर बहिन ने साँप से कहा — "प्रिय दोस्त। उससे कहो कि वह अपने लिये पानी अपने आप ही उबाले। फिर हम उसे उबालेंगे। क्योंकि यह ठीक नहीं है कि तुम अपने हाथ गन्दे करो।"

साँप बोला — "ठीक है। वह अपना पानी खुद गर्म करेगा।" फिर उसने छोटे ज़ार से कहा "तुम जाओ और जंगल से लकड़ी काट कर लाओ और फिर आग जला कर उस पर पानी गर्म करो।"

छोटा ज़ार यह सुन कर जंगल में लकड़ी काटने चला गया। जब वह लकड़ी काट रहा था तो एक मैना उधर से उड़ी और छोटे ज़ार से बोली — "इतनी जल्दी नहीं, इतनी जल्दी नहीं ओ छोटे ज़ार नोविश्नी। आराम से। जितना धीरे कर सकते हो उतना धीरे करो क्योंकि तुम्हारे कुत्ते दो दरवाजे चबा कर बाहर आ गये है।"

उसके बाद छोटे ज़ार ने एक बड़े बर्तन में पानी गर्म करने के लिये रखा और उसके नीचे आग जला दी पर लकड़ी जो वह काट कर लाया था वह सड़ी हुई थी और बिल्कुल सूखी हुई थी सो आग लगाते ही वह धू धू कर के जल पड़ी तो उसने उसके ऊपर थोड़ा सा पानी छिड़क दिया। उसने उस पर कई बार पानी छिड़का ताकि वह बहुत तेज़ी से न जले।

एक बार वह और पानी लाने के लिये ऑगन में गया तो मैना ने कहा — "इतनी जल्दी नहीं, इतनी जल्दी नहीं ओ छोटे ज़ार

नोविश्नी। आराम से। जितना धीरे कर सकते हो उतना धीरे करो क्योंकि तुम्हारे कुत्ते चार दरवाजे चबा कर बाहर आ गये है।"

जब वह अपनी झोंपड़ी की तरफ आ रहा था तो उसकी बहिन ने कहा — "पानी अभी तक अच्छी तरह से गर्म नहीं हुआ है। तुम लोहे की सलाख ले जाओ और जा कर उसे कुरेदो।"

उसने वैसा ही किया तो लकड़ी के टुकड़े और तेज़ी से जल पड़े पर जब वह चली गयी तो उसने आग के ऊपर और पानी डाल दिया ताकि आग धीरे धीरे जल सके।

वह फिर ऑगन में गया तो मैना ने उससे फिर कहा — "इतनी जल्दी नहीं, इतनी जल्दी नहीं ओ छोटे ज़ार नोविश्नी। आराम से। जितना धीरे कर सकते हो उतना धीरे करो क्योंकि तुम्हारे कुत्ते अब छह दरवाजे चबा कर बाहर आ गये है।"

जब वह अन्दर आया तो उसकी बहिन ने उसे फिर से आग को कुरेदने के लिये कहा। उसने वैसा ही किया पर जब वह चली गयी उसने फिर से कोयलों पर पानी डाल दिया।

इस तरह वह ऑगन में आता जाता रहा। यह करते करते वह थक गया था सो वह बोला — "उफ़ यह कितना थका देने वाला काम है।"

तभी मैना ने कहा — "इतनी जल्दी नहीं, इतनी जल्दी नहीं ओ छोटे ज़ार नोविश्नी। आराम से। जितना धीरे कर सकते हो उतना

धीरे करो क्योंकि तुम्हारे कुत्ते अब दस दरवाजे चबा कर बाहर आ गये है।"

छोटे ज़ार ने सबसे ज़्यादा सड़ी हुई लकड़ी ली और उसे आग में डाल दिया। और यह दिखाने के लिये कि वह सचमुच में जल्दी कर रहा है वह ऐसा करता भी रहा और देर करने के लिये बीच बीच में पानी भी डालता रहा। फिर भी पानी जल्दी ही उबलने लगा।

वह फिर से लकड़ी लेने जंगल गया तो मैना ने उससे कहा — "इतनी जल्दी नहीं, इतनी जल्दी नहीं ओ छोटे ज़ार नोविश्नी। आराम से। जितना धीरे कर सकते हो उतना धीरे करो क्योंकि तुम्हारे कुत्ते अब सारे दरवाजे चबा कर बाहर आ गये है और अब आराम कर रहे हैं।"

पर अब तो पानी उबल रहा था सो उसकी बहिन आयी और उससे कहा — "आ और अपने आपको इस पानी में उबाल। तू और कब तक हमें इन्तजार करायेगा।"

छोटे ज़ार बेचारे ने तब उस उबलते पानी को अपने ऊपर डालना शुरू किया जबकि बहिन ने मेज तैयार की। उस मेज पर कपड़ा बिछाया ताकि सॉप उसके भाई को उस मेज पर बैठ कर खा सके।

उधर वह बेचारा चमचे से अपने ऊपर उबलता हुआ पानी गिराता रहा और चिल्लाता रहा — "ओ मेरे प्यारे जीजा जी। मुझे

उस व्हाइटथौर्न पेड़ पर चढ़ने दें ताकि मैं इधर उधर देख सकूँ। क्योंकि वहाँ से मैं बहुत दूर तक देख सकता हूँ।"

बहिन ने साँप से कहा — "इसे ऐसा मत करने देना। यह वहाँ बहुत देर तक बैठा रहेगा और हमारा समय बर्बाद करेगा।"

पर साँप बोला — "कोई बात नहीं इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। अगर यह वहाँ चढ़ना चाहता है तो इसे चढ़ने दो न।"

सो छोटे ज़ार ने उस पेड़ पर चढ़ना शुरू किया। वह हर डाली पर कदम रख रख रहा था कोई भी डाली नहीं छोड़ रहा था ताकि उसे कुछ समय और मिल जाये। इस तरह चढ़ते चढ़ते वह ऊपर उसकी चोटी तक पहुँच गया।

वहाँ पहुँच कर उसने अपनी बाँसुरी निकाली और उसे बजाना शुरू कर दिया।

लेकिन वह मैना उड़ते हुई वहाँ आयी और बोली — "इतनी जल्दी नहीं, इतनी जल्दी नहीं ओ छोटे ज़ार नोविश्नी। क्योंकि तुम्हारे कुत्ते अब आराम कर चुके हैं और अब अपनी पूरी ताकत से भागते हुए तुम्हारे पास आ रहे हैं।"

पर तभी उसकी बहिन भागती हुई वहाँ आयी — "यह तुम वहाँ क्या और किसके लिये बजा रहे हो। तुम शायद यह भूल गये हो कि हम तुम्हारा यहाँ नीचे इन्तजार कर रहे हैं।"

यह सुन कर उसने पेड़ से नीचे उतरना शुरू कर दिया और वह हर डाली पर देर लगाता जा रहा था जबकि उसकी बहिन उससे जल्दी नीचे उतरने के लिये कहती रही।

आखिर वह आखिरी डाली पर आ गया और जैसे ही वह उस डाली पर खड़ा हुआ और नीचे जमीन पर कूदा तो उसने सोचा कि "बस अब तो मैं गया।"

पर उसी पल उसके दोनों कुत्ते और बाकी जानवर भी वहॉ आ चुके थे। कुत्ते बहुत ज़ोर ज़ोर से भौंक रहे थे। आते ही वे उसके चारों तरफ खड़े हो गये।

तब छोटे ज़ार ने कौस का निशान बनाया और कहा — "हे भगवान तुम्हारी जय हो। अभी मैं तुम्हारी इस सुन्दर दुनियॉ में कुछ दिन और ज़िन्दा रह लूँगा।"

उसके बाद उसने सॉप से कहा — "ओ मेरे प्यारे जीजा जी अब तुम बाहर निकलो क्योंकि अब मैं तुम्हारे लिये तैयार हूँ।"

सॉप उसे खाने के लिये बाहर निकल कर आया पर उसने कुत्तों और अपने दूसरे जानवरों से कहा — "वौवचौक, मैदवैदिक, प्रोशियस, नैडविगा। पकड़ लो इसे।" उसके यह कहने पर वे सब सॉप पर टूट पड़े और उस फाड़ डाला।

छोटे ज़ार ने उसके सारे टुकड़े समेटे और उन्हें जला कर राख कर दिया। लोमड़ा उसकी राख में उलट पलट हो गया ताकि वह उसकी राख से पूरा ढक जाये। उसके बाद वह एक खुली जगह चला

गया और अपने को हिला कर उसकी राख चारों दिशाओं में फैला दी।

पर जब वे सॉप को फाड़ रहे थे तो छोटे ज़ार की बहिन ने उसका एक दॉत तोड़ कर रख लिया। जब सब खत्म हो गया तो छोटे ज़ार ने अपनी बहिन से कहा — "तुम तो मेरे साथ हमेशा ही झूठी दोस्त रही हो तो तुम इसी राज्य में रहो और मैं दूसरे राज्य में जाता हूँ।"

उसके बाद उसने दो बालटियॉ बनायी और उन्हें व्हाइटथौर्न पेड़ पर लटका दिया और बहिन से कहा — "देखो बहिन। अगर तू मेरे लिये रोयेगी तो यह वाली बालटी ऑसुओं से भर जायेगी और अगर तू सॉप के लिये रोयेगी तो वह बालटी खून से भर जायेगी।"

यह सुन कर वह रो पड़ी और बोली — "भैया मुझे छोड़ कर मत जाओ। मुझे अपने साथ ले चलो।"

छोटा ज़ार बोला — "नहीं। जैसी झूठी दोस्त तू है ऐसी झूठी दोस्त को मैं अपने साथ नहीं रख सकता। तू जहॉ है वहीं रह।" कह कर वह अपने घोड़े पर चढ़ा अपने कुत्तों और जानवरों को बुलाया और दूसरे साम्राज्य के किसी दूसरे राज्य की तरफ निकल पड़ा।

वह चलता गया चलता गया जब तक वह किसी दूसरे शहर में नहीं पहुँच गया। उस शहर में पानी का केवल एक ही स्रोत था। इस स्रोत में एक ड्रैगन रहता था जिसके बारह सिर थे।

जब भी कभी कोई वहॉ से पानी लेने जाता और अपना पानी भरता तो वह ड्रैगन वहॉ से निकल आता और उसे खा जाता। इसके अलावा उस शहर में कोई और जगह ऐसी नहीं थी जहॉ से लोग पानी भर सकते।

सो छोटा ज़ार जब इस शहर में आया तो वह एक अजनबियों की सराय में ठहरा। उसने उस सराय वाले से पूछा — "यह सड़कों पर चिल्लाना दौड़ना किस वजह से। क्या मामला है।"

सराय का मालिक बोला — "क्यों। आपको नहीं पता कि आज इस देश के ज़ार की बारी है कि वह अपनी बेटी को ड्रैगन के पास भेजे।"

सो वह सराय से बाहर गया और जा कर सुना कि वहॉ के लोग क्या कह रहे थे। "ज़ार ने यह घोषणा करा रखी है कि जो कोई भी इस ड्रैगन को मारेगा ज़ार उसके साथ अपनी बेटी की शादी कर देगा और उसे अपना आधा राज्य दे देगा।"

यह सुन कर छोटा ज़ार नोविश्नी आगे बढ़ा और बोला — "मैं मारूँगा इस ड्रैगन को।"

सो सब लोगों तुरन्त ही ज़ार के पास गये और उससे कहा कि "एक अजनबी कह रहा है कि वह ड्रैगन को मार सकता है।" उसे ज़ार के पास भेज दिया।" यह सुन कर ज़ार ने लोगों से कहा कि वे उसे ला कर रक्षकों के साथ मिला दें।

उसके बाद ज़ारेवना को बाहर लाया गया। उसके पीछे छोटा ज़ार था और उसके पीछे उसका घोड़ा और उसके जानवर थे। ज़ारेवना बहुत सुन्दर थी और बहुत कीमती कपड़े पहने थी कि उस समय जो कोई भी उसे देख रहा था रो रहा था।

पर जैसे ही ड्रैगन बाहर निकल कर आया और ज़ारेवना को खाने के लिये उसने अपना मुँह खोला छोटे ज़ार ने अपनी खुद चलने वाली तलवार से कहा "ड्रैगन के ऊपर गिरो।" और अपने जानवरों से कहा "वौवचौक, मैदवैदिक, प्रोशियस, नैडविगा। पकड़ लो इसे।" उसके यह कहने पर वे सब ड्रैगन पर टूट पड़े और उस फाड़ डाला।

जब वे उसे फाड़ चुके तब छोटे ज़ार ने उसके शरीर के बचे हुए हिस्सों को लिया और उन्हें जला कर राख कर दिया। छोटे लोमड़े ने उसकी राख को अपनी पूँछ में लपेटा और फिर खुली जगह में जा कर उसे चारों दिशाओं में फैला दिया।

छोटे ज़ार ने प्यारी सी ज़ारेवना का हाथ पकड़ा और उसे ज़ार के पास ले गया। लोग बहुत खुश हो गये क्योंकि अब उनका ज़ार पानी के ड्रैगन की कैद से आजाद हो गया था। ज़ारेवना ने छोटे ज़ार को अपनी शादी की अँगूठी पहना दी।

अब वे घर के लिये रवाना हुए। वे चलते गये चलते गये क्योंकि ज़ार का राज्य अभी बहुत दूर था। चलते चलते छोटा ज़ार थक गया था सो वह एक जगह लेट गया। ज़ारेवना उसके सिर के पास बैठ गयी।

तब छोटे ज़ार का नौकर उठा और उसने छोटे ज़ार की खुद चलने वाली तलवार उसकी कमर से निकाली और उससे कहा "ओ खुद चलने वाली तलवार इसे काट दो।" सो खुद चलने वाली तलवार ने छोटे ज़ार को काट डाला। उसके जानवरों को इस बात का पता ही नहीं चला क्योंकि वे भी थक कर सो गये थे।

तब उस नौकर ने ज़ारेवना से कहा — "अब तुम अपने सारे लोगों से कहना कि मैंने तुम्हें बचाया है और अगर तुमने ऐसा नहीं कहा तो मैं तुम्हारे साथ भी वैसा ही करूँगा जैसा मैंने इस आदमी के साथ किया है।"

ज़ारेवना बोली — "मैं ऐसा ही कहूँगी कि तुमने ही मुझे बचाया है।" क्योंकि वह उस नौकर से बहुत ज़्यादा डर गयी थी। जब वे लोग शहर पहुँचे तो ज़ार अपनी बेटी को ज़िन्दा देख कर बहुत खुश हुआ। उसने नौकर को बहुत शानदार कपड़े पहनाये और सबने मिल कर बहुत खुशियाँ मनायीं।

उधर जब नैडविगा सो कर उठा तो उसने देखा कि उसका मालिक तो वहाँ कहीं नहीं था। उसने तुरन्त ही बाकी सब जानवरों को उठाया। वे सब यह सोचने लगे कि उन सबमें सबसे ज़्यादा तेज़ कौन है।

काफी सोच विचार के बाद वे इस फैसले पर पहुँचे कि उन सबमें खरगोश सबसे ज़्यादा तेज़ था। तब उन लोगों ने फैसला किया कि खरगोश भागे और जल्दी से ज़िन्दगी देने वाला और उपचार करने

वाला पानी लाये और साथ में जवानी देने वाला सेब भी ले कर आये।

सो खरगोश यह पानी और सेब लाने के लिये दौड़ गया। दौड़ते दौड़ते वह एक ऐसे देश में आया जिसमें उसने एक स्रोत देखा और उस स्रोत के पास ही उगा हुआ एक सेब का पेड़ भी देखा जिस पर जवान बनाने वाले बहुत सारे सेब लगे हुए थे। पर इस स्रोत और इस सेब का पेड़ दोनों ही की रखवाली एक मस्कोवाइट[18] करता था जो बहुत ही ताकतवर था।

वह अपनी तलवार अपने चारों तरफ बार बार कुछ इस तरह से घुमाता रहता था कि कोई चूहा भी कुँए के पास तक नहीं पहुँच पाता था। तो अब क्या किया जाये। सो छोटे खरगोश ने अपनी चालाकी का इस्तेमाल करना का निश्चय किया। उसने अपने आपको टेढ़ा मेढ़ा बना लिया और कुँए की तरफ लँगड़ा कर चल दिया।

जब मस्कोवाइट ने उसे देखा तो मन में सोचा कि "यह किस तरह का जानवर है। मैंने ऐसा जानवर पहले कभी देखा नहीं।"

सो खरगोश उसके पास से गुजर गया और आगे बढ़ता ही रहा आगे बढ़ता ही रहा और चलते चलते कुँए तक आ गया। मस्कोवाइट वहाँ कुँए पर खड़ा हुआ था। उसने अपनी आँखें बड़ी बड़ी खोल ली थीं पर खरगोश तो स्रोत के ऊपर की तरफ बढ़ गया

[18] Muskovite.

था। उसने वहॉ से एक बोतल पानी भरा एक सेब तोड़ कर उसमें डाला और पल भर में वहॉ से हवा हो गया।

वह भाग कर छोटे ज़ार नोविश्नी के पास आया तो नैडविगा ने तुरन्त ही उसके शरीर के टुकड़ों के ऊपर ज़िन्दगी और उपचार का पानी छिड़क दिया।

सारे टुकड़े खिसक कर पास आ गये तभी उसके मुॅह में थोड़ा सा पानी और डाल दिया गया जिससे छोटा ज़ार नोविश्नी ज़िन्दा हो कर उठ कर बैठा हो गया। तब उसे एक छोटा सा टुकड़ा जवानी के सेब का खिला दिया जिससे वह तुरन्त ही जवान और ताकतवर हो गया।

छोटे ज़ार ने खड़े हो कर एक अॅगड़ाई ली एक जंभाई ली और बोला — "उफ़ मैं कितनी देर तक सोता रहा।"

प्रोशियस बोला — "यह तुम लोगों के लिये बहुत अच्छा रहा कि तुम लोग ज़िन्दगी और उपचार का पानी ले आये।"

सब बोले — "पर अब हम क्या करें।"

सबने सलाह की और इस फैसले पर पहुॅचे कि छोटे ज़ार को एक बूढ़े का वेश बना कर ज़ार के महल जाना चाहिये। सो छोटे ज़ार नोविश्नी ने एक बूढ़े का वेश बनाया और जब वह वहॉ पहुॅचा तो उसने महल में अन्दर जाने की इजाज़त मॉगी ताकि वह नौजवान शादीशुदा जोड़े को देख सके पर वहॉ ज़ार के नौकर उसे अन्दर जाने नहीं दे रहे थे।

पर उसके अन्दर आने की इजाज़त माँगने की आवाज ज़ारेवना के कानों को सुनायी दे गयी तो उसने उन नौकरों से कहा कि वे उसे अन्दर आने दें।

जब वह अन्दर घुसा तो उसने अपना शाल अपनी टोपी और वह अँगूठी हटा ली जो उसने ड्रैगन को मारने के बाद उसे दी थी तो वह उसे पहचान तो गयी पर उसे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ। उसने छोटे ज़ार से कहा — "इधर आओ, ओ भगवान जैसे यात्री। ताकि मैं तुम्हारी ठीक से आवभगत कर सकूँ।"

तब छोटा ज़ार मेज के पास पहुँचा और ज़ारेवना ने उसे एक गिलास में वाइन दी। उसने उसे अपने बाँये हाथ से लिया। ज़ारेवना ने देखा कि उसने उसका गिलास उस हाथ से नहीं लिया जिसमें उसकी अँगूठी पड़ी हुई थी। सो उसने वह गिलास उससे वापस ले कर खुद पी लिया।

फिर उसने उसे दूसरा गिलास भर कर वाइन दी तब उसने उसे दाँये हाथ से लिया। और जब उसने उसे दाँये हाथ से लिया तब उसने अपनी दी हुई अँगूठी उसके हाथ में देखी तो उसने अपने पिता से कहा — "पिता जी यही मेरे पति हैं जिन्होंने मेरी जान बचायी थी न कि उस आदमी ने। उस गधे ने तो मेरे पति को मार ही दिया था और मुझसे कहा कि मैं आपसे कहूँ कि वही मेरा पति है।"

जब ज़ार ने यह सुना तो वह गुस्से से उबल पड़ा उसने तुरन्त ही नौकर से कहा — "तो यह है तू।" और तुरन्त ही उसे एक जंगली

घोड़े की पूँछ से बँधवा कर जिसके ऊपर कोई नहीं चढ़ सकता था मैदान में खुला छोड़ दिया। अब जहाँ भी वह घोड़ा उसे ले जाये।"

अब वह छोटे ज़ार नोविश्नी को मेज पर ले आया और फिर और खुशियाँ मनायी गयीं।

ज़ारेवको और ज़ारेवना बहुत दिनों तक ज़िन्दा रहे। एक दिन ज़ारेवना ने अपने पति से पूछा — "अपने घर और अपने सम्बन्धियों के बारे में कुछ बताइये।"

तब उसने उसे अपनी बहिन के बारे में बताया तो तुरन्त ही उसने उसे घोड़े पर सवार होने के लिये कहा और अपने जानवरों को साथ ले कर उसकी खोज में जाने के लिये कहा।

वे सब उसी जगह आये जहाँ वह उसे छोड़ कर गया था। वहाँ आ कर उसने देखा कि वह बालटी जो वह साँप के लिये छोड़ कर गया था खून से भरी हुई थी और ज़ार की बालटी सूखी थी और टूटी फूटी पड़ी हुई थी।

इससे वह पहचान गया कि वह अभी तक साँप के लिये रो रही थी। उसने उससे कहा "भगवान तेरी सहायता करें। मैं तुझे अब नहीं जानता। अब तू यहीं रह मैं अब तेरी तरफ आँख उठा कर भी नहीं देखूँगा।"

पर वह फिर उससे विनती करती रही उसे सहलाती रही कि वह उसे अपने साथ ले जाये तो भाई को उस पर दया आ गयी और वह उसे अपने साथ ले गया।

जब वे घर पहुँचे तो बहिन ने सॉप का दॉत निकाल लिया जिसे उसने अब तक छिपा रखा था। उसने वह दॉत अपने भाई के तकिये के नीचे रख दिया जहॉ वह सोता था। जब रात को भाई सोने गया तो उसने भाई को मार दिया।

उसकी पत्नी ने सोचा कि वह गुस्सा है इसलिये वह उससे नहीं बोला तो उसने उससे विनती की कि वह उससे गुस्सा न हो। पर फिर भी जब वह नहीं बोला तो उसने उसका हाथ पकड़ कर उठाया तो लो उसका हाथ तो लैड की तरह बिल्कुल ठंडा पड़ा था। वह चिल्ला पड़ी।

उसकी आवाज सुन कर प्रोशियस दरवाजे के अन्दर घुसा और अपने मालिक को चूमा तब ज़ार तो ज़िन्दा हो गया पर प्रोशियस बेचारा मर गया।

तब नैडविगा ने उसे चूमा तो प्रोशियस तो ज़िन्दा हो गया और नैडविगा मर गया। तब ज़ारेवको ने मैदवैदिक से कहा "अब तुम नैडविगा को चूमो।" उसने उसे चूमा तो नैडविगा तो ज़िन्दा हो गया पर मैदवैदिक मर गया।

इस तरह से वे बड़े से छोटे तक चूमते रहे जब तक खरगोश की बारी नहीं आयी। खरगोश ने वोवचोक को चूमा और खरगोश मर गया पर वोवचोक ज़िन्दा रहा। अब क्या करें। छोटा खरगोश बेचारा मर चुका था और अब कोई भी नहीं बचा था जो उसे ज़िन्दा कर सके।

छोटे ज़ार ने लोमड़े से कहा कि वह खरगोश को चूमे। पर लोमड़ा बहुत चालाक था। उसने खरगोश को अपने कन्धे पर उठाया और उसे जंगल ले चला। वह उसे एक ऐसी जगह ले गया जहॉ एक ओक का पेड़ गिरा हुआ पड़ा था। वहॉ उसकी एक डाल दूसरी डाल के ऊपर थी।

वहॉ पहुॅच कर उसने खरगोश को नीची वाली डाल के ऊपर रखा और उसी डाल के नीचे से उसे चूमते हुए निकल गया। उसने यह ध्यान रखा कि डाल उसके और खरगोश दोनों के बीच में रहे। इससे सॉप का दॉत खरगोश के मुॅह से निकल पड़ा और ऊपर वाली डाल में जा कर फॅस गया।

खरगोश और लोमड़ा दोनों सुरक्षित जंगल से भाग कर घर पहुॅच गये। जब सबने उन दोनों को ठीक और ज़िन्दा देखा तो सबने बहुत खुशियॉ मनायीं कि उस दॉत की वजह से किसी को कोई नुकसान नहीं पहुॅचा था। पर उन्होंने छोटे ज़ार की बहिन को पकड़ कर एक जंगली घोड़े की पूॅछ से बॉध कर मैदान में छोड़ दिया।

इसके बाद छोटा ज़ार और ज़ारेवना और सभी जानवर खुशी खुशी रहे। मैं भी वहॉ था मैंने भी वहा बहुत सारी वाइन पी जब तक वह मेरे मुॅह से नहीं निकल गयी। और यह कहानी आपके लिये।

5 पिशाच और सेंट माइकिल[19]

एक बार एक गॉव में दो पड़ोसी थे। उनमें से एक अमीर था जो बहुत अमीर था और एक गरीब जो इतना गरीब था कि उसके पास अपनी झोंपड़ी के अलावा और कुछ नहीं था। वह झोंपड़ी भी उसकी नीचे गिरने को तैयार थी।

कुछ समय बाद गरीब आदमी का कुछ ऐसा समय आया कि उसके पास खाने के लिये भी नहीं रहा और उसे कोई काम भी नहीं मिल रहा था। वह बहुत दुखी था और सोच रहा था कि अब वह क्या करे।

उसने सोचा और सोचा और फिर अपनी पत्नी से कहा — "देखो प्रिये मैं अपने अमीर पड़ोसी के पास जाता हूँ हो सकता है कि वह मुझे एक चॉदी का रूबल उधार दे दे। मैं कम से कम उससे रोटी तो खरीद सकूँगा। सो वह अपने अमीर पड़ोसी के पास चला गया।

वह अपने अमीर पड़ोसी के पास आया और बोला — "लौर्ड आप तन्दुरुस्त रहें।"

"तुम भी।"

"आदरणीय मालिक। मैं आपसे किसी काम से आया हूँ।"

अमीर आदमी ने पूछा — "बोलो तुम्हारा क्या काम है।"

[19] The Vampire and St. Michael. (Tale No 5)

गरीब आदमी बोला — "मुझे अफसोस है कि मुझे कहना तो नहीं चाहिये पर मेरा समय कुछ ऐसा बुरा आ गया है कि न तो मेरे घर में इस समय रोटी का एक भी टुकड़ा है और न ही मेरे घर में कोई पैसा है।

इसलिये मैं आपसे मालिक एक चॉदी का रूबल उधार मॉगने आया हूॅ। इसके लिये हम हमेशा के लिये आपके आभारी रहेंगे। मैं काम कर के आपका यह कर्ज चुका दूॅगा।"

अमीर आदमी ने पूछा — "पर तुम्हारी जमानत कौन देगा?"

गरीब आदमी बोला — "मैं नहीं जानता कि कोई मेरी जमानत देगा। मैं तो बहुत गरीब हूॅ। भगवान और सेंट माइकिल ही मेरी जमानत देंगे।" और उसने कोने में रखी एक मूर्ति की तरफ इशारा कर दिया।

सेंट माइकिल की मूर्ति ने अमीर आदमी से कहा — "तुम इस आदमी को यह पैसे उधार दो दो और उसे मेरे हिसाब में डाल देना। भगवान तुम्हें वापस कर देगा।"

अमीर आदमी बोला — "ठीक है अगर आप यह कहते हैं तो मैं इसे यह पैसा दिये देता हूॅ।" कह कर उसने एक चॉदी का सिक्का उसे दे दिया। गरीब आदमी ने उसे बहुत बहुत धन्यवाद दिया और खुशी खुशी घर लौट आया।

पर अमीर आदमी को शान्ति नहीं थी कि भगवान उसे उसका दिया हुआ कर्जा उसे उसके जानवरों को बढ़ा कर उसे तन्दुरुस्त रख कर उसके बच्चों द्वारा वापस कर देंगे।

वह उस गरीब आदमी के वापस लौटने का इन्तजार करता रहा कि वह कब वापस आयेगा और कब उसे उसका चॉदी का रूबल वापस करेगा। पर ऐसा तो कुछ हुआ ही नहीं सो वह उसकी खोज में निकल पड़ा।

उसके घर के सामने जा कर वह उस पर चिल्लाया — "ओ कुत्ते के पिल्ले। तुम मेरा पैसा वापस करने क्यों नहीं आये। तुम यह तो जानते हो कि पैसा उधार कैसे मॉगा जाता है पर तुम उसे देना भूल जाते हो।"

यह सुन कर गरीब आदमी की पत्नी ज़ोर से रो पड़ी। वह रोते हुए बोली — "अगर वह ज़िन्दा होते तो वह जरूर दे देते। पर वह तो अभी कुछ ही देर पहले मर गये।"

अमीर आदमी उसके ऊपर गुस्सा हुआ और वहॉ से चला गया पर जब वह घर पहुॅचा तो सेंट माइकिल की मूर्ति के पास जा कर खड़ा हुआ और बोला "तुम तो अच्छे उसकी जमानत साबित हुए।" कह कर उसने उसे उठाया और उसकी ऑखें निकालीं और उसे पीटना शुरू कर दिया।

वह सेंट माइकिल की मूर्ति को बार बार मारता रहा। थक कर उसने उसे पानी के एक छोटे से गड्ढे में फेंक दिया और उसे पैरों

तले कुचल दिया। "मैं तुझे उस आदमी की जमानत देने के लिये अच्छी तरह से मारूँगा जिसने मेरा पैसा वापस नहीं किया।"

जब वह सेंट माइकिल को इस तरह गालियॉ दे रहा था तो एक बीस साल का नौजवान उसके पास आया और बोला — "बाबा आप यह क्या कर रहे हैं।"

अमीर आदमी बोला — "मैं इसे मार रहा हूँ क्योंकि इसने एक सूअर के बच्चे की जमानत दी थी जो अब मर गया है और अब यह झूठ बोल रहा है। इसने कहा था कि यह उसे दिया हुआ मेरा एक चॉदी का रूबल मुझे वापस करेगा पर इसने ऐसा नहीं किया।"

नौजवान बोला — "बाबा आप इसे मत मारिये मैं इसके बदले में आपको यह चॉदी का रूबल दे देता हूँ। और यह पवित्र मूर्ति आप मुझे दे दीजिये।"

"अगर तुम्हारी इच्छा है तो तुम इसे ले जाओ पर पहले मुझे चॉदी का रूबल दे दो।"

वह नौजवान तुरन्त ही अपने घर दौड़ा गया और अपने पिता से बोला — "पिता जी मुझे एक चॉदी का रूबल दे दीजिये।"

"किसलिये बेटा?"

उसने अपने पिता से कहा — "पिता जी मैं एक पवित्र मूर्ति खरीदना चाहता हूँ। यह रूबल मुझे उसे खरीदने के लिये चाहिये।" फिर उसने अपने साथ होने वाली घटना भी उन्हें बता दी कि किस

तरह से एक आदमी एक चॉदी के रूबल के लिये सेंट माइकिल की मूर्ति को पीट रहा था।

पिता बोला — "नहीं मेरे बेटे। हम जैसे गरीब आदमी के पास उस जैसे अमीर आदमी को देने के लिये चॉदी का रूबल कहॉ से आया।"

"नहीं पिता जी। मुझे एक रूबल दे दीजिये न।" उसने अपने पिता से उसके लिये तब तक विनती की जब तक वह उसे मिल नहीं गया। उसे ले कर वह जितनी जल्दी भाग सका उतनी जल्दी वहॉ भागा गया चॉदी का रूबल उस अमीर आदमी को दिया और उससे वह पवित्र मूर्ति ले ली।

उसने उसे धोया साफ किया और उसे सुगन्धित फूलों के बीच रख दिया। फिर वे वैसे ही रहते रहे जैसे वे पहले रह रहे थे।

इस नौजवान के तीन चाचा थे। तीनों अमीर सौदागर थे और हर तरह की वस्तु का व्यापार करते थे। वे जहाज़ में विदेश जाया करते थे जहॉ वे अपना सामान बेचते थे और पैसा कमा कर लाते थे।

एक दिन जब उसके चाचा लोग व्यापार के लिये विदेश जाने के लिये तैयार हो रहे थे तो उसने उनसे कहा "मुझे भी अपने साथ ले चलिये।"

उन्होंने पूछा — "तुम हमारे साथ क्यों जाना चाहते हो? हमारे पास तो बेचने के लिये सामान है पर तुम्हारे पास क्या है?"

"फिर भी आप मुझे अपने साथ ले चलिये।"

"पर तुम्हारे पास तो कुछ है ही नहीं।"

"मैं लकड़ी की पट्टी और बोर्ड बनाऊँगा और उन्हें ले चलूँगा।"

उसके चाचा उसके इस तरह के सामान की कल्पना के बारे में सोच कर ही हँस दिये पर जब उसने उनसे बहुत विनती और जिद की तो थक कर वे तैयार हो गये।

उन्होंने कहा — "पर देखना यह सामान बहुत सारा मत ले चलना क्योंकि हमारे जहाज़ पहले से ही काफी भरे हुए हैं।" तब उसने लकड़ी की पट्टियाँ और बोर्ड बनाये उन्हें जहाज़ पर चढ़ाया सेंट माइकिल की मूर्ति अपने साथ ली और वे चल दिये।

वे चलते रहे चलते रहे। वे कुछ दूर चले वे बहुत दूर चले कि वे एक और ज़ार के राज्य में आ पहुँचे। इस ज़ार के एक अकेली बेटी थी जो इतनी सुन्दर थी जिसकी सुन्दरता का वर्णन नहीं किया जा सकता। भगवान की इस सुन्दर दुनियाँ में उसके समान कोई और सुन्दर नहीं था और न ही कहानियों में उस जैसा सुन्दर और कोई मिलता था।

एक दिन वह ज़ारेवना नदी पर नहाने के लिये गयी। और बिना अपने आपको कौस किये हुए ही पानी में कूद गयी। इससे किसी बुरी आत्मा ने उसे पकड़ लिया। ज़ारेवना पानी से बाहर निकलते ही इतनी बुरी तरह से बीमार हो गयी कि कुछ कहा नहीं जा सकता। उसके माता पिता ने वह सब कुछ किया जो वे कर सकते थे। अक्लमन्द

आदमियों और स्त्रियों से भी जो कुछ हो सकता था उन्होंने किया पर सब बेकार।

कुछ ही दिनों में उसकी हालत और बिगड़ती गयी और वह मर गयी। तब ज़ार ने यह घोषणा करवायी कि लोग वहॉ आयें और उसकी लाश पर प्रार्थना करें जिससे उसमें से बुरी आत्मा निकल सके। जो भी यह कर देगा वह उसे अपनी आधी ताकत और आधा राज्य दे देगा।

अब क्या था लोग भीड़ में वहॉ आने लगे पर कोई भी उसकी लाश पर प्रार्थना नहीं कर सका। यह असम्भव था। क्योंकि हर शाम को एक आदमी चर्च उस पर प्रार्थना करने के लिये जाता था और हर सुबह उसकी हड्डियॉ समेटने के लिये किसी को जाना पड़ता था क्योंकि वहॉ उनके अलावा और कुछ बचता ही नहीं था।

ज़ार इस बात से बहुत गुस्सा था। उसने सोचा कि इस तरह से तो मेरे सारे आदमी मारे जायेंगे। तब उसने कहा कि जो कोई विदेशी सौदागर यहॉ से गुजरे वह यहॉ आ कर प्रार्थना करे और अगर वे प्रार्थना नहीं करेंगे तो उन्हें यहॉ से जाने नहीं दिया जायेगा।

सो विदेशी सौदागर भी वहॉ एक एक कर के जाने लगे। शाम को एक सौदागर उस चर्च में बन्द कर दिया जाता। अगले दिन वे आते और उसकी हड्डियॉ बटोर कर ले जाते।

आखिर चर्च में प्रार्थना करने की उस नौजवान के चाचाओं की बारी आयी। वे रोने लगे और चिल्लाने लगे "हम तो गये। भगवान ही हमारी सहायता करे।"

तब नौजवान के सबसे बड़े चाचा ने उससे कहा — "सुनो ओ सीधे लड़के। हालॉकि मरी हुई ज़ारेवना के शरीर पर प्रार्थना करने की आज मेरी बारी है पर अगर तुम मेरी जगह चर्च में चले जाओ और वहॉ रात गुजारो तो मैं तुम्हें अपना सारा जहाज़ दे दूँगा।"

नौजवान बोला — "नहीं। अगर वह मेरे भी टुकड़े टुकड़े कर देगी तब क्या होगा। मैं नहीं जाऊँगा।"

सेंट माइकिल बोले — "नहीं तुम जाओ और डरो नहीं। तुम चर्च के बिल्कुल बीच में खड़े हो जाना और अपने चारों तरफ अपनी लकड़ी की तख्तियॉ और बोर्ड की बाड़ लगा लेना।

एक टोकरी भर कर नाशपाती ले जाना। जब वह तुम्हारे ऊपर दौड़े तो वे नाशपातियॉ अपने चारों तरफ बिखेर देना। उसे उनको चुनने में सुबह हो जायेगी। पर तुम इस सारे समय अपनी प्रार्थना पढ़ते रहना। वह कुछ भी करे तुम अपना सिर उठा कर ऊपर मत देखना।"

जब रात हुई तो उसने अपनी तख्तियॉ और बोर्ड लिये एक टोकरी नाशपाती लीं और चर्च चल दिया। वहॉ पहुँच कर उसने अपने चारों तरफ तख्तियॉ और बोर्ड लगा लिये नाशपाती की टोकरी अपने पास रख ली और पार्थना पढ़नी शुरू कर दी।

जब काफी रात बीत गयी तो उसे कुछ आवाजें सुनायी पड़ीं। उसने सोचा "ओ लौर्ड यह सब क्या है। ज़ारेवना की अर्थी भी हिलने लगी। बैंग बैंग। और लो ज़ारेवना अपनी अर्थी से उठ कर उसके सामने आ गयी।

वह बोर्ड के ऊपर कूदी और नौजवान को पकड़ने की कोशिश की तो वह पीछे की तरफ गिर पड़ी। वह दोबारा कूदी पर दोबारा भी वह पीछे की तरफ गिर पड़ी।

तब उसने अपनी नाशपाती की टोकरी उठायी और उसकी नाशपातियों को चारों तरफ बिखरा दिया। वे नाशपातियॉ चर्च में चारों तरफ बिखर गयीं और वह उनको उठाने के लिये उनके पीछे भागती रही। इसे करते करते उसे सुबह हो गयी। मुर्गे की पहली बॉग के साथ ही वह अपनी अर्थी पर जा कर शान्त लेट गयी।

जब सुबह हुई तो लोग चर्च की सफाई करने के लिये आये और आशा कर रहे थे कि उस नौजवान की हड्डियॉ उठा कर ले जायेंगे पर लो वह तो वहॉ बैठा बैठा प्रार्थना पढ़ रहा था। यह खबर तो शहर भर में फैल गयी। लोग इसे सुन कर बहुत खुश हुए।

अगली रात उसके दूसरे चाचा की बारी थी। उसने भी उससे विनती की कि वह उसकी जगह चला जाये। उसने वहॉ एक रात तो गुजार ही ली थी तो अब वह दूसरी रात भी गुजार ही सकता था और इसके बदले में वह उसे अपना पूरा जहाज़ दे देगा।

पर वह बोला — "नहीं मैं नहीं जाऊॅगा। मुझे डर लगता है।"

पर सेंट माइकिल ने कहा — "तुम डरो नहीं। तुम वहॉ जाओ। उस दिन की तरह से तुम अपने बोर्ड अपने चारों तरफ लगा लेना और तुम अपने साथ एक टोकरी गिरियॉ लेते जाना।

जब वह तुम्हारे ऊपर दौड़े तब वह गिरियॉ अपने चारों तरफ बिखरा देना। वह उन्हें सुबह मुर्गे की बॉग देने तक समेटती रहेगी। पर इस सारे समय तुम अपनी प्रार्थना पढ़ते रहना और कुछ भी हो जाये तुम ऊपर सिर उठा कर मत देखना।"

नौजवान ने ऐसा ही किया। उसने अपने बोर्ड उठाये एक टोकरी गिरियॉ लीं और चर्च में चला गया। वहॉ उसने प्रार्थना पढ़नी शुरू कर दी। उस रात की तरह से आधी रात के बाद कुछ आवाजें आयीं और सारा चर्च हिलने लगा।

उसका ताबूत हिलने लगा और लो वह उठ कर खड़ी हो गयी और सीधी उसकी तरफ दौड़ी। वह बहुत कूदी। वह बोर्ड से हो कर उसके पास आने ही वाली थी। वह हिस्स की आवाज कर रही थी। उसकी ऑखें अंगारे जैसी लाल थीं और जल रही थीं। पर इसका कोई फायदा नहीं था।

वह अपनी प्रार्थना पढ़ता ही रहा पढ़ता ही रहा और उसकी तरफ एक बार भी नहीं देखा। उसने अपनी गिरियों की टोकरी उठायी और सारी गिरियॉ अपने चारों तरफ बिखेर दीं। वह उनके पीछे भागी और सुबह मुर्गे की पहली बॉग तक उन्हें इकट्ठा करती ही रही।

मुर्गे की पहली बॉग के साथ ही वह अपने ताबूत में शान्त लेट गयी और ताबूत का ढक्कन बन्द कर लिया। अगली सुबह चर्च की सफाई करने वाले आये तो देखा कि वह तो ज़िन्दा था।

अगली रात को उसे अपने तीसरे चाचा की जगह भी चर्च जाना पड़ा। यह सुन कर तो वह बहुत रोया और बोला — "उफ़ मैं क्या करूँ। इससे तो अच्छा था कि मैं पैदा ही न हुआ होता।"

पर सेंट माइकिल बोले — "तुम दुखी न हो। रोओ नहीं। आखीर में सब ठीक हो जायेगा। पहले की तरह से अपने चारों तरफ अपने बोर्ड की दीवार लगा लेना। अपने ऊपर पवित्र जल छिड़क लेना। और अपने आपको पवित्र अगरबत्ती से खुशबू दे लेना। साथ में मुझे भी लेते जाना इससे वह तुम्हें नहीं ले पायेगी।

जैसे ही वह अपने ताबूत में से उठे तुम उसके ताबूत में कूद जाना। वह जो कुछ भी तुमसे कहे और तुमसे कितनी भी विनती करे पर तुम उसे उसमें दोबारा मत जाने देना जब तक वह तुमसे यह न कहे "मेरे साथी"।"

सो वह तीसरे दिन भी चला गया। वहॉ जा कर वह बीच चर्च में जा कर खड़ा हो गया। अपने चारों तरफ बोर्ड की दीवार लगा ली। अपने चारों तरफ पौपी के बीज फैला दिये। पवित्र अगरबत्ती से अपने आपको सुगन्धित कर लिया। और फिर अपनी प्रार्थना पढ़नी शुरू कर दी। वह उसे पढ़ता रहा पढ़ता रहा।

आधी रात के करीब उसने फिर से शोर सुना – फड़फड़ाहट गरज हिस्स और रोने की आवाजें। सारा चर्च कॉप रहा था। चर्च की वेदी पर रखा हुआ मोमबत्ती लगाने वाला गिर पड़ा। वहॉ जो पवित्र मूर्तियॉ मुँह के बल गिर पड़ीं। ओ लौर्ड यह सब कितना भयानक था।

और फिर ताबूत में से आवाज आयी "बैंग बैंग" और ज़ारेवना उठ कर खड़ी हो गयी। वह अपना ताबूत छोड़ कर सारे चर्च में घूम आयी। फिर वह बोर्ड की दीवार की तरफ दौड़ी और उसे पकड़ना चाहा पर वह पीछे गिर पड़ी।

उसने कई बार कोशिश की पर वह उसे पकड़ न सकी और बार बार पीछे को गिर जाती थी। अब उसके मुँह से झाग निकलने लगे थे। हर पल उसका गुस्सा बढ़ता ही जा रहा था। वह उसे ढूँढती हुई चर्च में चारों तरफ घूम रही थी।

इस बीच वह सेंट माइकिल की मूर्ति साथ में ले कर उसके ताबूत में जा कर लेट गया। वह सारे चर्च में उसे ढूँढती हुई अभी भी घूम रही थी।

वह चिल्लायी "अरे अभी तो वह यहीं था अब नहीं है। कहॉ गया।" वह फिर भागी पर फिर गिर पड़ी। वह फिर चिल्लायी "अरे अभी तो वह यहीं था अब नहीं है। कहॉ गया।" फिर वह अपने ताबूत की तरफ भागी। वहॉ उसे देख कर उसने ताबूत में कूदना चाहा पर उसे वहॉ देख कर रुक भी गयी।

बोली — "यहॉ से बाहर निकलो। मैं अब तुम्हें पकड़ने की कोशिश नहीं करूँगी। बस इसमें से बाहर निकल आओ।"

पर उसने कोई जवाब नहीं दिया वह बस अपनी प्रार्थना करता रहा। फिर बोला मुर्गा पहली बार। वह बोली "बाहर निकलो मेरे साथी बाहर निकलो।"

यह सुन कर वह ताबूत में से बाहर निकल आया और फिर दोनों ने भगवान की प्रार्थना की। दोनों बहुत रोये और भगवान को धन्यवाद दिया क्योंकि उसने उन दोनों पर दया की थी।

सुबह होने पर बहुत सारे लोग चर्च में आये जिनमें आगे आगे ज़ार था। वे सोचते चले आ रहे थे कि उन्हें वह ज़िन्दा मिलेगा या फिर उन्हें उसकी हड्डियॉ मिलेंगी। पर लो वहॉ तो दोनों भगवान की पूजा कर रहे थे। ज़ार तो उन दोनों को ज़िन्दा और ठीक देख कर बहुत खुश हो गया।

उसके बाद चर्च में उनकी शानदार पूजा हुई। ज़ारेवना के ऊपर पवित्र जल छिड़का गया। उसका बैप्टाइज़ेशन भी दोबारा हुआ। बुरी आत्मा अब उसे छोड़ कर चली गयी।

ज़ार ने उस नौजवान को अपनी आधी ताकत और आधा राज्य दे दिया। सौदागर लोग अपने भतीजे के साथ अपने अपने जहाज़ में अपने देश लौट गये।

वे एक साथ रहे। समय गुजरता रहा। नौजवान अभी भी कुँआरा था। वह अभी भी इतना सुन्दर था कि उसे शब्दों में बखान

नहीं किया जा सकता। ज़ार अभी भी अपनी बेटी के साथ अकेला रह रहा था।

धीरे धीरे ज़ारेवना कुछ दुखी रहने लगी। वह अब पहले की तरह नहीं रह गयी थी बहुत ही दुखी थी। ज़ार ने उससे पूछा "तुम इतनी दुखी क्यों हो?"

वह बोली — "पिता जी मैं दुखी नहीं हूँ।"

पर ज़ार उसे देखता रहता था वह उसे दुखी लग रही थी पर उसके लिये कोई सहायता नहीं थी। एक बार ज़ार ने उससे फिर पूछा — "क्या तुम बीमार हो?"

"नहीं पिता जी। पर मुझे खुद पता नहीं कि मुझे क्या हो गया है।"

कुछ दिन ऐसे ही चलता रहा जब तक ज़ार ने एक सपना नहीं देखा। सपने में उससे कहा गया कि "तुम्हारी बेटी उस नौजवान को बहुत प्यार करती है जिसने उसके अन्दर से बुरी आत्मा को बाहर निकाला है।"

तब ज़ार ने उससे पूछा — "क्या तुम उस नौजवान से प्यार करती हो?"

ज़ारेवना ने जवाब दिया — "हॉ पिता जी।"

ज़ार ने कहा — "तब तुमने मुझसे यह बात पहले क्यों नहीं कही मेरी बेटी?"

तब उसने अपने नौकरों को उस नौजवान के राज्य भेजा और कहा कि उन्हें वहॉ वह नौजवान मिल जायेगा जिसने ज़ारेवना को ठीक किया था सो उसे तुम जल्दी से जल्दी यहॉ ले कर आओ।

वे लोग चले गये और उसे ले कर ज़ार के पास आ गये। वह अपने साथ वे लकड़ी के तख्ते और बोर्ड भी साथ ले कर आया था।

ज़ार उससे मिला। उसने उसके सारे बोर्ड खरीद लिये और लो जब उन्हें तोड़ा गया तो उनमें से बहुत सारे बहुमूल्य हीरे जवाहरात निकल पड़े। ज़ार उसे अपने घर ले गया और ज़ारेवना से उसकी शादी कर दी। फिर सब खुशी खुशी रहे।

6 ट्रैमसिन, चिड़िया ज़ार और समुद्र की सुन्दरी नस्तासिया की कहानी[20]

एक बार की बात है कि एक आदमी और एक स्त्री रहते थे। उनके एक बहुत छोटा सा बेटा था। गर्मियों में वे खेतों से मक्का काटा करते थे।

एक दिन जब उन्होंने अपने बेटे को एक मक्का की बाल के गट्ठर के पास लिटा दिया एक गरुड़ ने नीचे छलॉग लगायी और बच्चे को पकड़ कर उसे जंगल में ले गया और अपने घोंसले में लिटा दिया।

इस समय तीन डाकू उस जंगल में घूम रहे थे। उन्होंने घोंसले में से आती हुई एक बच्चे के रोने की आवाज सुनी। सो वे उस ओक के पेड़ के पास गये जिस पर चिड़िया का घोंसला था। उन्होंने आपस में कहा — "चलो इस पेड़ को काट कर गिरा देते हैं और इस बच्चे को मार देते हैं।"

एक बोला — "नहीं नहीं यह ठीक नहीं है। हमें ऊपर चढ़ कर बच्चे को ज़िन्दा ही नीचे ले आना चाहिये।" सो वह पेड़ के ऊपर चढ़ गया और बच्चे को ज़िन्दा ही नीचे ले आया। अब वे तीनों मिल कर उसे पालने लगे।

[20] The Story of Tremsin, the Bird Zhar, and Nastasia, the Lovely Maid of the Sea. (Tale No 6)

उन्होंने उसका नाम ट्रैमसिन रख दिया। वहाँ उनके पास पल बढ़ कर वह जवान हो गया। उसके बाद उन्होंने उसे एक घोड़ा दे दिया।

घोड़ा दे कर उन्होंने उससे कहा — "अब तुम दुनियाँ में कहीं भी जाओ और अपने माता पिता को ढूँढो।"

सो ट्रैमसिन दुनियाँ में घूमने निकल पड़ा। वह अपना घोड़ा घास के मैदानों[21] में दूर तक ले गया। घोड़े ने उससे कहा — "जब हम थोड़ा और दूर चले जायेंगे तो तुम्हें ज़ार चिड़िया का एक पंख दिखायी देगा। तुम उसे बिल्कुल मत छूना नहीं तो तुम बहुत मुश्किल में पड़ जाओगे।"

इसके बाद वे और आगे चलते चले गये। उन्होंने दस ज़ारों के राज्य पार किये। उसके बाद वे एक और राज्य में आये जो तीसवीं जमीन में था जहाँ वह पंख पड़ा हुआ था। नौजवान ने सोचा "क्यों न मैं यह पंख उठा लूँ जो इतनी दूर से भी चमक रहा है।"

वह पंख के पास गया। वह पंख इतनी ज़ोर से चमक रहा था कि उसका वर्णन नहीं किया जा सकता यहाँ तक कि उसके बारे में सोचा भी नहीं जा सकता और कहानियों में भी नहीं आता। ट्रैमसिन ने वह पंख उठाया और एक शहर में जा पहुँचा।

उस शहर में एक बहुत ही अमीर कुलीन आदमी रहता था। ट्रैमसिन उस अमीर कुलीन आदमी के घर के अन्दर चला गया और

[21] Translated for the word "Steppe" – a large area of flat unforested grassland in south-eastern Europe or Siberia.

वहॉ जा कर उससे कहा — "क्या आप मुझे अपने यहॉ मजदूर रखेंगे?"

कुलीन आदमी ने उसे देखा तो देखा कि वह तो बहुत सुन्दर था और मजबूत था सो वह बोला — "हॉ हॉ क्यों नहीं।"

और उसने उसे अपना नौकर रख लिया। इस कुलीन आदमी के पास कई नौकर थे वे उसके घोड़ों की देखभाल करते थे और जब भी वह शिकार के लिये जाता था तो वे उन्हें चमकाते थे। ट्रैमसिन को भी उन्हीं के साथ रख दिया गया और वह भी उन्हीं की तरह उस आदमी के घोड़ों की देखभाल करने लगा।

उस आदमी के नौकरों ने देखा कि वे अपने अपने घोड़ों को इतनी अच्छी तरह से नहीं चमका पाते थे जितना कि ट्रैमसिन अपने घोड़े को चमका लेता था।

तो एक दिन उन्होंने उसे बहुत पास से देखा कि वह इसके लिये क्या करता है तो उन्होंने देखा कि जब ट्रैमसिन ने घोड़े को साफ कर लिया तो एक बार उसे चिड़िया ज़ार के पंख से सहला दिया। ऐसा करते ही उस घोड़े के बाल चॉदी जैसे चमक उठे।

यह देख कर वे नौकर उससे जलने लगे। उन्होंने आपस में बात की कि "किस तरह से हम इसे इस दुनियॉ से हटा दें। हम कुछ ऐसा करेंगे कि हम इसे कोई ऐसा मुश्किल काम देंगे जिसे यह न कर सके फिर हमारा मालिक इसे नौकरी से निकाल देगा।"

सो वे अपने मालिक के पास गये और उससे कहा — "मालिक। ट्रैमसिन के पास चिड़िया ज़ार का एक पंख है। उसका कहना है कि अगर वह चाहे तो वह चिड़िया ज़ार को भी ला सकता है।"

यह सुन कर मालिक ने ट्रैमसिन को बुलवाया और उससे कहा — "मेरे सईस कहते हैं कि अगर तुम चाहो तो मेरे लिये चिड़िया ज़ार ला सकते हो।"

ट्रैमसिन बोला — "नहीं जनाब नहीं। मैं नहीं ला सकता।"

मालिक बोला — "मुझे ऐसा जवाब मत दो। अगर तुम ना करोगे तो मेरे पास एक तलवार है जिससे मैं तुम्हारा सिर एक कद्दू की तरह काट दूँगा।"

यह सुन कर तो ट्रैमसिन तो रो पड़ा और सीधा अपने घोड़े के पास गया और बोला — "मेरे मालिक ने मुझे एक बहुत ही मुश्किल काम करने के लिये सौंपा है जो मेरे सब किये कराये पर पानी फेर देगा।"

घोड़ा बोला — "क्या है वह काम?"

नौजवान बोला — "चिड़िया ज़ार को लाना है।"

घोड़ा बोला — "यह कोई बड़ा काम नहीं है यह तो चुटकी बजाते का काम है। चलो घास के मैदान में चलते हैं। वहाँ मैं चारों तरफ देखूँगा और तुम बिल्कुल नंगे हो कर घास में लेट जाना। चिड़िया ज़ार खाने के लिये नीचे कूद लगायेगी। जब तक वह तुम्हारे शरीर के चारों तरफ पंजे मारती रहे तब तक तुम उसे मत छूना पर

अगर वह तुम्हारी ऑखों पर अपना पंजा मारे उसे उसकी टॉगों से पकड़ लेना।"

सो जब वे जंगली घास के मैदान में पहुँचे तो ट्रैमसिन तो नंगा हो कर घास में लेट गया और उसका घोड़ा इधर उधर घूमने लगा। तुरन्त ही चिड़िया ज़ार कूद लगा कर अपने खाने के लिये नीचे आयी और उसके शरीर के आसपास अपनी चोंच मारने लगी।

पर आखिर वह उसकी ऑखें निकालने के लिये आयी तो उसने उसे उसकी टॉगों से पकड़ लिया। फिर वह घोड़े पर चढ़ा और उस चिड़िया को ला कर अपने मालिक को दे दी।

अब तो उसके साथी उससे और ज़्यादा जलने लगे। उन्होंने फिर आपस में बात की — "अब हम उसके लिये ऐसा कौन सा काम ढूँढे जिसे वह कर ही न सके ताकि हम उससे बच जायें।"

बहुत सोच विचार के बाद वे मिल कर मालिक के पास गये और उससे कहा — "ट्रैमसिन कहता है कि चिड़िया ज़ार पकड़ना तो कोई मुश्किल काम नहीं था पर वह कहता है कि वह तो समुद्र की तीन गुनी सुन्दर नस्तासिया को भी यहॉ ला सकता है।"

यह सुन कर कुलीन आदमी ने फिर से ट्रैमसिन को बुला भेजा और उससे कहा — "देखो तुम मेरे लिये चिड़िया ज़ार ले कर आये यह तो तुमने अच्छा किया पर अब तुम मेरे लिये समुद्र की तीन गुनी सुन्दर नस्तासिया को ला कर दो।"

ट्रैमसिन बोला — "पर जनाब मैं उसे नहीं ला सकता।"

मालिक बोला — "देखो मुझे इस तरह का जवाब नहीं चाहिये। तुम्हें पता होना चाहिये कि मेरे पास तलवार है जिससे मैं तुम्हारा सिर कद्दू की तरह काट सकता हूँ।"

ट्रैमसिन रोता रोता फिर अपने घोड़े के पास पहुँचा।

घोड़े ने पूछा — "आज तुम क्यों रोते हो।"

तो नौजवान बोला — "मैं क्यों न रोऊँ। मेरे मालिक ने मुझे एक ऐसा मुश्किल काम थमा दिया है जो हो ही नहीं सकता।"

"और वह क्या काम है?"

"उन्होंने कहा है कि मुझे समुद्र की तीन गुनी सुन्दर नस्तासिया को ले कर आना है।"

घोड़ा ज़ोर से हँसा और बोला — "यह कोई मुश्किल काम नहीं है यह तो बस चुटकी बजाते का काम है। तुम समुद्र के किनारे सफेद तम्बू लगवाओ। और कुछ छोटी छोटी चीज़ें खरीद लो।

शराब और वाइन की बोतलें खरीद लो। वह तीन गुनी सुन्दरी नस्तासिया वहाँ आयेगी और तुम्हारी वे छोटी छोटी चीज़ें खरीद लेगी। तब तुम उसे ले जा सकते हो।"

कुलीन आदमी ने ऐसा ही किया। उसने समुद्र के किनारे सफेद तम्बू लगवा दिये। उसने कुछ रूमाल स्कार्फ खरीद कर उनको सुन्दर ढंग से सजा कर रख दिया। बहुत सारी ब्रैन्डी और वाइन सजा कर रख दी।

तब ट्रैमसिन समुद्र की तरफ अपने तम्बू में गया तो रास्ते में उसके घोड़े ने कहा — "जब मैं उसको ढूँढने जाऊँ तब तुम यहाँ सोने का बहाना करना। तब वह समुद्र की तीन गुनी सुन्दर नस्तासिया यहाँ आयेगी और तुमसे पूछेगी कि "ये चीज़ें कितने की हैं।"

पर तुम चुप रहना कुछ नहीं बोलना। फिर वह शराब और वाइन चखेगी तो वह तम्बू में ही सो जायेगी। उस समय तुम उसे आसानी से पकड़ पाओगे। फिर उसे कस कर पकड़ लेना।"

सो ट्रैमसिन तम्बू में सोने का बहाना कर के लेट गया। तभी समुद्र से समुद्र की तीन गुनी सुन्दर नस्तासिया वहाँ आयी और नौजवान से पूछने लगी — "ओ सौदागर। तुम्हारी ये चीज़ें कितने की हैं।"

पर नौजवान ने उसे कोई जवाब नहीं दिया। उसने यह सवाल उससे बार बार पूछा पर कोई जवाब न पा कर वह तम्बू के और अन्दर चली गयी

वहाँ जा कर उसने वाइन चखी तो वह तो बहुत अच्छी थी फिर उसने शराब चखी वह उससे भी ज़्यादा अच्छी थी। चखते चखते वह उसे पीने लगी। पहले थोड़ी पी फिर ज़्यादा पी और फिर सो गयी।

तब ट्रैमसिन ने उसे उठा कर अपने पीछे घोड़े पर बिठाया और उसे मालिक के पास ले गया। मालिक तो उसे देख कर बहुत ही खुश हुआ और उसकी बहुत बहुत प्रशंसा करने लगा।

पर समुद्र की तीन गुनी सुन्दर नस्तासिया ने कहा — "देखो। तुमको चिड़िया ज़ार का पंख मिला है। चिड़िया ज़ार खुद भी मिली है और अब तुमने मुझे भी पा लिया है अब तुम मेरे लिये समुद्र में से एक छोटा सा मूँगे का हार और ला दो।"

ट्रैमसिन बेचारा फिर अपने वफादार घोड़े के पास पहुँचा और बहुत ज़ोर ज़ोर से रोने लगा और उसे सारी कहानी सुनायी तो घोड़ा बोला — "मैंने तुमसे कहा था न कि चिड़िया ज़ार का पंख मत उठाना नहीं तो मुसीबत में फँस जाओगे। चलो रोओ नहीं। यह भी कोई मुश्किल काम नहीं है यह भी पलक झपकते ही हो जायेगा।"

सो वे दोनों समुद्र के किनारे घूमने चले गये। घोड़ा बोला "मैं तो यहाँ घूमने जाता हूँ और तुम यहाँ तब तक इन्तजार करो जब तक कि एक केंकड़ा समुद्र के बाहर नहीं निकलता है। जब वह बाहर निकले तो उससे कहना कि "मैं तुम्हें पकड़ूँगा।"

सो ट्रैमसिन ने अपने घोड़े को तो घूमने दिया और खुद वह वहीं बैठ कर केंकड़े के बाहर निकलने का इन्तजार करने लगा। कुछ देर में ही एक केंकड़ा समुद्र में से बाहर निकला।

उसे देखते ही वह केंकड़े से बोला — "मैं तुझे पकड़ लूँगा।"

केंकड़ा बोला — "नहीं तुम मुझे मत पकड़ो। तुम मुझे समुद्र में वापस जाने दो मैं तुम्हारी बहुत बड़ी सेवा करूँगा।"

नौजवान बोला — "ठीक है मैं तुम्हें छोड़ दूँगा पर तुम मुझे समुद्र में से समुद्र की तीन गुनी सुन्दर नस्तासिया की मूँगे की माला ला कर दो।" इस शर्त के साथ उसने उसे समुद्र में वापस जाने दिया।

तब केंकड़े ने छोटे छोटे केंकड़ों को इकट्ठा किया। उन्होंने बहुत सारे मूँगे इकट्ठे किये और उन्हें समुद्र के किनारे ले आये और उन्हें ट्रैमसिन को ला कर दे दिये।

तभी उसका वफादार घोड़ा दौड़ता दौड़ता आया ट्रैमसिन तुरन्त ही उस घोड़े पर चढ़ गया और वे मूँगे समुद्र की तीन गुनी सुन्दर नस्तासिया को ले जा कर दे दिये।

नस्तासिया बोली — "देखो। तुमको चिड़िया ज़ार का पंख मिला है। चिड़िया ज़ार खुद भी मिली है तुमने मुझे भी पा लिया है तुमने मेरे लिये समुद्र में से एक छोटा सा मूँगे का हार भी ला दिया है। अब मेरे लिये समुद्र में से जंगली घोड़े भी ला दो।"

यह सुन कर तो ट्रैमसिन बहुत ही दुखी हो गया पर वह फिर से रोता हुआ अपने वफादार घोड़े के पास गया और अपनी कहानी कही तो घोड़ा बोला — "इस बार यह कोई छोटा मोटा काम नहीं है यह वाकई बहुत मुश्किल काम है। तुम अपने मालिक के पास जाओ और उससे कहो कि वह बीस खालें चालीस तारकोल चालीस पौंड रुई और चालीस पौंड बाल खरीदे।"

सो ट्रैमसिन अपने मालिक के पास गया और उससे जरूरी सामान खरीदने के लिये कहा। उसके मालिक ने उसका बताया हुआ सारा

सामान खरीद कर उसे दे दिया। ट्रैमसिन ने इस सब सामान को अपने घोड़े पर लादा और दोनों समुद्र की तरफ चल दिये।

जब वे समुद्र के किनारे पर आ गये तो घोड़े ने कहा — "मेरे ऊपर खालें तारकोल और रुई फैला दो और देखो उन्हें इस तरह से फैलाना – पहले एक खाल, उसके ऊपर दो पौंड तारकोल, उसके ऊपर दो पौंड रुई। इस तरह उन्हें तब तक बिछाओ जब तक वे सब खत्म न हो जायें।"

ट्रैमसिन ने वैसा ही किया। घोड़ा बोला — "अब मैं समुद्र में कूदता हूँ। जब तुम एक लाल लहर किनारे की तरफ आते देखो तो तुम यहाँ से भाग जाना और उसे निकल जाने देना। उसके बाद फिर एक सफेद लहर आयेगी तो किनारे पर बैठ जाना और उसे ध्यान से देखते रहना।

तब मैं समुद्र से बाहर निकलूँगा और फिर मेरे पीछे सारे घोड़े बाहर निकलेंगे। तब तुम घोड़े के बालों से उस घोड़े को मारना जो ठीक मेरे बाद निकले। फिर वह तुम्हारे लिये कमजोर पड़ जायेगा और तुम्हें उसे काबू करना आसान रहेगा।"

इसके बाद वह वफादार घोड़ा समुद्र में कूद गया और ट्रैमसिन समुद्र के किनारे बैठ गया। घोड़ा एक बागीचे की तरफ तैर गया जो समुद्र में से ऊपर उठा था। वहाँ समुद्र के घोड़े चर रहे थे।

जब नस्तासिया के ताकतवर घोड़े ने उसे और उन खालों को देखा जिन्हें वह ले जा रहा था तो वह उसके पीछे बड़ी तेज़ी से

भागा। सारे के सारे घोड़े उसके पीछे भाग लिये। वे ट्रैमसिन के घोड़े और खालों को समुद्र के अन्दर ले गये और उसका पीछा करते रहे।

तब नस्तासिया के ताकतवर घोड़े ने ट्रैमसिन के घोड़े को पकड़ लिया और उसकी एक खाल फाड़ दी और उसे अपने दॉतों से काटने लगा। जैसे जैसे वह भागता जा रहा था वह उसके टुकड़े करता जा रहा था।

फिर उसने उसे दोबारा पकड़ लिया और उसकी दूसरी खाल भी फाड़ ली और उसके भी टुकड़े करता चला गया जैसे उसने पहली खाल के किये थे। इस तरह से वह सत्तर मील तक भागा चला गया जब तक उसने नस्तासिया के घोड़े के ऊपर रखी सारी खालों को नहीं फाड़ दिया और उनके टुकडे टुकड़े नहीं कर दिये।

पर ट्रैमसिन वहीं समुद्र के किनारे पर ही बैठा रहा जब तक उसे सफेद लहर आती दिखायी नहीं दे गयी। उस सफेद लहर के पीछे उसका अपना घोड़ा था और उसके पीछे तीन गुनी सुन्दर नस्तासिया का तीन गुना भयानक घोड़ा था और उसके पीछे बहुत सारे घोड़े थे।

उसे देखते ही ट्रैमसिन ने बीस पौंड बाल से पूरी ताकत से उसके सिर पर मारा। उसके मारते ही वह घोड़ा शान्त खड़ा हो गया। ट्रैमसिन ने तुरन्त ही उसके ऊपर लगाम डाल दी सवार हुआ और उसे और उसके सारे घोड़ों को तीन गुनी सुन्दर नस्तासिया के पास ले गया।

नस्तासिया ने उसकी ताकत की बहुत तारीफ की और उससे कहा — "तुमको चिड़िया ज़ार का पंख मिला है। चिड़िया ज़ार खुद भी मिली है तुमने मुझे भी पा लिया है तुमने मेरे लिये समुद्र में से एक छोटा सा मूँगे का हार भी ला दिया है। समुद्र में से जंगली घोड़े भी ला दिये।

अब तुम मेरी घोड़ी का दूध निकाल कर उन्हें तीन बर्तनों में रखो जिससे कि एक बर्तन में वह उबलता हुआ रहे दूसरे बर्तन में वह गुनगुना रहे और तीसरे बर्तन में बर्फ की तरह ठंडा रहे।"

यह सुन कर ट्रैमसिन एक बार फिर से रोता हुआ अपने वफादार घोड़े के पास पहुँचा तो घोड़े ने पूछा — "अब क्या बात है। क्यों रोते हो?"

ट्रैमसिन रोते रोते बोला — "क्या करूँ अगर मैं रोऊँ नहीं तो। तीन गुनी सुन्दर नस्तासिया ने फिर से मुझे एक मुश्किल काम सौंप दिया है जो नहीं हो सकता। वह यह कि अब मुझे उसकी घोड़ी का दूध निकाल कर उन्हें तीन बर्तनों में रखना है जिससे कि एक बर्तन में वह उबलता हुआ रहे दूसरे बर्तन में वह गुनगुना रहे और तीसरे बर्तन में बर्फ की तरह ठंडा रहे।"

घोड़ा बोला — "ओहो। यह कोई खास मुश्किल काम नहीं है। यह तो बहुत ही छोटा सा काम है। मैं उसकी घोड़ी को सहलाऊँगा तो वह घोड़ी दूध देगी। तुम उस घोड़ी का दूध तीन बर्तनों में इकट्ठा कर लेना जब तक वे बर्तन भर नहीं जाते।"

ट्रैमसिन ने ऐसा ही किया। उसने तीन बर्तन भर कर घोड़ी का दूध दुह लिया। उसके पहले बर्तन में दूध उबलता गर्म था दूसरे बर्तन का दूध गुनगुना गर्म था और तीसरे बर्तन का दूध बर्फ की तरह ठंडा था।

जब सब तैयार हो गया तो तीन गुनी सुन्दर नस्तासिया ने ट्रैमसिन से कहा — "अब तुम पहले बर्फ से ठंडे दूध में कूदो उसके बाद गुनगुने दूध में कूदो और फिर उबलते दूध में कूदो।"

ट्रैमसिन पहले ठंडे दूध वाले बर्तन में कूदा फिर वह गुनगुने दूध वाले बर्तन में कूदा और फिर गर्म दूध वाले बर्तन में कूदा। पहले बर्तन में से वह बूढ़ा बन कर निकला। दूसरे बर्तन में से वह एक नौजवान बन कर निकला और तीसरे बर्तन में से तो वह इतना सुन्दर बन कर निकला जिसकी सुन्दरता को तो लेखनी भी नहीं लिख सकती कोई कहानी भी नहीं कह सकती।

उसके बाद तीन गुनी सुन्दर नस्तासिया उन बर्तनों में कूदी। वह भी उसी तरीके से ठंडे बर्तन में से एक बुढ़िया की शक्ल निकली। गुनगुने दूध में से वह एक नौजवान लड़की के रूप में निकली और फिर गर्म दूध के बर्तन में से तो इतनी सुन्दर लड़की के रूप में निकली जिसकी सुन्दरता को तो लेखनी भी नहीं लिख सकती कोई कहानी भी नहीं कह सकती।

उसके बाद नस्तासिया ने कुलीन आदमी को भी उन बर्तनों में कूदने के लिये कहा। तो वह भी उसी तरीके से ठंडे बर्तन में से एक

बूढ़े की शक्ल में निकला। गुनगुने दूध में से वह एक नौजवान के रूप में निकला और फिर गर्म दूध के बर्तन में कूदा तो तुरन्त ही फट गया।

ट्रैमसिन ने तीन गुनी सुन्दर नस्तासिया से शादी कर ली। फिर वे बहुत समय तक खुशी खुशी रहे। कुलीन आदमी के सारे मकान जायदाद अब उनके थे। बुरे नौकरों को उन्होंने निकाल दिया था।

7 सॉप पत्नी[22]

एक बार की बात है एक भला आदमी था। उसके यहॉ एक मजदूर काम करता था जो कभी लोगों के पास नहीं बैठता था। उसके साथियों से जो हो सकता था वह सब कुछ उन्होंने कर लिया था पर वे उसे कभी अपने साथ नहीं ले जा सके।

कभी उन्होंने उससे सराय में चलने के लिये भी कहा पर वहॉ भी वे उसे बहुत देर तक नहीं रोक सके। वह हमेशा ही जंगलों में अकेला ही घूमता रहता।

एक दिन हमेशा की तरह वह जंगल में घूम रहा था। यह जंगल किसी भी गॉव से या फिर किसी भी बस्ती से काफी दूर था कि उसे एक बहुत बड़ा सॉप दिखायी दिया जो लहराता हुआ उसी की तरफ आ रहा था।

सॉप उससे बोला — "मैं तुझे यहीं और इसी समय खाऊॅगा।"

मजदूर जंगल के अकेलेपन का आदी था सो बोला — "अगर तुम्हारी खाने की इच्छा है तो खाओ।"

यह सुन कर सॉप बोला — "नहीं। मैं तुझे नहीं खाऊॅगा। बस तू जो मैं चाहता हूॅ वह कर दे।" कह कर सॉप ने उसे बताया कि उसे क्या करना था।

[22] The Serpent Wife. (Tale No 7)

उसने कहा — "तुम अभी घर लौट जाओ तो तुम अपने मालिक को गुस्सा पाओगे क्योंकि तुम घर से बहुत देर तक अनुपस्थित रहे हो और वहाँ उसके पास उसका काम करने के लिये कोई नहीं था।

इससे क्या हुआ कि उसका अनाज खेत में ही खड़ा रह गया। तो अभी जब वह तुम्हें देखेगा तो तुमसे वह अपने अनाज की बालें लाने के लिये कहेगा। इस काम में मैं तुम्हारी सहायता करूँगा।

तुम अपनी गाड़ी ठीक से भर लेना पर सारी बालों के गट्ठरों को मत भरना एक छोटा सा गट्ठर वहीं छोड़ जाना। उससे ज़्यादा छोड़ने की जरूरत नहीं है पर उतना छोड़ जाना।

फिर तुम अपने मालिक से विनती करना कि वह इस गट्ठर को तुम्हें तुम्हारी मजदूरी के रूप में दे दे। उससे पैसे मत लेना बस केवल अनाज की बालों का गट्ठर ही लेना।

जब तुम्हारा मालिक यह गट्ठर तुम्हें दे दे तो तुम उसे जला देना। उसमें से एक सन्दर स्त्री निकलेगी उसे तुम अपनी पत्नी बना लेना।"

मजदूर ने उसका कहा माना और सीधा घर वापस चला गया। उसके साथ वैसा ही हुआ जैसा साँप ने कहा था। उसने अनाज के सारे गट्ठर बड़ी सँभाल कर गाड़ी में भर लिये।

वे इतने सारे थे कि उनके बोझ से उसकी गाड़ी भी चटक गयी। जब वह सारा अनाज घर ले कर आया तो उसने मालिक से कहा कि वह एक बचा हुआ गट्ठर अपनी मजदूरी के रूप में चाहता है।

मजदूर ने अपनी मजदूरी के रूप में पैसे लेने के लिये मना कर दिया। उसने उससे वही गट्ठर माँगा जो वह खेत में छोड़ आया था।

उसके मालिक ने उसे वह गट्ठर दे दिया। वह फिर से खेत में चला गया और जैसा कि सॉप ने कहा था वहॉ जा कर उस गट्ठर को जला दिया। तुरन्त ही उसमें से एक सुन्दर स्त्री निकल पड़ी। मजदूर उसे अपने घर ले गया और उससे शादी कर ली।

अब वह एक ऐसी जगह ढूँढने लगा जहॉ वह अपने लिये एक झोंपड़ी बना सके। उसके मालिक ने उसे थोड़ी सी जगह दे दी जहॉ वह अपनी झोंपड़ी बना सकता था। उसने वहॉ अपनी झोंपड़ी बना ली।

उसकी पत्नी ने उसे झोंपड़ी बनाने में इतनी ज़्यादा सहायता की कि जैसे उसने उसे हाथ ही न लगाया हो। उसकी वह झोंपड़ी बहुत जल्दी ही बन गयी और उसमें वह सब कुछ भी जल्दी ही आ गया जिसकी उन्हें जरूरत थी।

आदमी की तो कुछ समझ में ही नहीं आया। वह तो बस उसे चारों तरफ से देख देख कर आश्चर्य ही करता रहा। जिधर भी वह देखता उधर ही उसे सारी चीज़ें ठीक और इस्तेमाल करने के लिये तैयार नजर आतीं। उसके घर से अच्छा घर उस गॉव में और कोई नहीं था।

अब वह उस घर में शान्ति से और धन धान्य सहित जितने दिनों तक ज़िन्दा रहता रह सकता था अगर उसकी इच्छाऐं अपनी सीमा से आगे न बढ़ी होतीं।

उसके पास अनाज के तीन खेत खड़े हुए थे। तो एक दिन जब वह घर आया तो उसके मजदूरों ने उसे बताया — "मालिक आपके खेतों में अनाज पका हुआ तो खड़ा है पर अभी कटा नहीं है।"

अनाज काटने का मौसम आ रहा था। उसकी पत्नी को उसके खेतों की देखभाल करनी थी और अनाज अभी भी कटा नहीं था। उसने सोचा "यह क्या बात है?" गुस्से में वह चिल्लाया "मैं देखता हूँ यह कैसे होता है। जो सॉप होता है वह पहले सॉप ही होता है।"

घर आते आते तो उसका गुस्सा बहुत ही बढ़ गया। वह आपे से बाहर हो गया और यह गुस्सा उसे अपनी पत्नी पर बस अनाज न कटने की वजह से था।

जब वह घर पहुँचा तो सीधा अपने कमरे मे लेटने के लिये चला गया। उसकी पत्नी का कहीं पता नहीं था बस वहॉ तो तकिये के बीच में एक बड़ा सा सॉप कुंडली मारे बैठा था। तब उसने अपने मन में सोचा कि एक बार उसकी पत्नी ने उससे कहा था कि "याद रखना मुझे कभी सॉप नहीं कहना। अगर तुमने कहा तो तुम अपनी पत्नी को खो दोगे।"

यह बात उसके दिमाग में अब आयी पर अब तो बहुत देर हो चुकी थी। जो कुछ उसने कह दिया था उसे तो वापस नहीं लिया जा

सकता था। फिर उसने सोचना शुरू किया कि "उसकी पत्नी कितनी अच्छी थी। कैसे उसने उसे खुद ही ढूँढा था।

कैसे वह उसकी सेवा में अक्सर खड़ी रहती थी। कैसे उसने उसका कितना सारा भला किया था और फिर भी वह अपनी जबान को रोक नहीं सका। अब इसका परिणाम यह होगा कि उसे अब ज़िन्दगी भर बिना पत्नी के ही रहना पड़ेगा।"

यह सोचते सोचते उसका दिल बहुत भारी हो गया और जो नुकसान उसने अपने आप ही अपना कर लिया था उसकी वजह से वह ज़ोर ज़ोर से रोने लगा।

सॉप बोला — "अब और मत रोओ। जो होना होता है वह तो होता ही है। क्या तुम इसलिये दुखी हो कि तुम्हारा अनाज खेत में अभी भी खड़ा हुआ है? जा कर अपने अनाजघर में देखो सारा अनाज वहॉ कटा रखा है। क्या मैं उसे घर ले कर नहीं आया और मैंने उसमें से दाना नहीं निकाला और सब कुछ ठीक से नहीं रखा? अब मुझे वहॉ चले जाना चाहिये जहॉ तुम मुझे सबसे पहले मिले थे।"

यह कह कर वह वहॉ से रेंग गया और मजदूर सारे रास्ते रोता हुआ उसके पीछे पीछे ऐसे चला जैसे कोई मरे हुए के लिये रोता जाता है। जब वे जंगल पहुँचे तो सॉप रुक गया और एक हैज़ल नट के पेड़ के नीचे कुंडली मार कर बैठ गया।

तब उसने मजदूर से कहा — "अब तुम मुझे एक बार चूमो पर ध्यान रखना कि मैं तुम्हें काटूँ नहीं।"

सो उसने उसे एक बार चूमा तो वह एक डाल से जा कर लिपट गया और उससे पूछा — "अब तुम्हें कैसा महसूस हो रहा है?"

वह बोला — "जिस समय मैंने तुम्हें चूमा तो मुझे ऐसा लगा जैसे मुझे वह सब पता चल रहा हो जो इस दुनियॉ में हो रहा हो।"

सॉप बोला — "अब तुम मुझे दूसरी बार चूमो।"

आदमी ने उसे दूसरी बार चूमा तो उसने फिर पूछा — "अब तुम्हें कैसा महसूस हो रहा है?"

आदमी बोला — "इस बार मुझे ऐसा लगा जैसे मैं वे सारी भाषाऐं जानता हूँ जो दुनियॉ भर के लोग बोलते हैं।"

सॉप बोला — "अब तुम मुझे तीसरी बार चूमो पर यह आखिरी बार होगा।"

आदमी ने उसे तीसरी बार चूमा तो सॉप ने फिर पूछा — "अब तुम्हें कैसा महसूस हो रहा है?"

आदमी बोला — "अब मुझे लग रहा है कि जैसे मैं वह सब कुछ जानता हूँ जो धरती के नीचे हो रहा है।"

सॉप बोला — "अब तुम ज़ार के पास जाओ तो वह तुम्हें तुम्हारे ज्ञान के लिये अपनी बेटी दे देगा।" इसके बाद सॉप पेड़ से उतरा और पेड़ के नीचे गायब हो गया। उधर आदमी ज़ार के पास गया और उसकी बेटी से शादी कर ली।

8 बदकिस्मत डैनियल की कहानी[23]

एक बार की बात है कि एक नौजवान था जिसका नाम बदकिस्मत डैन[24] था। वह जहॉ कहीं भी जाता था वह जो कुछ भी करता था वह जिसके लिये भी काम करता था उसका कोई अच्छा परिणाम नहीं निकलता था। वह पानी की तरह से फैल जाता था।

एक दिन वह एक नये आदमी के पास काम करने के लिये गया। उसने कहा — "मैं आपके पास बोये हुए गेहूँ के खेत के एक टुकड़े के लिये पूरे एक साल काम करूँगा।"

उसका मालिक राजी हो गया और उसे काम पर रख लिया गया। उसने अपने खेत में गेहूँ बो दिया और उसका गेहूँ बड़ी तेज़ी से बढ़ने लगा।

जबकि उसके मालिक का गेहूँ अभी डंडी पर ही लगा हुआ था उसका गेहूँ में बाल भी आने लगी थीं। जब उसके मालिक के खेत में गेहूँ पर बालें आयीं तब तक उसका गेहूँ पक चुका था। उसने सोचा कि अब मैं इन्हें कल काट लूँगा।

पर उसी रात एक बादल आया ओला पड़ा और उसका सारा गेहूँ खराब कर गया। यह देख कर डैनियल तो रो पड़ा। वह बोला

[23] The Story of Unlucky Daniel. (Tale No 8)

[24] Dan is the short form of Daniel

"अब मैं किसी दूसरे मालिक के पास जा कर काम करूँगा। तब शायद भगवान मेरी सहायता करें।"

सो वह अब दूसरे मालिक के पास गया। वहाँ जा कर उसने कहा — "मैं आपके पास पूरे एक साल काम करूँगा। अगर आप मुझे घोड़े का वह जंगली बच्चा दे देंगे।" मालिक राजी हो गया और वह वहाँ उसके पास काम करने लगा।

एक साल खत्म होने तक उसने उस जंगली घोड़े को इतनी अच्छी तरह से प्रशिक्षित कर दिया कि उसने उसे एक गाड़ी में जोतने के लायक बना दिया। उसने सोचा — "यह तो बड़ा अच्छा है कि अबकी बार मेरे पास ले जाने के लिये कुछ तो होगा।"

पर उसी रात कुछ भेड़िये अस्तबल में घुस आये और उसके घोड़े को मार गये। डैनियल एक बार फिर रो पड़ा। उसने सोचा कि अब मैं किसी दूसरे मालिक के पास जा कर काम करूँगा। हो सकता है कि वहाँ मेरी किस्मत खुल जाये।

सो वह अब तीसरे मालिक के पास पहुँचा। इस मालिक की कब्र पर एक बड़ा सा पत्थर रखा हुआ था। वह पत्थर वहाँ कहाँ से आया था किसी को नहीं पता था और वह इतना भारी था कि हालाँकि बहुत दिनों से कोशिश की जा रही थी पर कोई उसे हटा नहीं पा रहा था। उसने कहा कि "मैं इस पत्थर के लिये आपके पास एक साल तक काम करूँगा।

मालिक राजी हो गया और उसे रख लिया गया। उसके बाद से ही उस पत्थर पर एक बदलाव आने लगा। उसके ऊपर फूल आने लगे। एक तरफ से वे लाल थे दूसरी तरफ से वे चॉदी के रंग के थे और तीसरी तरफ से वे सुनहरे थे। यह देख कर डैनियल ने सोचा "किसी तरह भी सही यह पत्थर अब मेरा होगा। कोई इसे यहॉ से हिला भी नहीं सकता।"

पर अगले दिन उस पत्थर एक बिजली गिरी और उसे चूर चूर कर दिया। डैनियल फिर से रो पड़ा और दुखी हो गया कि हालॉकि उसने कई साल सेवा की पर भगवान ने उसे फिर से कुछ नहीं दिया। लोगों ने उसे समझाया — "सुनो। तुम इतने बदकिस्मत हो तुम ज़ार के पास क्यों नहीं जाते। वह हम सबके पिता हैं इसलिये वह तुम्हारी भी देखभाल करेंगे।"

उसने उनकी सुनी और वह ज़ार के पास गया। उसने उसे अपने राज दरबार में रख लिया। एक दिन ज़ार ने उससे पूछा — "मैं तुम्हारी प्रशंसा करता हूॅ कि तुम बदकिस्मत हो इसलिये जो तुम्हारी इच्छा हो तुम वह करो। तुमसे ज़्यादा अच्छा उसे करने वाला और कोई नहीं है। जो कुछ तुम करोगे मैं उसके लिये तुम्हें ठीक से पैसे दूॅगा।"

तब ज़ार ने तीन बैरल लिये जिन्हें उसने सोना कोयला और रेत से भरा और डैनियल से कहा — "अब तुम इन्हें देखो और बताओ कि सोना किसमें है।

अगर तुमने यह बता दिया तो मैं तुम्हें ज़ार बना दूँगा। अगर तुमने वह चुना जिसमें कोयला है तो मैं तुम्हें लोहार बना दूँगा। और अगर तुमने वह बैरल चुना जिसमे रेत भरा है तब तुम सचमुच में बहुत ही बदकिस्मत हो। फिर तुमको मेरे राज्य से चले जाना चाहिये पर फिर भी मैं तुम्हें एक घोड़ा और एक जिरहबख्तर साथ ले जाने के लिये दूँगा।"

सो डैनियल को उस जगह पर लाया गया जहाँ वे बैरल रखे थे। वह उनके चारों तरफ घूमा और एक के बाद एक को महसूस करता रहा। फिर एक बैरल पर अपनी उँगली रख कर बोला — "इस बैरल में सोना है।" सो लोगों ने उसे तोड़ा और लो उसमें तो रेत भरा था।

ज़ार बोला — "ठीक है। मुझे अब लग रहा है कि तुम वाकई बहुत ही बदकिस्मत हो। तुम मेरे राज्य से निकल जाओ क्योंकि मुझे तुम जैसे की कोई जरूरत नहीं है।" उसके बाद उसने उसे एक घोड़ा एक जिरहबख्तर और कोज़ैक[25] की एक पोशाक दी और वापस भेज दिया।

वह सारा दिन चलता रहा चलता रहा और दूसरे दिन भी चलता रहा। उसके पास खाने के लिये कुछ भी नहीं था – न उसके अपने खाने के लिये न उसके घोड़े के खाने के लिये। वह तीसरे दिन भी चला। दूर उसे भूसे का एक ढेर दिखायी दिया तो उसने सोचा कि

[25] A member of a people of Ukraine and southern Russia, noted for their horsemanship and military skill.

"यह मेरे लिये नहीं तो कम से कम मेरे घोड़े के लिये तो काफी होगा।"

सो वह उसके पास गया पर जैसे ही वह वहॉ पहुँचा तो वह जल उठा। यह देख कर डैनियल रो पड़ा। तभी उसे किसी के रोने की आवाज सुनायी पड़ी और आवाज आयी "बचाओ बचाओ मुझे बचाओ। मैं जल रहा हूँ।"

वह बोला — "मैं तुम्हें कैसे बचाऊँ जब मैं खुद इसके पास नहीं आ सकता।"

आवाज बोली — "तुम मुझे अपना हथियार दो। मैं उसे पकड़ लूँगा। तब तुम मुझे खींच सकते हो।"

सो उसने अपना हथियार उसकी तरफ आगे बढ़ाया और फिर उस हथियार को खींचा तो एक सॉपिन उसके साथ खिंची चली आयी। वह एक भली सॉपिन था जैसी बस कहानियों में मिलती है। उसने डैनियल से कहा — "क्योंकि तुमने मुझे बचाया है इसलिये तुम मुझे अपने घर ले चलो।"

"मैं तुम्हें घर कैसे ले जा सकता हूँ।"

सॉपिन बोली — "तुम मुझे घोड़े पर ले चलो। जिधर की तरफ भी मैं अपना सिर घुमाऊँ तुम मुझे उसी दिशा में ले चलो।" सो वह उसे अपने घोड़े पर ले चला। चलते चलते वे एक कम्पाउंड में आये जो देखने में ही बहुत सुन्दर था।

वहॉ आ कर वह घोड़े पर से उतरी और उससे बोली — "तुम यहॉ रुको मैं अभी आती हूँ।" ऐसा कह कर वह दरवाजे के नीचे रेंग गयी और वह वहीं खड़ा रहा।

वहॉ खड़े रहते रहते वह बहुत थक गया तो वह फिर रो पड़ा। पर आखिर वह एक बहुत सुन्दर लड़की के रूप में बहुत सुन्दर कपड़े पहन कर बाहर आयी और उसके लिये दरवाजा खोला और कहा — "आओ और अपने घोड़े को भी अन्दर ले आओ। कुछ खा लो और आराम कर लो।"

सो वे अन्दर चले गये। कम्पाउंड में दो फव्वारे लगे थे। उस नाग कन्या ने उनमें से एक फव्वारे में से एक छोटा गिलास पानी लिया उसके चारों तरफ थोड़ी सी ओट्स फैलायी और डैनियल से कहा कि वह अपना घोड़ा वहॉ बॉध दे।

उसने सोचा "यह क्या कह रही है। हमने तीन दिनों से कुछ खाया पिया नहीं है और यह उसे केवल एक मुट्ठी ओट्स और छोटा सा गिलास पानी का दे कर हमारा मजाक उड़ा रही है।"

उसके बाद वे अन्दर मेहमानों के कमरे में गये तो उसने उसे भी एक छोटा सा गिलास पानी का और एक छोटा सा टुकड़ा रोटी का दिया। उसने फिर अपने मन में सोचा "क्या यह सब मेरे जैसे भूखे आदमी के लिये?"

तभी उसने खिड़की में से बाहर देखा तो उसने देखा कि सारा ऑगन ओट्स और पानी से भरा पड़ा है और उसके घोड़े ने पेट भर

कर खा लिया है। तब उसने अपना रोटी का वह छोटा सा टुकड़ा चबाया और थोड़ा सा पानी पिया तो उसे लगा कि उसका पेट तो भर गया है।

नाग कन्या बोली — "क्या तुम्हारा पेट भर गया?"

वह बोला — "हॉ भर गया।"

"तब तुम अब थोड़ी देर के लिये आराम कर लो।"

अगली सुबह जब वह उठा तो नाग कन्या ने कहा — "तुम मुझे अपना घोड़ा दो अपना जिरहबख्तर दो और अपने कपड़े दो और बदले में मैं तुम्हें अपने कपड़े देती हूँ।"

तब उसने डैनियल को अपना हथियार और अपने कपड़े दिये और कहा — "यह तलवार ऐसी है कि अगर तुम इसे बस हिला भी दोगे तो सारे लोग नीचे गिर पड़ेंगे।

और जहॉ तक इस पोशाक का सवाल है जो कोई भी इसे पहनेगा उसे कोई भी नहीं पकड़ पायेगा। अब तुम अपने रास्ते चले जाओ जब तक कि तुम एक सराय तक नहीं पहुँच जाओ।

वहॉ लोग तुम्हें बतायेंगे कि ज़ार एक योद्धा खोज रहा है। तो तुम उसके पास जाना और कहना कि तुम उसका वह काम करना चाहते हो। वहॉ तुम उसकी बेटी से शादी कर लेना पर अपना सच उसे सात साल तक नहीं बताना।"

उसके बाद दोनों ने एक दूसरे से विदा ली और वह चला गया। चलते चलते वह एक सराय में पहुँचा और जब सराय वालों ने उसे

देखा तो वे जान गये कि यह आदमी किसी अजनबी देश से आया है तो उन्होंने उससे कहा — "कुछ अजनबी लोगों ने हमारे ज़ार पर हमला बोल दिया है। वह उसका सामना नहीं कर पा रहा है।

एक बहुत ही ताकतवर अजनबी ने उसके राज्य का काफी हिस्सा जीत लिया है और वह उसकी बेटी को भी उठा कर ले गया है। उसे डर है कि वह मारा जायेगा।"

डैनियल बोला — "अच्छा। तुम मुझे उसके महल का रास्ता बताओ।" सो उन्होंने उसे ज़ार के महल का रास्ता दिखा दिया और डैनियल उसके महल की तरफ चला गया।

जब वह ज़ार के पास आया तो उसने ज़ार से कहा — "मैं इस अजनबी देश पर आपके लिये कब्जा करा दूँगा। मुझे केवल दो कोज़ैक चाहिये पर ये दोनों भी चुने हुए लोग होने चाहिये।"

सो ज़ार के नौकर राज्य भर में घूम कर दो चुने हुए लोगों को ले कर आये और डैनियल ने उन्हें साथ ले कर घास के मैदान में चला गया। वहाँ पहुँच कर उसने उनसे कहा कि वे वहाँ लेट जायें और सो जायें वह उनका पहरा देगा।

जब वे सो गये तो अजनबी देश की फौज वहाँ आयी और डैनियल से कहा कि अगर वह मारामारी नहीं चाहता तो उसे वहाँ से वापस चले जाना चाहिये।

जब डैनियल पीछे नहीं हटा तो उन्होंने अपनी बन्दूकें और तोपें चलानी शुरू कर दीं। उन्होंने इतनी सारी गोलियाँ और गोले चलाये

कि दोनों कोज़ैकों के शरीर उनसे करीब करीब ढक गये। तो डैनियल ने अपनी तलवार हिलायी और भाला चलाया। उन लोगों में से जिन तक डैनियल के भाले नहीं पहुँचे केवल वे ही बच कर भाग सके।

इस तरह से उसने सबको हरा दिया और उनका अनजाना देश जीत लिया। वापस आ कर उसने ज़ार की बेटी से शादी कर ली। वे दोनों अब खुशी से रहने लगे।

पर उस अजनबी देश के सलाहकार ज़ारेवना के कान भरने लगे। वे बोले — "यह कैसा आदमी है जिसे आपने अपने लिये चुन लिया है। यह कौन है कहाँ से आया है। आप पता तो लगायें कि इसकी ताकत कहाँ बसती है ताकि हम इसे मार सकें और आपको बचा सकें।"

यह सुन कर उसने डैनियल से इस बारे में पूछताछ करनी शुरू कर दी तो डैनियल ने उसे बताया कि "मेरी सारी ताकत इन दस्तानों में बसती है।" यह सुन कर ज़ारेवना उसके सोने का इन्तजार करती रही। जब वह सो गया तो उसने उसके दस्ताने उतार लिये और उन्हें अजनबी देश के लोगों को दे दिये।

अगले दिन जब वह शिकार खेलने गया तो उन सलाहकारों ने उसे वहाँ घेर लिया और कई तीर मारे और दस्तानों से मारा पर सब बेकार रहा। तब उसने अपनी तलवार हिलायी और जिस किसी को भी उससे मारा वह जमीन पर गिर पड़ा। उन सबको उसने जेल में बन्द करवा दिया।

पर उसकी पत्नी ने उससे प्यार से फिर पूछा — "तुम मुझे बताओ न कि तुम्हारी ताकत कहॉ बसती है।" अबकी बार वह बोला कि उसकी ताकत उसके जूतों में बसती है।

सो जब वह सो गया तब उसने उसके जूते निकाल कर उन सलाहकारों को दे दिये। उन्होंने उस पर फिर से हमला कर दिया पर उसने फिर से अपनी तलवार हिला कर उन्हें नीचे गिरा दिया। फिर उन्हें जेल में बन्द कर दिया।

तीसरी बार उसकी पत्नी ने उससे प्यार से फिर पूछा — "तुम मुझे बताओ न कि तुम्हारी ताकत कहॉ बसती है।"

अबकी बार वह उसके पूछने से थक गया तो उसने कहा कि मेरी ताकत मेरी तलवार में और मेरी कमीज़ में बसती है। जब तक यह कमीज़ मेरे शरीर पर है कोई मुझे छू भी नहीं सकता।"

कुछ देर तक वह उसे मनाती रही फिर बोली — "तुम जा कर नहा लो और अपने आपको ठीक से साफ कर लो। मेरे पिता भी ऐसे ही किया करते थे।"

वह उसकी बात मानता रहा और जैसे ही उसने अपने कपड़े उतारे और वह नहाने गया तुरन्त ही ज़ारेवना ने उसके कपड़े दूसरे कपड़ों से बदल दिये। और उसकी कमीज़ और तलवार उसके दुश्मनों को दे दी।

जब वह नहा कर बाहर आया तो तुरन्त ही उन्होंने उस पर हमला बोल दिया। उसके टुकड़े टुकड़े कर दिये। टुकड़ों को एक

थैले में भरा उस थैले को घोड़े पर रखा और उसे अपनी मन मर्जी की जगह जाने के लिये छोड़ दिया। घोड़ा बेचारा चलता चला गया और उसी जगह आ पहुँचा जहाँ वह नाग कन्या के साथ रहता था।

जब उसकी मालकिन ने उसे देखा तो उसके मुँह से निकला "कहीं बेचारा डैनियल फिर से किसी जाल में तो नहीं फँस गया।"

तुरन्त ही उसने घोड़े पर से थैला उतारा खोला और उसके सारे टुकड़े जोड़े। उन्हें धो कर साफ किये। एक फव्वारे से उपचार करने वाला पानी लिया और दूसरे से ज़िन्दगी का पानी लिया और उसके सारे शरीर पर छिड़क दिया। पानी छिड़कते ही वह फिर से ज़िन्दा हो कर और तन्दुरुस्त हो कर उठ खड़ा हुआ।

नाग कन्या ने उससे कहा — "क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि तुम उस लड़की से अपना सच सात साल तक मत कहना और तुमने सुना ही नहीं।"

वह वहीं खड़ा रहा एक शब्द भी नहीं बोला। वह फिर बोली — "खैर अब तुम थोड़ा आराम कर लो क्योंकि तुम्हें आराम की बहुत जरूरत है। फिर मैं तुम्हें कोई और चीज़ दूँगी।"

अगले दिन उसने उसे एक जंजीर दी और कहा — "तुम उसी सराय में चले जाओ जहाँ तुम पहले गये थे। अगले दिन सुबह जब तुम नहा रहे होगे तो सराय के मालिक से कहना कि वह तुम्हें इस जंजीर से अपनी पूरी ताकत लगा कर पीटेगा। उसके बाद तुम अपनी

पत्नी के पास चले जाना पर उससे इस बारे में एक शब्द भी नहीं कहना कि तुम्हें क्या हुआ था।"

सो वह उसी सराय में चला गया और रात वहीं गुजारी। अगले दिन सुबह नहाते समय उसने अपनी सराय के मालिक को जंजीर दे कर कहा कि वह उस जंजीर उसकी पीठ पर अपनी पूरी ताकत से मारे। सो जब उसका सिर पानी में डूब गया तब सराय के मालिक ने उसे अपनी पूरी ताकत से मारा।

इसके बाद तो उसके शरीर से एक इतना सुन्दर घोड़ा निकल आया जितना सुन्दर घोड़ा कभी किसी ने देखा नहीं था। सराय का मालिक इस बात से इतना खुश था इतना खुश था कि वह एक ठहरने वाले से छुटकारा पा गया और अब वह किसी दूसरे को वहॉ रहने की जगह दे सकता था।

वह तुरन्त ही घोड़े को मेले में ले गया और उसे बेचने के लिये खड़ा हो गया। वहॉ ज़ार भी मौजूद था सो उसने जब उस घोड़े को देखा तो उससे पूछा कि वह वह घोड़ा कितने में बेचेगा। सराय का मालिक बोला "मुझे पॉच हजार रूबल चाहिये।" ज़ार ने उसे पैसे गिन दिये और घोड़ा ले कर चला गया।

जब वह अपने दरबार में पहुॅचा तो उसने उसे बड़ी शान से अपना नया घोड़ा सबको दिखाया। फिर अपनी बेटी को बुलाया — "आओ बेटी यहॉ आओ। देखो मैंने कितना सुन्दर घोड़ा खरीदा है।"

पर जैसे ही उसकी बेटी ने वह घोड़ा देखा तो बोली — "यह घोड़ा तो बिल्कुल बेकार है। इसे तो यहीं मार दीजिये।"

ज़ार बोला — "अरे मेरी प्यारी बेटी मैं ऐसा कैसे कर सकता हूँ?"

बेटी बोली — "इसे तो आपको जरूर ही मारना है पिता जी।"

सो एक चाकू मँगवाया गया और उसे तेज़ किया गया। तभी दरबार की एक कन्या को उस घोड़े के ऊपर दया आ गयी। वह चिल्लायी — "ओह मेरे प्यारे घोड़े तू कितना अच्छा है और फिर भी तुझे मारा जा रहा है।"

घोड़ा हिनहिनाया और उसके पास गया और उससे कहा — "जब ये मुझे मारें तब तुम मेरे खून की पहली एक बूँद लेना और उसे बागीचे में गाड़ देना।"

उसके बाद उसे काट दिया गया। उस लड़की ने वैसा ही किया जैसा घोड़े ने उससे करने के लिये कहा था। उसने उसके खून की पहली बूँद ली और उसे बागीचे में गाड़ दिया।

उस बूँद से वहाँ एक चैरी का पेड़ उग आया। उसका पहला पत्ता सुनहरा था और उसकी दूसरी पत्ती का रंग उससे भी ज़्यादा सुन्दर था। उसकी तीसरी पत्ती का रंग कोई दूसरा ही रंग था। उसकी हर पत्ती अलग रंग की थी।

एक दिन ज़ार अपने बागीचे में घूमने के लिये आया तो उसकी नजर उस चैरी के पेड़ पर पड़ी तो उसे वह बहुत अच्छा लगा। उसने अपनी बेटी से कहा — "देखो हमारे बागीचे में कितना सुन्दर चैरी का पेड़ है। कौन जाने यह यहॉ कब उगा।"

पर जैसे ही ज़ारेवना ने उसे देखा तो वह बोली — "यह पेड़ तो मेरी बर्बादी है पिता जी इसे तुरन्त ही कटवा दीजिये।"

ज़ार बोला — "पर बेटी यह तो बहुत सुन्दर पेड़ है मैं इसे कैसे कटवा सकता हूँ। यह तो मेरे बागीचे की सुन्दरता है।"

ज़ारेवना बोली — "पिता जी इसे तो कटना ही है यह तो कटेगा ही।"

एक कुल्हाड़ी मॅगवायी गयी और जैसे ही उसे काटने के लिये तैयार हुआ गया कि वही लड़की भागी हुई वहॉ आयी — "ओह मेरे प्यारे चैरी के पेड़, ओ मेरे प्यारे चैरी के पेड़। तुम कितने प्यारे हो। तुम एक घोड़े में से निकले हो और हालॉकि तुम केवल एक दिन के ही हो फिर भी ये लोग तुम्हें गिरा रहे हैं।"

पेड़ बोला — "तुम चिन्ता मत करो। तुम मेरी पहली छीलन उठा लेना और उसे पानी में फेंक देना।"

उसके बाद उन लोगों ने चैरी के पेड़ को काट दिया। उसकी पहली छीलन जो गिरी उसे उस लड़की ने उठा कर पानी में फेंक दिया। उस लकड़ी के टुकड़े से वहॉ एक बहुत सुन्दर नर बतख तैरने लगा। इतना सुन्दर कि बस उसे देखते ही बनता था।

ज़ार शिकार के लिये गया तो उसने वह बतख देखा। वह बतख उसके इतने पास था कि वह उसे अपने हाथ से छू सकता था। ज़ार ने अपने कपड़े उतारे और उसके पीछे पीछे पानी में कूद गया।

बतख भी उसे किनारे से दूर और और दूर ले गया। उसके बाद बतख ज़ार को उस जगह ले गया जहॉ उसने अपने कपड़े उतार कर रखे थे। और जब वह उनके पास आ गया वह एक आदमी में बदल गया और उन कपड़ों को पहन लिया। अब वह डैनियल था।

तब उसने ज़ार से कहा — "तैर कर इधर आओ। तैर कर इधर आओ।"

ज़ार तैर कर उधर गया। पर जब वह वहॉ पहुॅचा तो डैनियल ने उसे मार दिया और उसके कपड़े पहने वह उसके दरबार में पहुॅचा तो सब दरबारियों ने उसका ज़ार की तरह से स्वागत किया।

उसने पूछा — "वह लड़की कहॉ है जो अभी यहॉ थी।"

वे उस लड़की को वहॉ ले कर आये तो डैनियल ने उससे कहा — "अब तक तुम मेरी दूसरी मॉ रही हो और अब तुम मेरी दूसरी पत्नी होगी।"

इस तरह वह उस लड़की के साथ खुशी से रहा पर उसने अपनी पहली पत्नी को जंगली घोड़ों की पूॅछ से बॅधवा कर उसके टुकड़े टुकड़े करवा दिये।

9 एक चिड़िया और एक झाड़ी[26]

एक बार एक चिड़िया एक झाड़ी के ऊपर से उड़ी — "ओ छोटी झाड़ी मुझे थोड़ा सा झूला झुला दो।"

झाड़ी बोली — "नहीं मैं नहीं झुलाऊँगी।"

इस पर चिड़िया नाराज हो गयी। वह एक बकरी के पास गयी और उससे कहा — "तू झाड़ी को खा ले क्योंकि झाड़ी एक भली चिड़िया को झूला नहीं झुलाती।"

बकरी ने कहा — "नहीं मैं नहीं खाऊँगी।"

तब चिड़िया एक भेड़िये के पास गयी और उससे कहा — "भेड़िये भेड़िये तू बकरी को खा ले क्योंकि बकरी झाड़ी को नहीं खाती। क्योंकि झाड़ी एक भली चिड़िया को झूला नहीं झुलाती।"

भेड़िया बोला — "मैं बकरी को नहीं खाता।"

तब चिड़िया लोगों के पास गयी और उनसे कहा — "ओ भले लोगो तुम लोग भेड़िये को मार दो क्योंकि भेड़िया बकरी को नहीं खाता। क्योंकि बकरी झाड़ी को नहीं खाती। क्योंकि झाड़ी एक भली चिड़िया को झूला नहीं झुलाती।"

लोगों ने कहा — "हम तो भेड़िये को नहीं मारते।"

[26] The Sparrow and the Bush. (Tale No 9)

सो चिड़िया टार्टर्स[27] के पास गयी और उनसे कहा — "टार्टर्स ओ टार्टर्स। तुम लोगों को मार दो क्योंकि ये लोग भेड़िये को नहीं मारते। क्योंकि भेड़िया बकरी को नहीं खाता। क्योंकि बकरी झाड़ी को नहीं खाती। क्योंकि झाड़ी एक भली चिड़िया को झूला नहीं झुलाती।"

टार्टर्स ने कहा — "हम लोगों को नहीं मारते।"

लोगों ने कहा — "हम भेड़िये को नहीं मारते।"

भेड़िये ने कहा — "मैं बकरी को नहीं खाता।"

बकरी ने कहा — "मैं झाड़ी को नहीं खाती।

झाड़ी ने कहा — "मैं एक भली चिड़िया को झूला नहीं झुलाती।"

झाड़ी बोली — "तुम आग के पास जाओ क्योंकि टार्टर्स लोगों को नहीं मारते। क्योंकि लोग भेड़िये को नहीं मारते। क्योंकि भेड़िया बकरी को नहीं खाता। क्योंकि बकरी झाड़ी को नहीं खाती। क्योंकि झाड़ी एक भली चिड़िया को झूला नहीं झुलाती।"

पर आग ने भी कहा — "मैं टार्टर्स को नहीं जलाती। तुम पानी के पास जाओ।"

---

[27] Tartars – Tatar, also spelled as Tartar, any member of several Turkic-speaking peoples that collectively numbered more than 5 million in the late 20th century and lived mainly in west-central Russia along the central course of the Volga River. The name Tatar first appeared among nomadic tribes living in northeastern Mongolia and the area around Lake Baikal from the 5th century CE. Unlike the Mongols, these peoples spoke a Turkic language. After various groups of these Turkic nomads became part of the armies of the Mongol conqueror Genghis Khan in the early 13th century, a fusion of Mongol and Turkic elements took place, and the Mongol invaders of Russia and Hungary became known to Europeans as Tatars (or Tartars).

सो चिड़िया पानी के पास गयी पर पानी ने भी कहा — "मैं आग नहीं बुझाता।"

तो चिड़िया बैल के पास गयी। उसने उससे कहा — "बैल बैल। तू चल कर पानी पी ले क्योंकि पानी आग नहीं बुझाता। क्योंकि आग टार्टर्स को नहीं जलाती। क्योंकि टार्टर्स लोगों को नहीं मारते।

क्योंकि लोग भेड़िये को नहीं मारते। क्योंकि भेड़िया बकरी को नहीं खाता। क्योंकि बकरी झाड़ी को नहीं खाती। क्योंकि झाड़ी एक भली चिड़िया को झूला नहीं झुलाती।"

बैल बोला — "मैं पानी को नहीं पीता।"

तब चिड़िया कुल्हाड़ी के पास गयी और उससे कहा कि वह बैल को मारे क्योंकि बैल पानी नहीं पीता। क्योंकि पानी आग नहीं बुझाता। क्योंकि आग टार्टर्स को नहीं जलाती। क्योंकि टार्टर्स लोगों को नहीं मारते।

क्योंकि लोग भेड़िये को नहीं मारते। क्योंकि भेड़िया बकरी को नहीं खाता। क्योंकि बकरी झाड़ी को नहीं खाती। क्योंकि झाड़ी एक भली चिड़िया को नहीं झुलाती।"

कुल्हाड़ी ने कहा — "मैं बैल को नहीं मारती।"

सो चिड़िया कीड़ों के पास गयी और उनसे कहा कि वे कुल्हाड़ी को खा लें क्योंकि कुल्हाड़ी बैल को नहीं मारती। क्योंकि बैल पानी नहीं पीता। क्योंकि पानी आग नहीं बुझाता। क्योंकि आग टार्टर्स को

नहीं जलाती। क्योंकि टार्टर्स लोगों को नहीं मारते। क्योंकि लोग भेड़िये को नहीं मारते।

क्योंकि भेड़िया बकरी को नहीं खाता। क्योंकि बकरी झाड़ी को नहीं खाती। क्योंकि झाड़ी एक भली चिड़िया को झूला नहीं झुलाती।"

कीड़ों ने भी कहा कि वे कुल्हाड़ी को कोई नुकसान नहीं पहुँचायेंगे।

तब चिड़िया एक मुर्गी के पास गयी कि वह कीड़ों को खा ले क्योंकि कीड़े कुल्हाड़ी को नुकसान नहीं पहुँचाते। क्योंकि कुल्हाड़ी बैल को नहीं मारती। क्योंकि बैल पानी नहीं पीता। क्योंकि पानी आग नहीं बुझाता। क्योंकि आग टार्टर्स को नहीं जलाती।

क्योंकि टार्टर्स लोगों को नहीं मारते। क्योंकि लोग भेड़िये को नहीं मारते। क्योंकि भेड़िया बकरी को नहीं खाता। क्योंकि बकरी झाड़ी को नहीं खाती। क्योंकि झाड़ी एक भली चिड़िया को झूला नहीं झुलाती।"

तब चिड़िया एक मादा बाज़ के पास गयी और उससे कहा कि वह मुर्गी को पकड़ ले क्योंकि मुर्गी कीड़ों को नहीं खाती। क्योंकि कीड़े कुल्हाड़ी को खा लें क्योंकि कुल्हाड़ी बैल को नहीं मारती। क्योंकि बैल पानी नहीं पीता। क्योंकि पानी आग नहीं बुझाता। क्योंकि आग टार्टर्स को नहीं जलाती।

क्योंकि टार्टर्स लोगों को नहीं मारते। क्योंकि लोग भेड़िये को नहीं मारते। क्योंकि भेड़िया बकरी को नहीं खाता। क्योंकि बकरी झाड़ी को नहीं खाती। क्योंकि झाड़ी एक भली चिड़िया को झूला नहीं झुलाती।"

तब मादा बाज़ मुर्गी को पकड़ने को दौड़ी।
मुर्गी कीड़ों को खाने दौड़ी।
कीड़े कुल्हाड़ी को खाने दौड़े।

कुल्हाड़ी बैल को मारने दौड़ी।
बैल पानी पीने दौड़ा।
पानी आग बुझाने भागा।
आग टार्टर्स जलाने दौड़ी।

टार्टर्स लोगों को मारने भागे।
लोग भेड़िये को मारने दौड़े।
भेड़िया बकरी को खाने भागा।
बकरी झाड़ी को खाने भागी।
बकरी को आते देख झाड़ी ने एक भली चिड़िया को झूला झुलाया।"

10 बूढ़ा कुत्ता[28]

एक बार एक आदमी था जिसके पास एक कुत्ता था। जब तक वह कुत्ता जवान था तब तक वह बहुत काम का था और बहुत काम करता था। जब वह बूढ़ा हो गया तो उसे घर के बाहर निकाल दिया गया। सो वह वहॉ से चला गया और घर की बाड़ के बाहर जा कर लेट गया।

जब वह वहॉ लेटा हुआ था तो वहॉ एक भेड़िया आया और उससे पूछा — "कुत्ते कुत्ते। क्या बात है कि तुम मुँह लटका कर क्यों बैठे हो।"

कुत्ता बोला — "जब मैं जवान था तब मेरे मालिक ने मेरा खूब इस्तेमाल किया पर अब मैं बूढ़ा हो गया हूँ तो वे मुझे मारते हैं।"

भेड़िया बोला — "मैं तुम्हारे मालिक को खेत में देख रहा हूँ। तुम उसके पास जाओ हो सकता है कि वह तुम्हें कुछ दे दे।"

कुत्ता बोला — "नहीं। मैं नहीं जाऊँगा। वे तो मुझे खेत में घुसने भी नहीं देंगे। वे तो केवल मुझे मारेंगे।"

भेड़िया बोला — "कुत्ते। मुझे अफसोस है पर मैं तुम्हारे लिये तुम्हारी ज़िन्दगी आसान बनाना चाहता हूँ। मुझे दिखायी दे रहा है कि तुम्हारी मालकिन ने अपने बच्चे को गाड़ी के नीचे लिटा दिया है। मैं उसे उठा कर भाग लूँगा। तुम मेरे पीछे भौंकते हुए भागना। मुझे

[28] The Old Dog. (Tale No 10)

मालूम है कि अब तुम्हारे दॉत नहीं हैं तुम मुझे जितनी ज़ोर से काट सकते हो काटना ताकि तुम्हारी मालकिन तुम्हें यह करते हुए ठीक से देख सके।

सो भेड़िया उस गाड़ी के पास गया बच्चे को उठाया और भाग लिया। कुत्ता भौंकता हुआ उसके पीछे भागा और उसके पास पहुॅच कर उसे काटने लगा।

कुत्ते की मालकिन ने यह देखा तो रोती चिल्लाती हुई घास इकट्ठी करने वाला यन्त्र[29] ले कर उसके पीछे दौड़ी — "देखिये यह भेड़िया मेरे बच्चे को ले कर भाग गया है। गैब्रील देखो न भेड़िया मेरे बच्चे को ले गया।"

मालिक ने जब यह सुना तो वह भी भेड़िये के पीछे भागा और बच्चे को उससे छुड़ा लिया। फिर उसने कुत्ते की तरफ देखा तो बोला — "ओ मेरे बहादुर कुत्ते। तुम बूढ़े और बिना दॉत के जरूर हो पर तुम अपने मालिक के बच्चे को किसी भेड़िये को ले कर नहीं जाने दोगे।"

उस दिन के बाद से मालिक ने कुत्ते को बहुत अच्छी तरह से खाना देना शुरू कर दिया।

[29] Translated for the word "Harrow" – Anagricultural implement consisting of a heavy frame set with teeth or tines which is dragged over ploughed land to break up clods, remove weeds, and cover seed.

11 लोमड़ी और बिल्ला[30]

एक बार की बात है कि एक जंगल में एक लोमड़ी रहती थी। और उस लोमड़ी के पास रहता था एक आदमी। उस आदमी के पास था एक बिल्ला जो अपनी जवानी में एक बहुत अच्छा चूहा पकड़ने वाला था पर अब वह बूढ़ा हो गया था और उसकी ऑखों से उसे दिखायी भी कम देता था।

आदमी उस बिल्ले को अब बिल्कुल नहीं चाहता था पर वह उसे मारना भी नहीं चाहता था। एक दिन वह उसे जंगल में ले गया जहॉ वह उससे खो गया।

तो लोमड़ी उस बिल्ले के पास आयी और उससे बोली — "हलो मिस्टर शैगी मैथ्यू। आप कैसे हैं? आप यहॉ कैसे?"

बिल्ला बोला — "बड़े अफसोस की बात है कि मेरा मालिक मुझे तब तक बहुत प्यार करता था जब तक मैं काट सकता था पर अब क्योंकि मैं काट नहीं सकता और मैंने अब चूहे पकड़ने भी छोड़ दिये हैं।

हालॉकि मैं कभी बहुत सारे चूहे पकड़ लिया करता था तो अब मेरा मालिक मुझे पसन्द तो नहीं करता पर मारना भी नहीं चाहता सो वह मुझे जंगल में छाड़ गया है जहॉ मैं बड़ी बदकिस्मत मौत मरूॅगा।"

[30] The Fox and the Cat. (Tale No 11)

लोमड़ी बोली — "अरे मेरे प्यारे बिल्ले नहीं। ऐसा नहीं सोचते। तुम मुझ पर छोड़ दो। मैं तुम्हें तुम्हारा रोज का खाना दिलवाने में तुम्हारी सहायता करूँगी।"

बिल्ला बोला — "अरे मेरी छोटी बहिन लोमड़ी तुम तो बहुत अच्छी हो।" और लोमड़ी ने बिल्ले के लिये एक छोटा सा घर बनवा दिया और उसके चारों तरफ एक बागीचा बनवा दिया ताकि वह उसमें घूम सके।

एक दिन एक खरगोश आदमी की बन्दगोभी चुराने के लिये आया। वह बोलने लगा "कीं कीं कीं"। आवाज सुन कर बिल्ले ने खिड़की में से अपना मुँह बाहर निकाला तो देखा कि बाहर तो खरगोश है।

बिल्ला अपने पिछवाड़े पर बैठ गया और अपनी पूँछ ऊँची कर ली और बोला "फर्रर्रर्र"। यह आवाज सुन कर खरगोश डर गया और वहाँ से भाग गया और यह बात भालू भेड़िये और जंगली सूअर से जा कर कही।

भालू बोला — "तुम चिन्ता मत करो खरगोश। हम चारों एक दावत देंगे जिसमें लोमड़ी और बिल्ले को भी बुलायेंगे। देखो मैं आदमी के घर से शराब चुरा लाऊँगा और तुम और मिस्टर भेड़िया उसका मक्खन का बर्तन चुरा लाना।

और तुम मिस्टर जंगली सूअर उसके फलों के पेड़ उखाड़ लाना। और मिस्टर खरगोश तुम जा कर बिल्ले और लोमड़ी को न्यौता दे कर आओ।"

सो उन्होंने सब कुछ तैयार कर लिया जैसा कि भालू ने कहा था। खरगोश मेहमानों को न्यौता देने दौड़ गया। वह खिड़की के नीचे आया और बोला हम आपकी छोटी लेडी लोमड़ी और मिस्टर शैगी मैथ्यू को अपने घर खाने के लिये न्यौता देने आये हैं।" यह कह कर वह वहॉ से भाग गया।

जब वह भालू के पास पहुॅचा तो भालू ने कहा "अरे तुम्हें तो उनसे अपनी अपनी चम्मचें लाने के लिये कहना था।"

खरगोश बोला — "उफ़ मेरा दिमाग भी कैसा है अगर मैं भूला नहीं तो।" कह कर वह फिर से उन्हें न्यौता देने भाग गया।

वह फिर खिड़की पर पहुॅचा और लोमड़ी से बोला — "अपनी अपनी चम्मचें लाने का ध्यान रखना।"

लोमड़ी बोली — "ठीक है।"

सो बिल्ला और लोमड़ी दोनों खरगोश के घर दावत खाने चले। जब बिल्ले ने वहॉ सूअर का मॉस देखा तो वह अपने पिछवाड़े पर बैठ गया और अपनी पूॅछ ऊपर कर ली और अपनी पूरी ताकत से चिल्लाया "म्याऊॅ म्याऊॅ।"

पर उनको लगा कि वह बोला "मा लो मा लो"।

भालू जो दूसरे जानवरों के साथ पीछे छिपा था बोला — "क्या। यहॉ हम चार एक साथ इकट्ठा हैं और यह सूअर के चेहरे वाला बिल्ला कह रहा है कि हम कम हैं। यह बिल्ला तो पता नहीं कितना बड़ा राक्षस जैसा होगा जिसकी इतनी ज़्यादा भूख होगी।

सो वे चारों डर गये और वहॉ से भाग गये। भालू एक पेड़ पर चढ़ गया और दूसरे जानवर भी जहॉ जहॉ छिप सकते थे जा कर छिप गये।

पर जब बिल्ले ने भालू की मूँछें पेड़ के पीछे से झॉकती देखीं तो उसने सोचा कि वह कोई चूहा है। तो वह फिर से अपने पिछवाड़े पर बैठ गया और चिल्लाया "फ्ट फ्ट फ्ट फ्ररर्रर्र"।

यह आवाज सुन कर तो वे सब और भी ज़्यादा डर गये। सूअर और दूर किसी झाड़ी में चला गया। भेड़िया एक ओक के पेड़ के पीछे छिप गया। भालू उस पेड़ पर से उतर कर एक और बड़े पेड़ पर चढ़ गया। और खरगोश तो वहॉ से बिल्कुल ही भाग गया।

पर बिल्ला वहॉ सारी अच्छी अच्छी चीज़ों के बीच खड़ा रहा। वह सूअर का सारा मॉस खा गया। छोटी लोमड़ी सारा शहद खा गयी। और वे वहॉ खाते रहे खाते रहे जब तक उनका पेट नहीं भर गया। फिर वे अपने पंजे चाटते चाटते वहॉ से चले गये।

12 भूसे का बैल[31]

एक बार की बात है कि एक समय में एक बूढ़ा और एक बुढ़िया रहते थे। बूढ़ा खेतों में काम करता था जबकि बुढ़िया घर बैठ कर रुई कातती थी। वे लोग इतने गरीब थे कि वे कुछ भी नहीं बचा पाते थे। इनकी सारी कमाई केवल खाने में ही चली जाती और जब वह खरीद लिया जाता तो फिर तो कुछ भी नहीं बचता।

आखिर बुढ़िया के दिमाग में एक बहुत अच्छा विचार आया। वह बोली — "देखो प्रिय। तुम मुझे भूसे का एक बैल बना दो और उसके ऊपर तारकोल लगा दो।"

बूढ़ा बोला — "यह तुम क्या बेवकूफी की बात कर रही हो? ऐसे बैल का क्या फायदा?"

बुढ़िया बोली — "नहीं बस तुम मुझे ऐसा एक बैल बना दो। मुझे मालूम है कि मुझे क्या करना है।"

अब वह बेचारा बूढ़ा क्या करता। वह अपने काम पर लग गया और भूसे का एक बैल बना दिया और उसे सारा का सारा तारकोल से ढक दिया।

रात गुजर गयी और सुबह सवेरे बुढ़िया ने अपनी तकली ली और अपने बैल को घास के मैदान में चराने के लिये ले चली।

[31] The Straw Ox. (Tale No 12)

वह खुद तो एक पहाड़ी के पीछे बैठ गयी और अपनी रुई कातने लगी और बैल से कहती रही — "ओ बैल। चरते रहो जब तक मैं रुई कात रही हूँ। चरते रहो जब तक मैं रुई कात रही हूँ।"

जब वह रुई कात रही थी तो उसका सिर नीचे लटक गया और उसे झपकियाँ आने लगीं। जब वह झपकियाँ ले रही थी तो वहाँ के घने अँधेरे जंगल में से पाइन के पेड़ों के पीछे से एक भालू दौड़ता हुआ आया और आ कर भूसे के बैल से बोला — "तुम कौन हो मुझे बताओ मुझसे बोलो।"

बैल बोला — "मैं एक तीन साल की बिना बच्चे वाली गाय[32] हूँ। मैं भूसे की बनी हुई हूँ और मेरे ऊपर तारकोल लिपटा हुआ है।"

भालू बोला — "भूसे से भरी हुई और तारकोल लिपटी हुई। मुझे कुछ भूसा और तारकोल दो ताकि में अपने उखड़े हुए बालों को ठीक से लगा सकूँ।"

बैल बोला — "ले लो थोड़ा सा ले लो।" यह सुनते ही भालू उसके ऊपर गिर पड़ा और उसका तारकोल नोचने लगा। नोचते नोचते वह उसमें अपने दाँत भी गड़ाने लगा जब तक उसे यह पता नहीं चल गया कि वह उसका अब कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

उसने फिर उसमें से दाँत निकालने चाहे पर कोई फायदा नहीं। बैल उसे खींच कर पता नहीं कहाँ ले गया।

[32] Translated for the word "Heifer"

उसके बाद बुढ़िया की ऑख खुल गयी तो उसे अपना बैल कहीं दिखायी नहीं दिया। "उफ़। मैं बुढ़िया भी कितनी बेवकूफ हूॅ। हो सकता है कि वह घर चला गया हो।"

सो उसने अपनी तकली उठायी और बोर्ड उठाया उन्हें अपने कन्धे पर डाला और जल्दी जल्दी घर चल दी। उसने देखा कि उसका बैल तो एक भालू को घसीटता हुआ उनके घर की बाड़ तक ले आया है।

तो वह चिल्ला पड़ी — "प्रिय देखो हमारा बैल एक भालू ले कर आ गया है। तुम जल्दी बाहर आओ और इसे मार दो।" बूढ़ा तुरन्त ही कूद कर बाहर आया भालू को मार डाला और बॉध कर नीचे वाले कमरे में फेंक दिया।

अगले दिन सुबह बहुत सवेरे जब तक रोशनी भी नहीं हुई थी बुढ़िया ने फिर से अपनी तकली ली और बैल लिया और उसे घास के मैदान में चराने चल दी। वह खुद एक टीले पर बैठ गयी और बैल को चरने के लिये घास के मैदान में छोड़ दिया।

वहॉ वह रुई कातने लगी और बैल से कहने लगी — "ओ बैल। चरते रहो जब तक मैं रुई कात रही हूॅ। चरते रहो जब तक मैं रुई कात रही हूॅ।"

जब वह रुई कात रही थी तो उसका सिर नीचे झुकने लगा और उसे झपकियॉ आने लगीं। जब वह झपकियॉ ले रही थी तो वहॉ के घने अॅधेरे जंगल में से पाइन के पेड़ों के पीछे से एक भूरा भेड़िया

दौड़ता हुआ आया और आ कर भूसे के बैल से बोला — "तुम कौन हो मुझे बताओ मुझसे बोलो।"

बैल बोला — "मैं एक तीन साल की बिना बच्चे वाली गाय हूँ। मैं भूसे की बनी हुई हूँ और मेरे ऊपर तारकोल लिपटा हुआ है।"

भूरा भेड़िया बोला — "भूसे से भरी हुई और तारकोल लिपटी हुई। तो मुझे कुछ तारकोल दो ताकि कुत्ते और उनके बच्चे मुझे काट न सकें।"

बैल बोला — "ले लो थोड़ा सा ले लो।" यह सुनते ही भूरा भेड़िया उसके ऊपर टूट पड़ा और उसका तारकोल नोचने लगा। नोचते नोचते वह उसमें अपने दाँत भी गड़ाने लगा जब तक उसे यह पता नहीं चल गया कि वह उसका अब कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

उसने फिर उसमें से दाँत निकालने चाहे पर कोई फायदा नहीं। वह अपने दाँत उसमें से बाहर नहीं निकाल सका। बैल उसे खींच कर पता नहीं कहाँ ले गया।

जब बुढ़िया की आँख खुली तो उसने देखा कि उसका बैल तो वहाँ नहीं है। उसने सोचा कि शायद वह घर गया होगा सो उसने अपनी तकली उठायी बोर्ड उठाया उन्हें कन्धे पर डाला और घर चल दी। जब वह घर पहुँची तो देख कर आश्चर्यचकित रह गयी कि उसका बैल तो भूरे भेड़िये को लिये हुए घर पर खड़ा था। उसने अपने पति से कहा कि वह भेड़िये को भी नीचे वाले कमरे में फेंक दे।

तीसरे दिन बुढ़िया फिर से अपने बैल को घास के मैदान में चराने के लिये ले गयी। वह एक बड़े से टीले के पास बैठ गयी और सो गयी। इस बीच एक लोमड़ा आया और बैल से पूछा "तुम कौन हो मुझे बताओ मुझसे बोलो।"

बैल बोला — "मैं एक तीन साल की बिना बच्चे वाली गाय हूँ। मैं भूसे की बनी हुई हूँ और मेरे ऊपर तारकोल लिपटा हुआ है।"

"अच्छा। तो तुम तारकोल की बनी हुई हो तो थोड़ा सा तारकोल मुझे भी दे दो ताकि मैं उसे अपने शरीर पर मल कर मैं अपने आपको कुत्तों और उनके बच्चों से बचा सकूँ।"

बैल बोला — "ले लो थोड़ा सा तुम भी ले लो।" यह सुनते ही लोमड़ा उसके ऊपर गिर पड़ा और उसका तारकोल नोचने लगा। नोचते नोचते वह उसमें अपने दाँत भी गड़ाने लगा जब तक उसे यह पता नहीं चल गया कि वह उसका अब कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

उसने फिर उसमें से दाँत निकालने चाहे पर कोई फायदा नहीं। लोमड़ा उस बैल में से अपने दाँत नहीं निकाल सका। बैल उसे खींच कर पता नहीं कहाँ ले गया।

जब बुढ़िया की आँख खुली तो उसने देखा कि उसका बैल तो वहाँ नहीं है। उसने सोचा कि शायद वह घर गया होगा सो वह घर चल दी। जब वह घर पहुँची तो देख कर आश्चर्यचकित रह गयी कि उसका बैल तो लोमड़े को लिये हुए घर पर खड़ा था। उसने अपने पति से कहा कि वह लोमड़े को भी नीचे वाले कमरे में फेंक दे।

इसके बाद इसी तरह से बुढ़िया ने खरगोश को भी पकड़ा।

जब बूढ़े ने इन सबको सुरक्षित पकड़ लिया तब वह नीचे वाले कमरे के सामने वाली बैन्च पर बैठ गया और अपना चाकू तेज़ करने लगा। यह देख कर भालू बोला — "बाबा आप यह चाकू किसके लिये तेज़ कर रहे हैं।"

बूढ़ा बोला — "तुम्हारी खाल निकालने के लिये ताकि मैं उससे अपने और अपनी पत्नी के लिये एक एक कोट बना सकूँ।"

भालू बोला — "नहीं बाबा नहीं। मेहरबानी कर के मेरी खाल मत निकालो। अगर आप मुझे छोड़ देंगे तो मैं आपके लिये बहुत सारा शहद ला कर दूँगा।"

बूढ़ा बोला — "ठीक है। पर ध्यान रहे कि तुम मुझे ला कर दोगे।" कह कर उसने भालू को खोल दिया और उसे वहाँ से जाने दिया। वह फिर से बैन्च पर बैठ गया और फिर से अपना चाकू तेज़ करने लगा।

इस बार भेड़िये ने पूछा — "बाबा आप यह चाकू किसके लिये तेज़ कर रहे हैं।"

बूढ़ा बोला — "तुम्हारी खाल निकालने के लिये ताकि मैं उससे अपने लिये ठंड के लिये एक टोपी बना सकूँ।"

भेड़िया बोला — "नहीं बाबा नहीं। मेहरबानी कर के मेरी खाल मत निकालो। अगर आप मुझे छोड़ देंगे तो मैं आपके लिये बहुत सारी छोटी छोटी भेड़ें ला कर दूँगा।"

बूढ़ा बोला — "ठीक है। पर ध्यान रहे कि तुम मुझे ला कर दोगे।" कह कर उसने भेड़िये को खोल दिया और उसे वहॉ से जाने दिया। वह फिर से बैन्च पर बैठ गया और फिर से अपना चाकू तेज़ करने लगा।

इस बार लोमड़े ने पूछा — "बाबा आप यह चाकू किसके लिये तेज़ कर रहे हैं।"

बूढ़ा बोला — "तुम्हारी खाल निकालने के लिये। छोटे छोटे लोमड़ों की खालें बहुत मुलायम होती हैं और वे कौलर और कफ़ बनाने के लिये बहुत अच्छी होती हैं इसलिये मैं उनके लिये तुम्हारी खाल निकालना चाहता हूॅ।"

लोमड़ा बोला — "नहीं बाबा नहीं। मेहरबानी कर के मेरी खाल मत निकालो। अगर आप मुझे छोड़ देंगे तो मैं आपके लिये बहुत सारी मुर्गियॉ और बतखें ला कर दूॅगा।"

बूढ़ा बोला — "ठीक है। पर ध्यान रहे कि तुम मुझे ला कर दोगे।" कह कर उसने लोमड़े को खोल दिया और उसे वहॉ से जाने दिया। वह फिर से बैन्च पर बैठ गया और फिर से अपना चाकू तेज़ करने लगा।

अब वहॉ खरगोश अकेला रह गया।

बूढ़ा अब खरगोश के लिये अपना चाकू तेज़ कर रहा था। खरगोश ने पूछा — "बाबा अब आप यह चाकू किसके लिये तेज़ कर रहे हैं।"

बूढ़े ने जवाब दिया — "छोटे खरगोशों की खाल बहुत ही मुलायम होती है। मैं ठंड में तुम्हारी खाल के दस्ताने बना कर पहनूँगा।"

खरगोश बोला — "नहीं बाबा नहीं। मेहरबानी कर के मेरी खाल मत निकालो। अगर आप मुझे छोड़ देंगे तो मैं आपके लिये बहुत सारी फूल गोभी ला कर दूँगा।"

बूढ़ा बोला — "ठीक है। पर ध्यान रहे कि तुम मुझे वह ला कर दोगे।" कह कर उसने खरगोश को खोल दिया और उसे वहाँ से जाने दिया।

उसके बाद वे सोने चले गये लेकिन बहुत सुबह सवेरे ही जब न तो अँधेरा था न उजाला उन्हें कुछ शोर सुनायी दिया तो बुढ़िया बूढ़े से बोली देखो कोई दरवाजा खुरच रहा है। देखो बाहर कौन है। बूढ़ा बाहर गया तो उसने देखा कि भालू शहद की मक्खी का पूरा छत्ता लिये खड़ा है। बूढ़े ने भालू से वह छत्ता ले कर रख लिया और फिर सोने चला गया।

वह अभी लेटा ही था कि फिर से कुछ शोर मचा तो बुढ़िया ने फिर कहा — "देखो न बाहर कौन है।"

बूढ़ा फिर बाहर देखने गया तो अबकी बार वहाँ भेड़िया खड़ा था और उसके साथ बहुत सारी भेड़ें थीं। उसने उन भेड़ों को अन्दर किया ही था कि तभी लोमड़ा वहाँ बहुत सारी मुर्गियाँ और बतखें ले

कर आ गया। और उसके तुरन्त बाद ही खरगोश बन्द गोभियॉ केल के पत्ते और कई तरह की सब्जियॉ ले कर आ गया।

बूढ़ा और बुढ़िया अपनी इस योजना से बहुत खुश थे। अब उन्हें किसी चीज़ की जरूरत नहीं थी। जहॉ तक भूसे के बैल का सवाल था वह बाहर धूप में रखा रहा जब तक वह वहॉ रखा रखा चूर चूर नहीं हो गया।

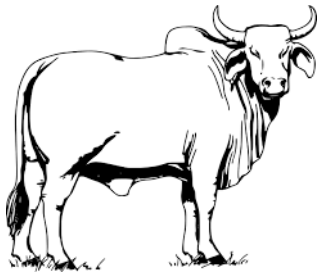

13 सुनहरा जूता[33]

एक बार की बात है कि एक बूढ़ा और बुढ़िया थे। बूढ़े की एक बेटी थी और बुढ़िया की एक बेटी थी। बुढ़िया ने बूढ़े से कहा — "जाओ और अपनी बेटी के लिये एक बिना बच्चे वाली गाय[34] खरीद लाओ ताकि उसके पास उसकी देखभाल का कोई तो काम हो।" सो बूढ़ा गया और बाजार से एक बिना बच्चे वाली गाय खरीद लाया।

बुढ़िया ने अपनी बेटी को तो बहुत बिगाड़ कर रखा हुआ था पर वह बूढ़े की बेटी को अक्सर ही मारती रहती। इसके बावजूद बूढ़े की बेटी बहुत अच्छी और मेहनत करने वाली लड़की थी जबकि बुढ़िया की बेटी बहुत ही आलसी थी। वह अपने हाथ अपनी गोद में रख कर बैठे रहने के सिवाय और कुछ नहीं करती थी।

एक दिन बुढ़िया ने बूढ़े की बेटी से कहा — "देख ओ कुत्ते की बेटी। गाय को बाहर चराने के लिये ले जा। और ये दो गठरी रुई है इन्हें साफ कर के शाम तक कात लाना।" लड़की ने रुई की दोनों गठरियॉ उठायीं और गाय ले कर उसे चराने के लिये चल दी।

सो गाय तो चरने लगी और लड़की बैठ कर रोने लगी। गाय ने उसे रोते देखा तो उससे पूछा — "प्यारी बेटी तुम यहॉ बैठी बैठी क्यों रोती हो?"

---

[33] The Golden Slipper. (Tale No 13)

[34] Translated for the word "Heifer"

लड़की बोली — "मुझे अफसोस है। मैं क्यों न रोऊँ। मेरी सौतेली मॉ ने मुझे ये दो गठरी रुई दी है और इसे साफ कर के धुन कर कात कर धो कर कपड़ा बुन कर शाम को लाने के लिये कहा है।"

गाय बोली — "दुखी मत हो। सब कुछ ठीक हो जायेगा। तुम सोने के लिये लेट जाओ।"

सो वह लड़की सोने के लिये लेट गयी और सो गयी। जब वह सो कर उठी तो उसने देखा कि सारी रुई साफ हो चुकी थी कत चुकी थी और उसका कपड़ा बुन कर धोया जा चुका था।

तब वह गाय और कपड़े को ले कर घर चली गयी और कपड़ा ले जा कर अपनी सौतेली मॉ को दे दिया। बुढ़िया ने उसे ले लिया और छिपा कर रख दिया ताकि किसी को यह पता न चल सके कि उसे बूढ़े की बेटी ले कर आयी थी।

अगले दिन उसने अपनी बेटी से कहा — "प्यारी बेटी। जाओ तुम गाय को बाहर ले जा कर चरा लाओ। और देखो यह थोड़ी सी रुई है जिसे तुम साफ कर के कात कर के या जैसे भी तुम चाहो कर के इसे शाम को घर ले आना।

वह गाय और रुई ले कर गाय चराने चली गयी। वहॉ जा कर उसने गाय को तो चरने भेज दिया और खुद वह सो गयी। शाम को वह गाय चरा कर घर ले आयी और रुई ला कर अपनी मॉ को दे दी और बोली — "ओह मम्मी सारा दिन मेरा सिर दर्द करता रहा। गर्म

भी बहुत था। मैं रुई को गीला करने के लिये नाले पर भी नहीं जा सकी।"

उसकी मॉ बोली — "कोई बात नहीं बेटी। तुम लेट जाओ और सो जाओ। यह काम तुम फिर किसी और दिन कर लेना।"

अगले दिन उसने बूढ़े की बेटी को फिर से बुलाया — "उठ ओ कुतिया। जा और गाय को चरा ला। और यह एक गट्ठर रुई का है जिसे तुझे साफ करना है कातना है और उसका कपड़ा बुन कर साफ कर के लाना है।" लड़की ने वह रुई का गट्ठर लिया और गाय को चराने के लिये चल दी।

गाय तो घास चरने लगी और लड़की बेचारी एक विलो के पेड़ के नीचे बैठ गयी। उसने अपनी रुई एक तरफ को रख दी और बहुत ज़ोर ज़ोर से रोने लगी।

उसे रोता देख कर गाय उसके पास आयी और उससे पूछा — "प्यारी बेटी तुम क्यों रोती हो?"

लड़की बोली — "मैं क्यों न रोऊॅ।" कह कर उसने सारी बात गाय को बता दी।"

गाय बोली — "तुम दुखी न हो। सब ठीक हो जायेगा। तुम लेट कर आराम से सोओ।" सो वह लेट गयी और तुरन्त ही सो गयी। जब वह शाम को उठी तो उसने देखा कि उस रुई का तो कपड़ा बन चुका था ताकि उसकी तुरन्त ही कमीज़ बनायी जा सकती

थी। वह गाय को घर ले गयी और कपड़ा ले जा कर अपनी सौतेली मॉ को दे दिया।

यह देख कर बुढ़िया अपने मन में सोचने लगी "क्या बात है कि इस कुत्ते के बच्चे की बेटी ने अपना काम समय से खत्म कर लिया। मुझे मालूम है कि जरूर ही इस गाय ने इसका काम किया होगा। पर मैं इस पर रोक लगाने वाली हूॅ।"

वह बूढ़े के पास गयी और उससे कहा कि वह इस गाय को मरवा दे क्योंकि तेरी यह बेटी फिर ज़रा सा भी काम नहीं करती। बस यह गाय को चराने के लिये बाहर चली जाती है। वहॉ यह कुछ नहीं करती बस सारे दिन सोती रहती है।"

बूढ़ा बोला — "ठीक है मैं इसे मारे देता हूॅ।"

पर बूढ़े की बेटी ने यह सब कुछ सुन लिया। वह बागीचे में चली गयी और ज़ोर ज़ोर से रोने लगी। उसका रोना सुन कर गाय उसके पास आयी और उससे पूछा — "मेरी बच्ची क्यों रोती हो?"

लड़की बोली — "मैं क्यों न रोऊॅ जबकि वे तुझे मारना चाहते हैं।"

गाय बोली — "तुम चिन्ता न करो सब ठीक हो जायेगा। जब वे लोग मुझे मार दें तो तुम अपनी सौतेली मॉ से कहना कि वह तुम्हें मेरी ऑतें साफ करने के लिये दे दें।

उन ऑतों में तुम्हें एक दाना मिलेगा जिसे तुम बो देना। उससे विलो का एक पेड़ उग आयेगा। फिर जो कुछ भी तुम्हें चाहिये तुम

उस विलो के पेड़ से मॉग लेना। तुम्हारी सब इच्छाऐं पूरी हो जायेंगी।"

उसके पिता ने गाय को मार डाला। लड़की ने अपनी सौतेली मॉ से उसकी ऑतें धोने की इच्छा प्रगट की तो वह बोली — "जैसे मेरे पास कोई और है जो यह काम करेगा।"

सो उसने उसे धोने के लिये वे ऑतें दे दीं। ऑतें धोते समय उसे उनमें एक दाना मिल गया। उसने वह दाना अपने घर के सामने बो दिया।

अगले दिन जब वह सो कर उठी तो उसके घर के सामने उस दाने से एक विलो का पेड़ उग आया था। विलो के पेड़ के नीचे पानी का एक स्रोत भी था। वैसा शुद्ध और साफ पानी गॉव भर में कहीं नहीं था। वह बर्फ की तरह से ठंडा और साफ था।

जब रविवार आया तो सौतेली मॉ ने अपनी प्रिय बेटी को सजाया और चर्च ले गयी। पर बूढ़े की बेटी से उसने कहा — "तू चौका चूल्हा देख। आग को ठीक से जला कर रखना और खाना बना कर रखना। सारे घर की सफाई कर के रखना।

अपनी सबसे अच्छी फ्राक पहन कर रखना और कपड़े धो कर रखना। तब तक मैं चर्च से लौट कर आती हूॅ। और अगर तूने ये सब काम खत्म नहीं किये तो मैं तुझे मार दूॅगी।"

सो बुढ़िया और उसकी बेटी तो चर्च चले गये और बूढ़े की तेज़ बेटी ने चूल्हे में आग जलायी और खाना तैयार किया। फिर वह

विलो के पेड़ के पास पहुँची और वहाँ जा कर बोली — "ओ विलो के पेड़ ओ विलो के पेड़। अपनी छाल में से निकल कर आ ओ लेडी अन्ना, जब मैं तुझे पुकारूँ।"

यह सुनते ही विलो के पेड़ ने अपना कर्तव्य निभाया। उस पेड़ ने अपने सारे पत्ते हिलाये और फिर उसमें से एक लड़की निकल कर बाहर आयी और बोली — "मेरी प्यारी छोटी लेडी। बोलो मेरे लिये क्या आज्ञा है।"

लड़की बोली — "मुझे एक बहुत सुन्दर पोशाक दो और मुझे एक घोड़ा गाड़ी दो क्योंकि मुझे भगवान के घर यानी कि चर्च जाना है।" तुरन्त ही उसके लिये सिल्क और साटिन की पोशाक आ गयी और एक घोड़ा गाड़ी आ गयी। उसके पैर में सुनहरे जूते थे। और वह चर्च चली गयी।

जब वह चर्च पहुँची तो वहाँ बहुत कुछ करने को था। उसे देख कर बहुत सारे लोग बोले — "ओह ओह ओह। यह कौन है। क्या यह कोई राजकुमारी है या फिर यह कोई रानी है। इसके जैसी तो हमने पहले कभी देखी नहीं।"

इत्तफाक से नौजवान ज़ारेविच[35] भी वहाँ मौजूद था। जब उसने उसे देखा तो उसका तो उसे देख कर दिल ही धड़कने लगा। वह तो उसके ऊपर से अपनी आँखें ही नहीं हटा सका। वहीं का वहीं खड़ा रह गया। सारे कप्तान और दरबारी लोग उसकी तारीफ कर रहे थे।

[35] Tzarevich – prince in Russian language

वे सब उसे देखते ही उससे प्यार करने लगे। पर वह थी कौन इसका तो उन्हें पता ही नहीं था।

जब चर्च में पूजा खत्म हो गयी ये वह उठी गाड़ी में बैठी और घर आ गयी। घर आने पर उसने अपने बढ़िया कपड़े उतारे अपने फटे पुराने कपड़े फिर से पहने और खिड़की वाले कोने में बैठ कर चर्च से आने वालों को देखने लगी।

उसकी सौतेली मॉ भी चर्च से वापस आयी। उसने उससे पूछा — "क्या खाना तैयार है?"

"हॉ तैयार है।"

"क्या तूने कमीज़ें सिल दीं?"

"हॉ मैंने कमीज़ें भी सिल दीं।"

उसके बाद वे सब खाना खाने बैठे तो वे इस बात का वर्णन करने लगीं कि आज उन्होंने चर्च में कितनी सुन्दर लड़की देखी। बुढ़िया बोली — "ज़ारेविच तो बजाय अपनी प्रार्थना करने के उसे ही सारा समय देखता रहा। वह लग ही इतनी अच्छी रही थी।"

उसके बाद उसने बूढ़े की बेटी से कहा — "जहॉ तक तेरा सवाल है ओ आलसिन। तूने कमीज़ें तो सिल दी हैं और धो भी दी हैं पर तू तो गन्दी ही है।"

अगले रविवार सौतेली मॉ ने चर्च के लिये फिर से अपनी बेटी को तैयार किया और अपनी सौतेली बेटी से कहा — "ओ

आलसिन। देख कर रखना कि आग जलती रहे।" और उसे बहुत सारे काम थमा दिये।

बूढ़े की बेटी ने सारे काम बहुत जल्दी खत्म कर लिये।"

उसके बाद वह फिर से विलो के पेड़ के पास गयी और बोली — "ओ चमकदार वसन्त के विलो पेड़। ओ चमकदार वसन्त के विलो पेड़। बदल दो। बदल दो।"

तब पिछली बार से भी ज़्यादा शानदार एक सुन्दरी उस पेड़ में से निकली और बोली — "ओ छोटी लेडी ओ प्यारी लेडी। तुम्हें क्या चाहिये?"

उसने उसे अपनी जरूरत की सब चीज़ें बता दीं। तो उसने उसे एक बहुत सुन्दर पोशाक दी एक जोड़ी सुनहरे जूते दिये और वह एक शानदार गाड़ी में बैठ कर चर्च चली गयी।

वहॉ ज़ारेविच फिर से आया हुआ था। जैसे ही उसने लड़की को देखा तो वह तो वहीं खड़ा रह गया जैसे जमीन से जम गया हो। वह अपनी ऑखें भी उससे नहीं हटा सका। लोग भी आपस में फुसफुसा रहे थे "क्या यहॉ कोई ऐसा नहीं है जो यह जानता हो कि यह कौन है। क्या किसी को नहीं पता कि यह इतनी सुन्दर लड़की कौन है?"

फिर उन्होंने आपस में पूछना शुरू कर दिया "क्या तुम इसे जानते हो? क्या तुम इसे जानते हो?" सभी ने यही जवाब दिया कि "नहीं हम तो नहीं जानते। नहीं हम तो नहीं जानते।"

जब ज़ारेविच से पूछा गया तो ज़ारेविच ने भी यही कहा — "नहीं मैं तो इसे नहीं जानता। पर जो कोई मुझे यह बतायेगा कि यह कौन है मैं उसे थैला भर कर सोने के डकैट[36] दूँगा।"

उन्होंने सबने आपस में एक दूसरे से पूछा एक दूसरे से सलाह की पर कोई यह नहीं बता सका कि वह कौन है। पर ज़ारेविच के साथ एक हॅसोड़ रहता था जो जब भी ज़ारेविच दुखी होता तो हमेशा ही उसके साथ मजाक करता रहता था।

इस बार भी वह हॅसा और उसने ज़ारेविच से कहा — "मुझे मालूम है कि इस लेडी का पता कैसे लगाया जा सकता है।"

नौजवान ज़ारेविच ने पूछा "कैसे?"

हॅसोड़ बोला — "मैं बताता हूँ। चर्च में उस जगह पर तारकोल लगा दो जहॉ वह खड़े होना चाहती है। इससे उसका जूता उसमें चिपक जायेगा। वह वहॉ से जल्दी भागने के चक्कर में यह भी नहीं देखेगी कि उसका जूता चर्च में पीछे छूट गया है।" सो ज़ारेविच ने अपने दरबारियों को हुक्म दिया कि वे तुरन्त ही उस जगह पर तारकोल लगा दें।

अगली बार जब चर्च की पूजा खत्म हुई ते वह हमेशा की तरह से जल्दी से उठी और जाने लगी तो उसका एक जूता उस तारकोल में चिपक गया। जब वह घर पहुँची तो उसने अपनी बढ़िया पोशाक

[36] Ducket was the currency

उतार दी अपने फटे पुराने कपड़े पहन कर खिड़की के पास वाले कोने में बैठ गयी और चर्च से आने वालों को देखती रही।

जब उसकी सौतेली मॉ और बहिन चर्च से आयीं तो उनके पास बात करने के लिये बहुत कुछ था जैसे कैसे वह नौजवान ज़ारेविच उस सुन्दर लड़की से प्रेम करने लगा था पर कोई भी उसे पहचान नहीं पा रहा था कि वह कहॉ से आयी थी।

अब सौतेली मॉ बूढ़े की बेटी से और भी ज़्यादा घृणा करने लगी थी क्योंकि वह हमेशा अपना काम बड़े अच्छे तरीके से कर लेती थी।

पर ज़ारेविच ने कुछ नहीं किया सिवाय दर्द महसूस करने के। उसने अपने पूरे राज्य में यह ढिंढोरा पिटवा दिया कि "कौन है वह लड़की जिसका सुनहरा जूता खो गया है?" पर कोई सामने नहीं आया।

तब ज़ार ने अपने बहुत सारे सलाहकारों को अपने राज्य में ऐसी लड़की को खोजने के लिये भेजा। उसने उनसे कहा कि "अगर यह लड़की न मिली तो मेरा बच्चा तो मर जायेगा और फिर तुम जानते हो कि तुम सब भी गये।"

सो ज़ार के सारे सलाहकार अपने राज्य के सारे गॉवों और शहरों में गये और वहॉ जा कर उन्होंने पहले राजकुमारियों कुलीन लोगों और अमीर लोगों की सब लड़कियों के पैर नापे और उनकी जूते के साइज़ से तुलना की ताकि वे उस लड़की को पहचान सकें जो ज़ारेविच की दुलहिन बन सके।

पर उन सब लड़कियों के पैर या तो छोटे थे या फिर बड़े। फिर वे गरीब और किसान लोगों के पास गये और वहॉ जा कर उनकी बेटियों को देखा।

वे खोजते रहे खोजते रहे पैर नापते रहे नापते रहे फिर वे यह सब करते करते इतना थक गये कि वे अपने चारों तरफ देखने लगे तो उनको एक झोंपड़ी के पास लगा एक विलो का पेड़ दिखायी दे गया। उस पेड़ की जड़ में पानी का एक स्रोत था।

वे बोले "चलो इस पेड़ की ठंडी छॉह में बैठ कर थोड़ा आराम कर लेते हैं।" सो वे उस पेड़ के पास गये और वहॉ जा कर आराम करने के लिये उस पेड़ के नीचे बैठ गये। तभी बुढ़िया उस झोंपड़ी से बाहर निकल कर आयी तो उन्होंने उससे पूछा — "मॉ जी क्या आपके कोई बेटी है?"

"हॉ है।"

उन्होंने पूछा — "एक और दो?"

"दो। पर दूसरी मेरी अपनी बेटी नहीं है वह केवल रसोई में काम करने वाली एक आलसी लड़की है। वह तो देखने में भी बहुत गन्दी है।"

"ठीक है ठीक है। हम दोनों का पैर इन सुनहरी जूतों से नापना चाहेंगे।"

बुढ़िया बोली — "ठीक है।" फिर उसने अपनी बेटी से कहा कि वह अपने आपको ठीक से साफ करे अपने पैर धोये पर बूढ़े की

बेटी स्टोव के पीछे छिप कर बैठ गयी। वह न तो साफ थी न उसने ठीक से कपड़े पहने थे। बुढ़िया ने उससे कहा — "ओ कुत्ते की बच्ची, तू वहीं बैठी रह।"

ज़ार के सलाहकार दोनों बेटियों के पैर नापने के लिये झोंपड़ी में आये तो बुढ़िया अपनी बेटी से बोली — "बेटी अपना पैर आगे बढ़ाओ।" लड़की ने अपना पैर आगे बढ़ाया सलाहकारों ने उसे नापा पर वह जूता तो उसके पैरों में बिल्कुल भी फिट नहीं हो रहा था।

सो सलाहकारों ने बुढ़िया से कहा — "आपकी दूसरी बेटी कहॉ है उसे बुलाइये।"

बुढ़िया बोली — "वह। वह तो बहुत ही आलसी है। इसके अलावा वह तैयार भी नहीं है।"

"कोई बात नहीं। हमें तो केवल उसका पैर नापना है। कहॉ है वह?"

तब बूढ़े की बेटी बाहर निकल कर आयी तो उसकी सौतेली मॉ ने उसे उन सलाहकारों की तरफ धक्का देते हुए कहा "जा न ओ आलसी लड़की।"

तब सलाहकारों ने जूते से उसका पैर नापा तो लो वह तो उसके पैर में बिल्कुल ऐसे फिट हो गया जैसे हाथ में दस्ताने फिट हो जाते हैं। यह देख कर दरबारी और सलाहकार लोग बहुत खुश हुए और उन्होंने भगवान को बहुत बहुत धन्यवाद दिया।

वे बोले — "मॉ जी। हम आपकी इस बेटी को अपने साथ ले जायेंगे।"

"क्या? ऐसी गन्दी लड़की को आप अपने साथ ले जायेंगे? लोग आप पर हॅसेंगे नहीं?"

"हो सकता है वे हम पर हॅसें। पर फिर भी हमें इसे ले जाना तो पड़ेगा ही।"

तब बुढ़िया ने उन्हें डॉटा और उस लड़की को उनके साथ भेजने से मना करने लगी और चिल्ला कर बोली — "इतनी आलसी और गन्दी लड़की ज़ार के बेटे की बहू कैसे बन सकती है?"

वे बोले — "बेटी तुम्हें हमारे साथ आना ही पड़ेगा। जाओ जा कर ठीक से तैयार हो कर आ जाओ।"

वह बोली — "एक मिनट ठहरिये। मैं अभी तैयार हो कर आती हूॅ।"

कह कर वह विलो के पेड़ के नीचे से निकलने वाले स्रोत के पास गयी वहॉ जा कर वह नहा धो कर कपड़े पहन कर जब झोंपड़ी में घुसी तो वह इतनी शानदार और सुन्दर लग रही थी कि ऐसी लड़की के बारे में न तो सोचा जा सकता था और न कोई अन्दाज़ा लगाया जा सकता था केवल कहानियों में ही सुना जा सकता था।

वह उस समय सूरज की तरह चमक रही थी। यह देख कर बुढ़िया भी कुछ नहीं कह सकी। उन्होंने उसे एक गाड़ी में बिठाया और चल दिये।

जब ज़ारेविच ने उसे देखा तो वह अपने आपे में न रह सका। वह बोला — "पिता जी। जल्दी कीजिये। हमें अपना आशीर्वाद दीजिये।"

सो ज़ार ने उन दोनों को आशीर्वाद दिया और उन दोनों की शादी हो गयी। उनकी शादी की खुशी में एक बहुत बढ़िया दावत दी गयी जिसमें सारी दुनियॉ को बुलाया गया।

उसके बाद वे दोनों एक साथ खुशी खुशी रहे और जब तक रहे तब तक पेट भर कर गेहूँ की रोटी खाते रहे।

14 लोहे का भेड़िया[37]

एक बार चर्च का एक पादरी था जिसके पास एक नौकर था जिसने उसके पास बड़ी वफादारी के साथ बारह साल से ज़्यादा काम किया था।

एक दिन वह पादरी के पास आया और बोला — "आप मेरा हिसाब तय कर दीजिये। आपके ऊपर जो भी मेरा निकलता हो वह मुझे दे दीजिये। मैं आपके पास बहुत दिनों तक काम कर चुका हूँ अब मैं इस दुनियॉ में मैं अपने थोड़े से दिन शान्ति से गुजारना चाहता हूँ।"

पादरी बोला — "यह तो बहुत अच्छी बात है। मैं अब तुझे बताता हूँ कि मैंने तेरी वफादार नौकरी के लिये क्या मजदूरी तय कर रखी थी। ले मैं तुझे यह अंडा देता हूँ। तू इसे घर ले जा। जब तू घर पहुँच जाये तो वहॉ जानवरों के रहने का एक घर बनाना और उसे बहुत मजबूत बनाना।

तब इस अंडे को उस जानवरों के घर के बीचोबीच तोड़ना फिर तू कुछ देखेगा। पर तू जो चाहे करे पर इस अंडे को रास्ते में मत तोड़ना क्योंकि तब तेरी अच्छी किस्मत तेरा साथ छोड़ देगी।"

[37] The Iron Wolf. (Tale No 14)

नौकर ने अंडा लिया और घर चल दिया। वह चलता गया चलता गया। आखिर उसने सोचा "देखता हूँ कि मेरे लिये इस अंडे में क्या है।"

ऐसा सोच कर उसने वह अंडा बीच रास्ते में ही तोड़ दिया। लो उसमें से तो बहुत सारे हर तरह के जानवर निकल आये। वे सब इतने सारे थे कि उन्हें देख कर ऐसा लग रहा था जैसे वहाँ कोई जानवरों का मेला लग गया हो।

नौकर तो यह देख कर ठगा सा खड़ा देखता रह गया। उसने फिर सोचा कि "भगवान के नाम पर अब मैं इतने सारे जानवरों को इस अंडे के अन्दर कैसे भरूँ।"

उसने बस अभी ये शब्द कहे ही थे कि एक लोहे का भेड़िया वहाँ आया और उससे कहा — "मैं इन सब जानवरों को इस अंडे के अन्दर भर दूँगा और उस अंडे को इस तरीके से जोड़ भी दूँगा कि वह पहले की तरह से पूरा साबुत हो जायेगा।"

लोहे का भेड़िया आगे बोला — "पर इसके बदले में जब भी कभी तुम दुलहे की कुर्सी पर बैठोगे तो मैं तुम्हें खाने आ जाऊँगा।"

नौकर ने सोचा "इससे पहले कि मैं दुलहे की कुर्सी पर बैठूँ और यह मुझे खाने के लिये आये बहुत कुछ हो सकता है इस बीच मैं इतने सारे जानवरों को ले लूँगा।"

सो लोहे के भेड़िये ने सारे जानवरों को इकट्ठा किया उनको अंडे में भरा और अंडे को पहले की तरह से बन्द कर दिया और जैसे वह पहले साबुत था वैसा ही साबुत उसे फिर से कर दिया।

नौकर उस अंडे को ले कर वहॉ से अपने गॉव चला गया जहॉ वह रहता था। वहॉ जा कर पादरी के कहे अनुसार उसने एक बहुत मजबूत जानवरों का घर बनाया और उसके बीचोबीच जा कर उस अंडे को तोड़ दिया। तुरन्त ही वह सारा जानवरों का घर जानवरों से भर गया।

उसके बाद उसने खेती और पशु पालन शुरू कर दिया। अब तो वह सारी दुनियॉ में बहुत अमीर हो गया। इतना अमीर कि अब उससे अमीर और कोई था ही नहीं। यह बात उसने अपने तक ही सीमित रखी और उसका सामान तेज़ी से बढ़ने लगा। अब उसकी खुशियों में बस एक ही खुशी की कमी थी और वह थी पत्नी की पर वह पत्नी कैसे लाये। उसको पत्नी लाने में डर लगता था।

जहॉ वह रहता था वहीं पास में एक जनरल रहता था। उसकी एक बहुत सुन्दर बेटी थी। इस बेटी को इस अमीर आदमी से प्यार हो गया।

सो एक दिन जनरल इस अमीर आदमी के घर गया और इससे पूछा — "तुम शादी क्यों नहीं करते? मैं अपनी बेटी की शादी तुमसे कर दूॅगा और अपनी बेटी के साथ साथ बहुत सारा पैसा भी दूॅगा।"

अमीर आदमी बोला — "मैं शादी कैसे कर सकता हूँ। जैसे ही हम शादी की कुर्सियों पर बैठेंगे लोहे का भेड़िया आयेगा और मुझे खा जायेगा।" और उसने जनरल को वह सारी घटना बता दी जो उसके साथ हुई थी।

जनरल बोला — "यह तुम क्या बेकार की बात कर रहे हो। तुम डरो नहीं। मेरे पास बहुत ही ताकतवर लोग हैं। जब शादी के समय शादी की कुर्सियों पर बैठने का समय आयेगा तो हम तुम्हारे घर को अपने सिपाहियों के तीन मजबूत घेरों से घेर देंगे और वे उस लोहे के भेड़िये को तुम्हारे पास आने ही नहीं देंगे। मैं तुमसे वायदा करता हूँ।"

इस तरह वे तब तक इस बारे में बात करते रहे जब तक वह खुद ही शादी के लिये तैयार नहीं हो गया। उसके बाद उन लोगों ने शादी की दावत की तैयारी शुरू कर दी। उसके तुरन्त बाद ही जनरल ने अपने ताकतवर सिपाहियों को तीन लाइनों में उसके घर के चारों तरफ खड़ा करवा दिया।

अब जैसे ही नये दुलहा दुलहिन अपनी अपनी शादी वाली कुर्सियों पर बैठे यकीनन लोहे का भेड़िया वहाँ भागता हुआ आ गया। उसने देखा कि दुलहे के घर के चारों तरफ तो बहुत सारे लोग तीन लाइनों में खड़े हुए हैं।

वह तीनों लाइनों के ऊपर से कूद कर सीधा उसके घर में जा पहुँचा। पर आदमी ने जैसे ही लोहे का भेड़िया देखा वह खिड़की से

हो कर बाहर कूद गया। अपने घोड़े पर चढ़ा और भाग गया। भेड़िया उसके पीछे भाग लिया।

वह दूर और दूर भागता चला गया और भेड़िया उसके पीछे भागता चला गया पर वह भेड़िया कितना भी तेज़ भागा मगर किसी तरह आदमी को पकड़ नहीं सका। आखिर शाम को आदमी रुक गया तो उसने देखा कि वह एक बियाबान जंगल में खड़ा है।

उसके सामने एक झोंपड़ी थी। वह झोंपड़ी तक गया तो उसने देखा कि उस झोंपड़ी के बाहर एक बूढ़ा और एक बुढ़िया बैठे हुए हैं। उसने उनसे कहा — "ओ भले लोगों। क्या आप मुझे यहॉ थोड़ी देर आराम करने देंगे?"

वे बोले "हॉ हॉ क्यों नहीं।"

आदमी बोला — "मगर एक बात है। जब मैं आपके पास आराम कर रहा होऊॅगा तो मेहरबानी कर के लोहे के भेड़िये को मुझे पकड़ने मत देना।"

बूढ़ा और बुढ़िया ने कहा — "तुम चिन्ता मत करो। हमारे पास एक कुत्ता है जिसका नाम चुटकू है जो किसी भी भेड़िये को एक मील दूर से आता सुन लेता है। जब वह आयेगा तो हमें यकीन है कि वह हमें उसके आने की खबर जरूर दे देगा।"

सो वह वहॉ लेट गया। उसकी बस वहॉ ऑख लगी ही थी कि चुटकू भौंक पड़ा। बूढ़ों ने उसे तुरन्त ही उठाया और कहा कि वह वहॉ से भाग जाये क्योंकि लोहे का भेड़िया आ रहा है। उन्होंने उसे

कुत्ता दे दिया और रास्ते में खाने के लिये भट्टी में पकी हुई गेहूँ की रोटी दे दी।

कुत्ता और रोटी ले कर आदमी वहाँ से चल दिया। वह अँधेरा होने तक चलता रहा कि वह एक और जंगल में आ गया। वहाँ भी उसे एक झोंपड़ी दिखायी दे गयी। उस झोंपड़ी के सामने भी एक बूढ़ा और एक बुढ़िया बैठे थे।

उसने उन दोनों से भी रात को रुकने की जगह माँगी और कहा कि वे उसकी लोहे के भेड़िये से रक्षा करें। उन्होंने कहा — "तुम चिन्ता न करो हमारे पास वाज़्को[38] नाम का एक कुत्ता है जो किसी भी भेड़िये को नौ मील दूर से सुन लेता है।"

सो वह वहाँ लेट गया और सो गया। मुश्किल से उसकी आँख लगी होगी कि वाज़्को भौंक पड़ा। बूढ़ों ने उसे उठाया कि लोहे का भेड़िया आ रहा है अब उसे जाना चाहिये। उन्होंने उसे अपना कुत्ता दिया और रास्ते में खाने के लिये भट्टी में पकी हुई जौ की रोटी दी। वह अपने घोड़े पर बैठा दोनों कुत्ते उसके पीछे थे और वह चल दिया।

वह फिर चलता गया चलता गया और जब वह रुका तो उसने अपने चारों तरफ देखा तो उसने अपने आपको फिर से एक जंगल में पाया। वहाँ भी एक झोंपड़ी थी। वह उस झोंपड़ी में घुसा तो वहाँ भी एक बूढ़ा और एक बुढ़िया बैठे हुए थे।

[38] Vazhko

उसने उनसे कहा — "ओ भले लोगों। क्या आप मुझे यहॉ आराम करने की जगह दे सकते हैं। पर मेहरबानी कर के लोहे के भेड़िये से मेरी रक्षा करें।"

बूढ़ा और बुढ़िया बोले — "डरो नहीं। तुम यहॉ आराम से सो सकते हो। हमारे पास एक कुत्ता है बैरी जो भेड़िये की आवाज बारह मील से सुन लेता है। जब वह आयेगा तो वह हमें बता देगा।"

सुबह को बैरी ने बताया कि लोहे का भेड़िया आ रहा है। तुरन्त ही बूढ़ों ने आदमी को उठाया और उसे वहॉ से जाने के लिये कहा। उन्होंने उसे अपना कुत्ता दिया और रास्ते में खाने के लिये कूटू[39] की रोटी दी और उसे विदा किया।

आदमी ने तीनों कुत्ते लिये खाना लिया और वहॉ से चल दिया। अब उसके पास तीन कुत्ते थे और तीनों उसके पीछे पीछे चल रहे थे।

वह चलता चलता रहा और शाम के समय वह एक और जंगल में था। वहॉ भी एक झोंपड़ी थी। वह उसके अन्दर गया पर वहॉ कोई भी नहीं था। वहॉ जा कर वह भी लेट गया और उसके कुत्ते भी लेट गये।

[39] Translated for the word "Buckwheat". In India this is eaten on fasting days.

चुटकू उसके कमरे की देहरी पर था। वाज़्को उसके घर की देहरी पर था और बैरी घर के बाहरी गेट की देहरी पर था। तभी उन्हें लोहे के भेड़िये के आने की आवाज सुनायी पड़ी।

चूटकू ने उसके आने की सूचना दी वाज़्को ने उसे धरती पर ही पकड़ लिया और बैरी ने उसे फाड़ डाला। आदमी ने अपने तीनों कुत्ते लिये और घर वापस आ गया।

List of Stories of “Folktales of Ukraine”

1. Oh, the Tzar of Forest
2. The Story of the Wind
3. The Voices at the Window
4. Story of Little Tsar, the False Sister and the Faithful Beasta
5. The Vampire and St. Michel
6. The Story of Tremsin, the Bird Zhar and Nastasia, the Lovely Maid of the Sea
7. The Serpent Wife
8. The Story of Unlucky Daniel
9. The Sparrow and the Bush
10. The Old Dog
11. The Fox and the Cat
12. The Straw Ox
13. The Golden Slipper
14. The Iron Wolf

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस कड़ी में 100 से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तक सूची की पूरी जानकारी के लिये लिखें — hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन ः सोलोमन और सैटर्न के साथ — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2021

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022